

सैव च करि तासन के पास जा
के हाथ मेरे ... राय मे
सोमवार ... ॥ राजा संवगाधि
सिमाही राजा का काम दया सदि ... यह बात
मि ताहिर की राजा भोज ... सबान के सुन ...
... पहाड़ को और गजद कर तो यह ...
... जो लिखा है ... नहीं होता ॥ जब मावे
... ता है तो ... साथ ला

जाओ बढ गया साथ कोई यों
जा जानि नाला यह जाको
आता राह भी भला और लाने
की गो एक तर खत देखा उस दर खत को
बढ गया और वहाँ से देखने लगा तो जंगल हो जंगल
आता था नगर एक नगर एक शहर तब आया उस
राजा को एक ठठ सबधी बदन गरजे देखा तो
तर वहाँ उर दोलों में उर ही

और पिजड़ों में बंद किये राजाने
 कहा है चंडालों को नौनसा कौवा था जिसने
 हथियारों को तुम सब सब कहोगे तो हम छेड़ेंगे
 बको मार डालेंगे। यह सुनकर सब बोले महाराज
 कोई कौवा नहीं रहा जो पकड़ा नहीं आया
 महमसेन हों हुआत बरजा जिया राख फा
 म सब के सेवाय कौन कौवा है जिसने यह काम किया
 ओहोंने कहा महाराज। सब पूछते हैं तो हम कह
 बहुत है। उहै न समझेंगे। राजा है
 सब कौवा न लगे। दादना बहुत
 वह कौवे के मेरे रहता है यह काम उ
 कि कौवे के रंग में वह बच रहा है
 ने कहा वह किस तरह। उसका कुछर
 सरलाज बतलावो को। यहाँ से वकील
 र उसको ले आया। तुम भ्रम में हो। कौवे
 देव जाकर ले आवेंगे ओहो मेरे ही कौवे
 न कीलत बरनने बहुत सी आवः
 हा तुम यहाँ किस लिये आये हो तब वे बोले महाराज।

सब कौवे मारे जाते हैं जो तुम रा
न पास चलो तो सभी की जान बचे लखवरे
अपना भाग मेरा जो तुम मेरे पास अपना मतलब स
आये हो जो कुछ काम मुझ से होगा मैं कभी न
ह कहकर अपने राजा पास आया और रा
ल लेकर उनके साथ गया जब सब कौवे ने उ
वान को देखा तब राजा से कहने लगे जिस काना
ने तेरे वह ये रीति है राजा ने देख कर उसे आश्चर्य कर
माधी गयी वह आया और राजा ने कहा वह
ने कहा कि सारे कौवे अपने अपने मुँह से कहें
कि सवाले इन सब को बन्ध किया जब
राजाने देखा तब राजा ने कहने लगा मैं एक
आया था इतना फाव मंगल मेरा हुआ तब
पर चर कर चले देखने लगा कि एक कौ
रा बैठा कर रहा सलिये मैंने सब कौवों को ब
ध किया तब कौवे ने मेरे से कोर सचन कहेंगे एक कौवा
ने मेरे सुन छड़ा डूंगा बल्कि जान से सब को मारूंगा फिर
तब राजा बोला महाराजा यह काम मेरा है जब तुम्हें मैंने

मरुत देरवा तद मुझे मुझा आया भुक्त मेरी वस
जमता हीर यह सुन कर राजा हसा और भुक्त कर
हने लगा मुझे गर कौन कहो मेरा जाहं शतामे
पाही मैं हूं और कौन बात मुझमें नहीं तुम कर
ह बोला जो नगर तुमने नजर से देखा उसका
नकर्ता हूं * राजा बाहं बल वहां का करी मुझ
रंग ध्वज न बाप तुम्हारा उसका ही दान था राजा को
व उसी तरफ से कछुवे अतिवारी भुक्त और उस जग
कारा मुझ वा उस जग तू विक्रम है तुझे जग मे को
नहीं जानता पर जगत लक राजा बाहं तुझे तिल
देगा जब तक तेरा राज अवल न होगा और वह जो लख
वेगा तो वहीं वह हो डेगा और तुझे आकर खा करे एव
एक घड़ी में काँवेगा तुझे जो मेम सलहत दु उसे जान और
र किसी तरह से उस राजा के दान राजा को मुह बत दि
लवाके तिलक उसे ले जिसे अमल राज तू करे *
राजा विक्रम बड़ा भुक्त मरुत इस बान पर काय मरुत
एसी सरल सरल बातें रत बरत से सुन कर कछु दि
लमें न लाया हसकर कान पर सब सुनो फिर लत बरत

कहा जो तुम्हें चलना है तो हमारे ही साथ चलो और
उन्हीं से अच्छा सा अतः देखा कर चलने की तयारी करो
दन सुबह के वृक्ष राजा मंत्री लूत बरन वे यह हो
और राजा बाहं बल के नगर में पहुंचा तब उस दो
राजा से कहा तुम यहां बैठो मैं अपने राजा को तुम्हें
खबर दूँ॥ यह बात राजा से कह कर अपने रा
ज्या दर में गया उसको सलाम किया और सब समा
और अपनी हकीकत समेत राजा का अहवाल कह
लगा महाराजा धर्म सेत का बेरानि आप के दर्श
के लिये आया है। यह बात राजा सुन कर तुरंत बुलाया
यह ही राजा को ले गया और अपने राजा से
उसे उठ कर मिला और आदर कर के आया
नपर उठाया क्षम कुशल पूछा और उसके रहने के लिये
कान बतलाया॥ राजा उठ कर उसम कान में आया वरह
लगा जब दस पांचरे जंगत गये तब दीवान से राजा
कर्मने कहा हमें तुम बिदा करा दो तो हम अपने स्थान
को जंग॥ तब मंत्री कहने लगा हमारे राजा का यह सुभा
व है जो उनके मिलने को आता है उसे आपसे खबर तन

हैं करते तुम हर खसत मागो और जिस बात की राह
 हो सो वही अपने जी में कुछ शरम न करे तब राजा जो
 मसे कुछ नहीं चाहिए जो कोई जो कुछ चाहे पुसी से
 रले तब दीवान बोला राजा यह हमारी बात सुना
 राजा के घर में एक सिंहासन है सो वह सिंहासन यह है
 महादेव ने राजा इंद्र को दिया था और उस राजा
 को दिया उस सिंहासन का यह गुण है जो उस पर
 सात ही पौरोहित्य पृथ्वी का अजी राज करे ॥ और
 बहुत राजा जाहि उसमें जात है और वही सयुक्त
 पां भी कि अमृत देकर उनको साचे में ढाला है ल
 तुम हर खसत होने हर वह सिंहासन राजा से मागे कि
 उस पर बैठ कर आनन्द से राज करोगे ॥ यह राजा को
 दीवान ने सलाह दी और सुबह को राजा के दरबार में
 दीवान गया खबर दी ॥ महाराज विक्रम हर खस
 त होता है बाहर खड़ा है यह सुन कर राजा फिलफौ
 र दरवाजे पर आया और विक्रम ने देख कर अपना मा
 ध निवाया ॥ राजा ने विक्रम से कहा जो तुम्हारे जी
 में आवे सो मागो मैं खुश होकर दे ही दूंगा ॥ विक्रम

१०१ लामहाराजा जो अपने मुख पर दया की है तो वही सि
 १०२ न मुझे बखाने जो इंदु ने तुम्हें दिया है * यह बात सु
 १०३ कर राजा बोला अच्छा सिंहासन तो मैंने तुम्हें दिया पर
 १०४ यह काम मंत्री का है इसे दुमनही जानते थे ॥ यह कहकर
 १०५ सेह नमगाया और पान तिलक देकर उस पर बिठा
 १०६ और कहा कि तुम अब अजीत हुए किसी बात की जी
 १०७ धेन्ना न करना गंधर्व सेन मेरा बड़ा दोस्त था और तुं उ
 १०८ के खानदान में बड़ा नामवर हुआ ॥ ३ ॥ यह राजा वि
 १०९ क्रम को आसीस देकर रुखसत किया राजा वहां से अप
 ११० धर को आया और अपने जीमें बहुत सारा खुश हुआ रा
 १११ जके देसके लोगोंने बहुत खुशी की और दीप दीप के राजा
 ११२ खिदमत के वास्ते आये और जो राजा गरूर करता था
 ११३ सका वह राजा जाकर घीन लेता और अपना राज कर्त
 ११४ गरज उद्देशे असतक खुब उसने राज की सब रयेयत
 ११५ आनन्द से उसके राज में बसे थे और जो क्षत्री थे उसे
 ११६ उरते थे और जो कोई देस वी देस जाता था वहां विक्रम का
 ११७ धर्म सुनता था ॥ सब मुल्क आबाद देखता था कहीं दु
 ११८ खी उसे नजर न आता था उंउ और न बांध उसके राज भर

कि सो ते कान से न सुनावलिक घर घर आवाज वेद और
 न की आतो और जेतने लोग थे अशतान ध्यान वर के
 नो वक्त अपने भगवान की याद में रहते थे अपने अ
 घर में राजा की सी सभा करके खुश रहते थे राजा राज
 जा सुखी * इसमें एक दिन राजा विक्रमाजी ने सभ
 की और सब पंडित बुलाये ॥ पंडितों से राजा ने पूछ
 रे जी मैं है अब मैं संवत् बंधू सो तुम से पूछता हूँ कि मैं
 सवात के लागू क हूँ या नहीं तुम शास्त्र देख कर मुझ
 विचार के कहो तब सब पंडितों ने विचार करके राजा से
 हा महाराज अब जो तुम्हारा प्रताप है सो तिनो भुवन
 धार हा है अब जो कुछ तुम्हें करना हो सो किजिये दु
 मन तुम्हारा कोई नहीं * राजा ने यह सुन कर पंडितों
 कहा कि अब तुम बताओ कि किस विधि से संवत् बंधे
 जो कुछ शास्त्र के रीत से मुनासिब हो तिस तरह से हम
 कहो तब पंडितों ने कहा यह ते तो तुम अजीत मालय
 हनो फिर उसके बाद देस देस के ब्राह्मण और ज़िमी
 दार राजा और अपने सब कुनवे लोग बुलाओ सवाल
 ख कत्वा दान और गौ दान सवाल ख ब्राह्मणों को करो

॥ जेतने ब्रह्मराज तुमारे राज के हैं उनकी वृत्ति कर दो
 सब से का खजाना जमींदारों को म्भाफ व से और
 ॥ भूखा के डाल इस ब से में आवें उसी वृत्ति का हुक्म क
 * इसी तौर से राजाने सब काम किया और सेवा उस
 जो जे राज पुन्य किया उसका बयान कि से हो ॥ एक
 ॥ त कर राजा अपने घर में बैठा पुरान सुनता रहा और इस
 ॥ ह से संबत बांधा कि तमाम दुनया के लोग धन्य धन्य
 ॥ ते थे * यह सब अहवाल रतन मंजरी ने सुनाया और
 ॥ ता विक्रम जीत का जस गाया और कह राजा राजा जो
 ॥ इतने हो तो इस सिंहासन पर बैठो सुन के राजाने कहा स
 ॥ जो कुछ तुने कहा वह बात मुझे भी पसन्द आई ॥ इत
 ॥ कह कर राजा अपनी सभा में बैठा दीवान मुतसदियों
 ॥ को बुलाया कि तुम सब तैयारी से संबत बांधने की करो उस दि
 ॥ की वह सा अत टल गई ॥ राजा दूसरे दिन फिर सा अत
 ॥ सहासन पर बैठने की तैयारी फर्माई दीवान को बुला
 ॥ कर कहा तुम सब इसकी तुर्त तैयारी करो देर न हो * ॥
 ॥ यह बात सुन कर बरूच पुरोहित बोला राजा अभी क्यों ध
 ॥ वराते हो यह एक एक पुतली तुम से बात करेगी इन्की
 ॥ बातें सुन कर जो कुछ करना होगा सो कीजो ॥ यह सु

नकर राजा ने चाहा सिंहासन पर पांव बढा कर रखे वि
 ॥ दूसरी पुतली बिजोर खा बोली
 राजा तेरे जोग यह आसन नहीं है और एसी अनीति
 कोई करता नहीं जैसे तू करने पर तैयार हुआ है इस सि
 हासन पर बैठे यह जो विक्रम सा राजा होत ब राजा बोल
 विक्रम में क्या गुन थे सो तुम से कहो तब वह बोले *
 एक दिन राजा विक्रम कैलाश को गया और वहाँ एक ज
 से मुलाकात हुई। उसने राजा को जोग की रीत सब बतलाई। राज
 ने अपने जी में श्रद्धा किया कि जोग कर्मों से जोग करने को
 तैयार हुआ राजा तिलक भरतरी को दिया राजपार पर उसे
 बिठाया राजा का जधन दौलत छोड़ के था पहन भस्म लगा
 सत्यासी बन कर जोग साधने लगा * उस शहर के जंगल
 में एक ब्राह्मण तपस्या करता था धूँधों पीके रहता था और
 मुख प्यास के दुख सहता था ब्रह्मण की तपस्या देख
 कर देवता खुश हुए बर उससे देने लगे और उसने बलिचा
 तब आकाश बानी हुई कि हम अमृत भेजने हैं सो तू ले
 * एक आरमी की सूरत में आकर देवता उसे फल दे यह
 कहा गरुड़ कि जो इसको गूँखावेगा चिरं जीव होगा फल लेकर

यह तुने चला खुशी खुशी अपने घर को आया ॥ ब्राह्मण
 हाथ में वह फल दिया और कहा आज देवताओं ने
 एक फल देकर मुझे कहा जो इसे खावेगा अमर होवेगा यह
 बात सुनकर ब्राह्मण ने कुलहोरे में लगी फिर बोली यह
 दुख और पाप हम किस तरह काटेंगे और हमेशा भी ख
 पाँकर मोंगेगे खालमास सब हाड में मिल जायगा ऐसे जी
 न से मर जाना बेहतर है * मर जाने वाले को इतना दुख न
 हो होता * इस फल को वह खावेगा जो हमेशा दुख उठावे
 गा इसे बेहतर यह है कि तुम यह फल लेकर राजा को
 दो और उसे कुछ धन लो ॥ यह सुनकर ब्राह्मण अपने
 जी में समझा यह सब है इस संसार से इतना जंजाल क्यों न
 सहे ॥ इस तरह आपस में बातें सलाह की करके ब्राह्मण व
 हाँ से राजा के पास चला जब राजा के द्वारे पर पहुँचा द्वारपाल
 से कहा राजा को खबर दो ब्राह्मण आप के लिये एक फल
 लाया है * दरबान ने राजा से जाकर अर्ज की महाराज
 एक ब्राह्मण फल आप की खातिर लाया है और दरवाजे
 पर हाजिर है जो कुछ हुक्म हो राजा ने उसी वक्त हुक्म किया
 उसे अभी लाओ ॥ यह लकारें ने वहाँ हाजिर किया *

ब्राह्मण ने राजा को भ्रम कर आसीस दी कि धर्म लाभ हो भ्रम
 रह फल राजा के हों थ दिया ॥ राजा ने उसको हों थ मे ले
 र सुछा इस का वृत्त त कहो तब ब्राह्मण कहने लगा स्वा
 मे ने जो तपस्या की थी सो देवता भ्रम ने उसका वर भ्रम
 फल दिया मे भ्रम होकर क्या कहूंगा उस फल को तु
 और भ्रम हो इस वास्ते कि तुम से लाखों जी पलते हैं ॥ यह
 सुनकर राजा हसा उसे लाख रूपये दिये और गाव वृत्तिक
 के बिदा किया फिर जी में विचार करने लगा मैं तो पुरुष हूं क
 म जोर न हूंगा यह फल रानी को दिया चाहिये वह मेरे भ्रान
 का आधार है यह जीति रहेगी तो मैं सुख भोग करूंगा *
 यह दिल में ठानकर राजा महल में दाखिल हुआ फल रानी
 को देखा ॥ रानी हंसकर पुछने लगी महाराज यह क्या
 चीज है जिसे बड़े जतन से तुम लिये हुये आये हो इसका
 और कहो तब राजा ने कहा सुन सुंदरी ॥ तू जो इस फल
 को खायगी सदां जोवन वती रहेगी दिन दिन रूप बढ़ेगा
 और भ्रम रहेगी * रानी ने यह अहवाल सुनकर फल र
 जा के हों थ से ले लिया और कहा महाराज मैं इसे खाऊं
 गी ॥ राजा फल देकर बाहर गया और रानी का जो एक

मन्त्रको तबाल था रानी ने उसै बुला कर वह फल दिया औ
 कहा यह हमें राजा ने दे कर कहा है जो इसे खावेगा अम
 होगा तुम मेरे प्यारे हो इसे खाओ और अमर हो तो मुझे
 बड़ी खुशी हो ॥ सुनते ही कोतवाल ने खुश हो कर फल हां
 थ से ले लिया और अमर होने मकान को गया * एक कस
 ने उसकी आशना थी उसे फल दे कर कहा यह अमर फल
 मैं तेरे वास्ते लाया हूं तू इसे खा यह सुन कर उन ने हां थ से ले
 लिया और उसै बिहा किया फिर अमर होने जीमें बिचार एक
 तोमें कसबी हूं और अमर होंगी तो के तने पाप कमाऊंगी
 इसे वह तर यह है कि यह फल राजा को जा कर दियो -
 जो राजा जीयेगा तो मुझे याद करेगा और पुन्य होवेगा
 पाप सभी करेंगे ॥ यह सोच कर राजा के दरबार में गई वह
 फल राजा के हां थ में दिया राजा फल को देख कर बेसुध
 हुआ अमर होने दिल में कहा कि फल तो मैं ने रानी को दिया
 था जीमे यह बीचार और हंस कर उसे पूछने लगा यह फ
 ल तुझे किसे दिया वह बेस वास मत जान ती थी पर
 राजा से फल तो यह कहा कि मुझे कोतवाल ने दिया है ॥
 वह सुन कर यह समझा कि रानी ने बुरा काम किया *

उसे कुछ रूप या हे कर विरा किया और आप मैव कर ह
 फिर समझ कर कहने लगा मैने तो मन अपना रानी को
 और उसने अपना दिल को तवाल को मन का भेदी कोई न
 ला एसे जीने को और मेरी बुद्धि को धिक्कार है जो मै फिर
 कर और फिर उस रानी के तई और लानत को तवाल को
 उस बेसवा को और धिक्कार है काम देव को जो यह मति स्
 र की करता है कि जिसे संसार अहम कहो जाता है बार
 फल लिये हु ए महल मे गया अपने धित में कहने लगा
 तन मन धन जो सब बंचल है और यह संसार जान हा
 इन्हों में से कोई कायम न रहेगा जब ही पैदा हुवा तब ही
 नेखाया और जब मरता है तो कुछ साथ नही ले जाता
 मेरा मेरा कर के जनम गवाता है सुख के सब साथी हैं और
 ख कोई न ही बाटता ॥ यह संसार जो है समुद्र है और मा
 इसका जल है हारवा मछली है एसा अधिक कोई न मि
 जो इसको मार के खाय यों विचार करता हुवा रानी के प
 गया और उसे पुछ वह फल तुने क्या किया तब वह बो
 महाराज मैने खाया तुन कर राजा ने वही फल रानी को दे
 या ॥ वह देख कर जई होगई तब राजा उस फल को लेकर

और आया धोकर खाया जिस पीछे सोच उस्को हुआ निदान व
 के जाने का सामान किया राज पार धन दौलत और रानी को
 राज कर चलान किसी को पृथान किसी को साथ लिया ऐसा नि
 नाही हो कर निकला कि किसी का ध्यान न किया देस देस
 और नगर नगर में चरचा हुई कि राजा भरतरी राज तज कर
 जोगी हुवा और यह बात उड़ती उड़ती राजा इंद्र के अखाड़े में
 हुंवी कि वह तो देस छोड़ के गया और उसके देस में बड़ा दुश्न
 हुआ ॥ तब यह बात सुन कर सब देव तो भ्राने मिल कर यह
 बेचार किया कि एक देव को रखवाली के वास्ते राजा भरतरी
 देस में भेज दो कि को ई विद्वत्तर ऐंयत पर न करे। देव को
 बुला कर वहां की निगह बानी कर ॥ वहां तो बहरखवाली कर
 ताथा और तहां राजा विद्वत् को जोगी पूरा हुआ वह अप
 ने मुन में मन सुवा कर ताथा कि मैं छोटे भाई को राज दे आ
 या हूं चल कर देख कि वह किस तरह राज करता है यह अ
 ने दिख मे कह कर चेला और राज को अपने नगा के पा
 स आन पड़ा देव ने उसे आते देखा तब उसने पुकारा
 तू कौन है जो सब त्र राह में जाता है या तो अपना ना
 म बता तू ही तो तू से मारा जाता है तब उसने कहा मैं

जा विक्रम है ॥ तू कौन है कि मुझे दिकता है देव बोला
 कि मेरे तई देव ता भौने भरतरी के राज की रखवाली को
 मे जा है राजाने पूरे भरतरी क्या हुवा उन ने जवाब दिया
 भरतरी को कोई यहाँ से झलक ले गया ॥ यह बात सुन क
 राजा हसा और उ से कहा वह तो मेरे छोटा भाई है फिर
 तो दैत्य बोला मैं नहीं जानता कि तू म कौन हो और जो तू
 मु विक्रम इस देस के राजा हो तो मुझ से लड़ो और मुझे मा
 र कर जाओ बिना लड़ें मैं तुम्हें इस शहर में नहीं बैठने दूँ
 गा यह सुन कर राजा बिगड़ के बोला तू मेरे तई क्या डेरा
 ता है और जो लड़ावा हो तो तैयार हो ॥ इस तरह दोनों वा
 तें कर तैयार हो लड़ने लगे और राजा उस देव को पछा
 ड कर घाती पर चढ़ बैठता तब वह बोला राजा तू मुझ से बरा
 बरी में तू से जीतान दूँ यह बात सुन कर राजा हस कर बोला
 मैंने तू से पछाड़ी है और चढ़े तो भार डालें तू मुझे जीतान
 न क्या देगा तब वह बोला राजा तू मुझे छोड़ दे मेरे भागे
 इस क सब देव राक्षस हैं तेरे राज की धूम सब देस में
 है और सब राजा तुझ से डरते हैं पर मैं जो बात कहूँ सो
 तू कान दे ॥ तू तेरे शहर में एक तेली है और एक कुम्ह

सो तेरे मारने की फिक्र में है पर तुम तो नौसे से जो दो को म
 रगा वही अचल राज करेगा तेली तो पाताल का राज करता
 है और वह कुम्हार जो गी बना हुआ जंगल में तपे स्या ॥
 अपने दिल में कहता है कि राजा मार के तेली को तेल के ज
 लते कड़ाह में डालें और देवी को बल दे कर मै विद्विंत रा
 ज कहूं और तेली कहता है राजा और जोगी को मार के वे
 लोक का राज में करे और तुम्हें सब बात को न जानता था ॥ मैंने
 इस वास्ते तुम्हें खबर दार कि तुम्हें उनसे बच रहना और भा
 ग जो मैं कहता हूं तुम्हें जोगी ने उस तेली को मार कर अपने
 ने बस किया है सो तेली एक सिरि सके दरख पर रहता है
 अब वह जोगी तुम्हें को नेवता देवेगा छल कर के तुम्हें ले जा
 यगा तुम्हें नेवता ले कर वहीं जाइयो जब वह कहै कि तुम्हें उ
 वत कर तब तुम कहियो मेरे उवत करना न हों तो तब
 मेरी ताई एक जहा नद उवत करता है जो तुम गुरु हो
 और मेरे चला तो मुझे उवत करना बताना और उस्तार है मे
 रं उवत करे जब वह सिरि निहण वेतवत खडग मरिना
 कि उसका सिर जो दा हो जावे और वह हांक कर जो देवी
 के भागे तेल का खालना होगा उससे उसके अंग रस ख

से तें ली को उतार के दोनों को उसी कड़ाह में डाल देना
 यह मेरी बात तु गांठ बांध इसे हर गिज कभी मत भूलना
 यह बात कह कर वह देव चला गया और राजा अपने म
 हल में आया ॥ भोर हुए सारे नगर में खबर हुई कि राजा बि
 क्रमा जीत आये दीवान मुतसद्दी और सब अहल कारन
 जेरें लाये ॥ तमाम शहर में आनन्द होगया घर घर में ग
 ल चार होने लगे यहाँ तो खुशी के नक्कारे बज रहे थे इतने
 में एक जोगी आया और राजा को आदेश सुनाया एक फल
 उसके हाँथ दिया उनने हस कर वह फल हाँथ में लिया जोगी
 न कहा राजा हमारे यहाँ यज्ञ होता है एक दिन का तुम्हा
 राने वता है तब राजाने कहा हम आवेंगे तुम अपने मन में
 चिंता मत करो शाम हुए पहुँचेंगे ॥ जोगी यह सुनते ही
 ठेकाना बतलाया और अपनी मेंढी को गया जब शाम
 हुई राजा भी खाँडा फरी ले तैया रहोगया और किसी से
 न कहा अकेला चला गया तुने जोगी के पास पहुँचा और
 आदेश कहा जोगी बोला देवी के आकर दे उचित कर
 जो देवी तुम से खुश हो राजा बोला स्वागो मेरे उव
 त नहीं जानता कि किस तरह करते हैं जो मुसे बताओ

तो मै कहूं ॥ जौ मी बताने लगा और जो ही सिर सका
 या राजाने देव की न सीहत याद कर के एक खांडो ऐ
 सामा कि सिर धर से जुदा हो गया और उसे मारते ख
 तरन किया और उस दरख्त से भी ते ली को उतार हो
 नों को जलते कडाह में डाल दिया ॥ तब देवी बोली ध
 न्य है विक्रम तेरे साहस को ॥ मै तुझ पर प्रसन्न हुई तूं
 मुझ से बर मांग और धन्य है तेरे माता पिता को कि जि
 न के घर में तूने और तार लिया ॥ देवी जब यह कह चुकी
 तब वे वीर आकर हाजिर हुए राजा से कहने लगे कि
 हम आगिया और कोयला दो वीर तुम्हारे सेवा को आ
 ये हैं जो तुमारी कामना हो सो हम से कहो हम तुम पर पूरी
 कर दें सब जगह के जानकी हम सामर्थ रखते हैं जल थ
 ल मही आकाश में पवन के रूप होकर जहाँ कहो हम
 चले जायें जैसे हनुमान जी तुम लंका जा पहुँचे वैसी ही
 हम भी जा सकते हैं ॥ यह सुन खुश हो राजाने कहा मुझे तो
 कुछ काम नहीं है अगर मेरे लई बचन दो तो मैं देवी से तुम्हें
 मांग लें लेकिन है विरों जो तुम से बचन देकर निर्वाह
 किया जाय ॥ तो बचन दो उन बैता लों ने कहा कि अच्छा

तब राजाने उनको बचन बन्द कर्के मांग लिया और कहा
 जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरे पास पहुँचना
 तब वीर बोले राजा तुम जिस जगह हमें याद करोगा वहाँ
 हम पवन रूप होकर पहुँचेंगे ॥ यह बात उनसे कहकर
 राजा अपने घर को गया ॥ ये बातें चित्र रेखा पुतली ने
 राजा से कही कि राजा विक्रम के ये काम थे इतने जोग
 तो तू नहीं है ॥ फिर वे वीर राजा के ताबे हुए और और
 बहुत से काम किये जहाँ विक्रम को गाढ़ पड़ी वे दोनों
 आकर हाज़िर हुए ॥ जो कोई ऐसा काम करे तो सिध
 हो ॥ राजा तू अपने जोर पर गरूर मत कर तुझसे पृ
 थ्वी में कड़ी डोहोगये हैं इतनी बात जब पुतली ने कही
 राजा की वह भी सा इतल गइ तब दूसरे दिन सुबह को
 राजाने फिर पाठ बैठने की तैयारी की और जो ही चाहा कि
 सिंहासन पर पाँव धरे ॥ किरति बामा तीसरी पुतली बोली
 तुम्हारा यह काम नहीं जो इस पर बैठो पहले मुझ
 से एक कथान सुन लो एक दिन राजा बिर विक्रम जीत द
 या कनार एक महल में खलवत करके बैठे थे राग हो रहा था
 और हर करग की बुहल मचार ही थी कि दिल फँसता है जा

३८

का दिल वहाँ बैस्रिथार लग रहा था कि एक पंथी
 त्रीया संग लिये हुए और उस त्रीया के गोद में एक बा
 लक घर से खफा होकर निकले थे दरिया के कना
 रे पास उसी महल के आकर गुस्से के मारे कुद पड़े मर्द
 के एक हाथ में हांथरंडी का और एक हाथ में लडके का
 हांथ यों तीनों डूबने लगे तब पुकारे ऐसे धर्मात्मा कौ
 न है जो इन तीनों आदमियों की जानें बचावे उनमें से
 वह मर्द हाथ करके पुकारा जो कोई गुस्सा मार न स
 के तो इसी तरह वे अजल मर जाता है और गिर के
 बहुत पछताता है ॥ उसकी आवाज़ राजाने सुनते
 ही लोगों से पूछा यह कौन दूखी पुकारता है तब ह
 रकारों ने खबर दी कि महाराज एक मर्द और रंडील
 उनके समेत डूबते हैं उन्हमें से वह मर्द चिह्नारहा है
 कोई ऐसा पर उपकारी हो कि हम डूबतों को निकाले
 ॥ यह हां काग कहते ही था कि वह फिर पुकारा ह
 म तीन जो डूबते हैं कोई हमें भगवान का वंदः पा
 र लगावे यह सुन कर राजा वहाँ से धाया और आ
 कर उस दरिया में कूद पड़ा जाकर एक हांथ में -

रंडी और दूसरे होथमें लडके को पकड़ लिया ॥ वह म
 ई भी राजा से लिये दगया तब राजा घबराया और आप भी
 डूबने लगा ॥ आपने ईश्वर को याद किया और कहा कि हे ना
 थ मैं धर्म के वास्ते आया था और इसमें मेरा जी हो जाता है
 धर्म कर्ते अधर्म होवें ॥ राजा यह कह कर बहुत जोर करने
 लगा और जोर उसका कुछ काम न आता था तब उसने
 भगिया और कोयला दोनो वीरों को याद किया याद क
 रते ही वे वीर आकर हाजिर हुए और चारो को उठा कना
 र पर रख दिया तब वह बिदेसी राजा के पावों पर गिर पड़ा कि
 महाराज तुमने हम तीनों को जी दान दिया तुम्ही हमारे भ
 गवान हो क्योंकि जी दान तुम से पाया ॥ राजा होथ पकड़
 कर उन तीनों को मेहरवानी से रंग महल में ले आया और
 बिठा कर कहा तुम जो चाही सो हम से मांग लो तब वह बोला
 महाराज ॥ हमें हुक्म कीजिये तो हम धार को जायें और ज
 ब तक जियेंगे आप को आसीस दिया करेंगे ऐसा कुछ
 तुमने हमें दिया है ॥ तब राजा ने अपनी तरफ से तो खरप
 यादे कर धर मिजवा दिया ॥ इतनी बात कर पुतली नि
 रबोली राजा ने लायक तुम हो तो इस सिंहासन पर

बैठो और यों बैठोगे तो तमाम लोग हसेंगे ॥ वह भी महारत
राजा काट लगया दूसरे दिन फिर राजा दिल में सोच करता हुआ
आसि हांसन पर बैठने को आया तब * ॥

चंद्राकला चौथी पुतली बोली ॥ ४

सुनो राजा तुम मनु मलीन कैयों हो बैठो हमारे पास और सु
नो जो मैं कह्या कहूं ॥ एकरे ज एक पंडीत कहों से राजा वि
क्रम जित के पास आया और उसने आकर बयान किया
जो कोई एक महल बनाने की बिना मुवाफिक मेरे कहने के
धरे बैन उठावे और बड़ा नाम पावे तब राजा ने कहा अच्छा
जाहिर कर * ब्राह्मन कहने लगा तुला लगन जब आवे
जो उसमें मंदिर उठावे जब तक वह लगन रहे तब तक का
म उसमें जारी रहे और जब तुला लगन हो चुके तब उसका
काम मौकूफ रहे इस तरह तुला लगन ही में वह साराम का
न तैयारी पर लावे उसका अष्ट मंडार हो और लक्ष्मी उ
सके यहां से कभी न जाय * यह सुन कर राजा मन में खुश
हुआ दीवान को बुलाया और मंदिर उठाने की आज्ञा जत ही
कितु म अच्छी जगह टुंढ कर महल बनाओ इतने से तुला
लगन भी आन पड़ेंगी उस मंदिर की नेब दी स देस में यह

प्रावाइ हुई किराजा तुलालगनमें महल बनवाता है
 जेतने कारीगर उसमें काम करते थे वे उठकर तुलालग
 न मनाते थे जब लगन आती थी खुश हो हो बनाते थे
 कहीं उसमें काम सोने का और कहीं रुपे का और कहीं लो
 हे और काठ का नई नई तरह से बनता था * चुनाचे
 दरिया के कनारे पर वह हवेली बनाई चार दरवाजे औ
 र सात खंड उसमें खे जगह जगह जवाहिर अनमोल
 उसमें जड़े और दरवाजे पर दो नीलम के बड़े नगीने
 लगाये जो किसी की नजर न लगे ॥ वहाँ जडा दुमहल
 के तने बसों में ऐसा तैयार हुआ कि दुनियाँ के परदे में
 किसी ने दूसरा न आखों से देखा न कानों सुना न ब दी
 वानने जाकर राजा को खबर दी महाराजा वह मंदिर
 आवतै यार हुआ चलकर उसै देखिये और जो कोई
 उस महल को देखता था मोहित हो रहता था राजा वहाँ
 से मकान देखने को गया ॥ एक ब्राह्मन भी साथ गया
 महल को जब राजा ने मुलाह जा किया तब ब्राह्मन
 देखकर और हसकर कहने लगा ऐ राजा ऐसा घर
 जैसा तुं तो बैठ्य हाँया तुरन बाँतुं यह बात सुन

कर राजा ने कुछ मन में सोचन किया गंगा जल और तुल
 सी दल लेकर घर उस बाह्य रा को संकल्य कर दिया वह
 घर पाकर ब्राह्मण को ऐसा हुआ भ्रान्त जैसे चकोर
 रात को पावे है चंद्र तब वह भ्रम ने कुनवे को ले आया ॥
 और वही भ्रम कर रहा रात को खुशी से पलंग पर सोता
 था कि पहर रात गये लक्ष्मी आई और कहने लगीं कि वे
 टा हु कनरे तो मैं गिरूँ और घर बाहर संपूरन भई खो फ
 से उसने जवाब कुछ न दिया तब वह दो पहर रात को पि
 र आई और कहा कि भ्रम ब्रह्मन भ्रजानी मुझे भ्रम ज्ञा
 दे ॥ भ्रम ने चिंता कर के रात गवाई और सुबह हो क
 र राजा के पास आया मन मलीन और रात के अहवा
 ल से उरा हुआ रंग जर्द पहरे का और डर से कुम्हला
 था हुआ ॥ राजा इस शकु से देख उसे हंसने लगा फिर
 कहा कल की सी खुशी हमने आज न देखी भ्रम ब्राह्म
 ण यह भ्रम की बात है तब ब्राह्मन बोला सुन स्वा
 मी मेरा दुख तुम दाता हो प्रजा को सुख देने वाले औ
 र तुम साके बंधन रहे सही जैसे राजा कर्न और राजा
 इंद्र भ्रम ने वक्र में खनी थे ऐसे इस समै में तुम हो ॥ आप

ने जो मन्दिर मेरे तई दिया है उसकी हकीकत मैं कहता हूँ
 मालूम नहीं कि उसमें भूत है या पिशाच मेरे तई उसने सागि
 रान सोने नही दिया आप के प्रताप से याल उका के भाग से
 जिता बच के मैं यहाँ आया हूँ इसे भी खमाँग खाना मुझे दे
 हतर है पर उसम हल में न जाऊँगा और न रहूँगा यह बात
 राजा ने सुन कर प्रधान को बुलाया और उसे कहा जो उ
 समकान में लागत है सो हिसाब करके इस ब्रह्मरा को देव
 राजा की भजा जाकर दीवान ने हिसाब कर तो डेरूपयो के
 लदेवा कर ब्राह्मरा के साथ कर दिये और वह अपने घर
 को गया * उस दिन सात देव उस हवेली में राजा जा
 हा और बैठ कर कुछ वीचार करने लगा इसमें हाँथ बा
 धं कर लक्ष्मी आनख डीरही बोली धन्य राजा विक्रम तेरे
 धर्म को इतना कह लक्ष्मी उस वक्त तो चली गई राजा ने
 वहाँ आगम किया जब यह रातर ही तब लक्ष्मी फिर आ
 ई और कहने लगी ॥ राजा मैं कहूँगी गई राजा ने कहा
 जो तुम पड़ावा हति है तो पलेगछे इकर जहाँ तेरी इच्छा
 होवे तहाँ गिर ॥ इतने में खबर रह से सोने का मिहत मा म
 शहर में बसी ॥ सुबह हुई राजा उठा देख कर यह कहने

लगा हमारी ऐसे यत पर बहुत सखती थी लेकिन अब को
 इ दिन निश्चित हो आराम से रहेंगे * इतने में दीवान
 आया और खबर दीया महाराजा तमा मनगर में कंच
 न वरसा है अब जो हुक्म देव सो हम करें जब राजा ने क
 हा शहर में ढोल बजा देव जिसकी हृद में जो दोलन है
 सो ले किसी को को ई मनान करे ॥ यह राजा का हुक्म पा
 कर सब ऐसे यत में दोलन अपने घर भर दिया यह बात
 कह कर पुतली राजा भोज से कहने लगी सुन राजा वि
 क्रम के मुख वह ऐसा राजा था और यज्ञा की हितकारी
 तू किस तरह उसके सिंहासन पर बैठा है तेरी क्या जा
 न है ॥ यह सुन कर बात पुतली की राजा अज्ञान हुआ
 और बर्च पुरोहित भी शर्मिदा हुआ ॥ वह सायत भी
 गुजर गई उशारे दिन राजा फिर सिंहासन पर बैठने चला
 और बाढ़ा पांव अपना धरे ॥ कि ॥

॥ लीलावती पांचवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा विक्रम के गुन एक दिन दो शरत्स भापुस में
 सगडने लगे एक ने कहा कर्म बड़ा और एक ने कहा
 बुलबड ॥ किस मत का तरफदार कोला बस बडे

हैं कि भदना को भाला कर देता है और जोर का जा
निबदार कहने लगा जोर बड़ा है जोरवर होवे तो तमाम
जहान को जोर कर दे इस तरह दोनो सगड़ते सगड़ते इंदु
के पास गये हाथ जोड़ कर कहने लगे स्वामी हमारा न्याय
करो जो दोनों में सब हो फर्माइये और सगड़ानि वेडिये तब
राजा इंदु बोला यह हमसे न होगा इस न साफ़ को वह क
रेगा जिसने जोग किया होगा इसे बेहत यह है कि तुम
मिर्तलोक में राजा विक्र माजीत के पास जाव इस न्याय को
वह चुकावेगा ॥ उन्होंने राजा इंदु की आज्ञा पाकर राजा
विक्र माजीत के पास आया यह जाहिर किया कि हम दोनों
भुवन में फिर आये और किसी ने हमारा न्याय नही चुकाया
इस का धर्म अधर्म विचार हमारा न्याय करो * यह बात
सुन राजा ने कहा आज तुम अपने अपने घर को जाव छः
महीने के बाद हमारे पास आना तब हम जबाब इस का देगे
यह सुन कर वे दोनो अपने घर गये राजा मन में अपने चिं
ता कर चरना पहिर का धा चढा हाडा फरी ले बिदेस निक
ला और अपने दिल में यह कौल किया कि जब तल कर इस
का भेदन पावेगे तब तल कर देस में फिर न आवेगे * जब कि

ते फिर्ते समुंद्रकनारे पहुंचावहाँ एकनगर उन्ने बहुत ब
 शक्तिपट होहादना खूब आचारपाया और उसमें तरह त
 रहकी हवे लियां जिनको कड़ा डोरपाया लगे थे और उनमें
 सेवायज वाहिरके कुछ नजर न आता था देखकर राजा क
 हने लगा कि जिसका यह नगर है वह राजा कैसा होगा
 * शहरमें फिर्ते फिर्ते घाम होगई और शहर आरि वर न
 हुआ एतने में क्या देखता है कि एकदूकान में महाजन सि
 र निहुड़ाये हुए बैठा है ॥ राजा उसके सामने जा खड़ा हुआ
 तब सेठ ने राजा से कहा मुं किस देस से आया है और तेरा मन
 मलीन क्यों है किसे डंढता है और क्या तेरा काम है अपना
 अर्थ मुझ से कह ॥ किसे काबेठा है और कानेरा नाम है ॥
 तब वह बोला सेठ जी मेरा नाम जिक है मैं आज तुम्हारे प
 स आया हूं मेरे दिल में मकसद यह था कि मेरा जा से मुलाका
 तक हूं सो आज मुलाकात न हुई कल मेरा जा से मिलुंगा और
 उन्हीं की सेवा करुंगा जो वे मुझे नौकर रखेंगे और मेरा मही
 ना कर देगे तो मैं रहूंगा * यह बात सुनकर वह महाजन
 बोला तुम वगैरे जल बगेत बरा जा कहने लगा जो कोई
 लाख रूप देवे तो हम रहे तब वह साहूकार बोला भाई

तुम क्या काम करते हो जो तुम्हें लाख रुपये रोज देवे वह
 काम मुझे बताओ तब उसने कहा जिस राजा के पास मैं
 रहता हूँ उसकी गाढ़ मुश्किल में काम आता हूँ सेठ हसकर
 बोला लाख रुपये रोज हम से लो और सरवती मेहमार
 सहाय हो ॥ सुबह हुए नौकर रक्वा और दूसरे दिन ला
 ख रुपये गिन दिये इसने उनमें से आधे रुपये अपने भग
 वान के नाम संकल्य कर ब्राह्मणों को दिये आधे के आधे कं
 गाल को और जो बाकी रहे उसका खाना पकवा कर मूरों
 को खिला दिया रात हुए पर फिर जो एक फकीर ने सवाल
 किया उसे रवांड़ा बंध कर खवा कर भोजन करवा दिया आ
 पने चवाकर गुजरान कीया केतने दिन उस साहकार
 के पास रह कर रुपये हर रोज योंही खर्च कर्ता रहा ॥ गरज कि
 समतने तो यावरी कीया तब जो रबोला मेरी बारी है येक वये
 कसेठ के दिलमें कूच उचाटी हुई एक जहाज तैयार कर किसी
 देस जाने का इरादा किया और विकसे कंहां मैं किसी देस
 जाता हूँ बोला स्वामी मेने बचन दिया था कि गाढ़ में तुम्हारे का
 न आऊंगा अब मैं तुम्हारे साथ हूँ कि तुमने प्रतियाल किया
 है तब उसे सेठ ने जहाज पर बठा लिया रवाना हुआ केतने

दिनों के बाद जहाज मां सधार में तूफान से तबाह हो
 ने लगा तब वहाँ लंगर डालकर उसी जगह बंद रहे जथा
 * उसी आगे जो रायू था उसमें सिंहावती नाम राजक
 न्या रहति थी हजार के न्या उसके साथ थी इसमें जब
 वह तूफान थम्ह गया तब सेठ ने कहा लंगर उठाओ च
 लो और लंगर कहो अटक गया था किसी से उठन स
 का था जोर कर रहे थे निदान निरास होकर सब अप
 ने परमेश्वर को याद करने लगे और कहने इस धार
 से सेवा करते पार लगाने वाला कोई नहीं जहाँ जहाँ
 जिस जिस को मुश्किल पड़ी है तहाँ तहाँ तुही सहाय
 हुआ है और दिन दयाल तेरा नाम है हम पर भी दया
 कर * इतने में वनियो घबराकर बिक से कहने लगा
 भव भया हमें पड़े हुये है कनारा हमें नजर नहीं आता
 और एक बात तेरी मुझे याद आइ है जब तुहमारे पास
 नौ कर रहा था तब तुमने एकरा किया था मुश्किल
 काम में आसान करूंगा इस जगह परमेश्वर पना दरे
 या तुं इससे अब क्या करि न होगा काल के मुह में पड़े

हैं ॥ यह सुनकर विक उठा फरो रों डा हाथ ले रस्सा प
के उ ज हा ज के नीचे उतर गया जाकर बहुत सी हि क
मत की पर कोई हि क मत न चली तब सेठ से कहा की
पालें इसको चढा दो लोगों ने पालें चढाई और उसने
कूद कर लंगर कार दिया बानी के ते जी से और हवा के
तुही से ज हा ज चल निकला और कोई रस्सा उसके हा
थ न लगा उसी जगह रह गया जो कुछ विधाताने क
र्म में लिखा है उसे कोई मिटान हीं सक्ता आखिर को
राजा वहाँ से बहता हुआ चला और जाते जाते उसे ए
क नगर नजर पडा यह वहाँ जालगा उस नगर का जो द
र्वाजा था उस पर जों हों निगाह की देखा मे कठ पर लि
खा हुआ है कि सिंहावती से और राजा विक्रमाजी त
से शादी होगी * यह देख राजा को अचरज हुआ कि
यह किस पंडित ने लिखा है जब उस दरवाजे के अंदर
गया वहाँ जाकर एक महल देखा वहाँ रंडियाँ हैं मर
द कोइ नहीं और पलंग पर सिंहावती सोती है चौकी
की महल यों बैठी हैं यह भी जाकर पलंग पर बैठ गया
और तुत उमको जगा दिया वह उठ बैठी * तब राजा

हो ययक उलिया और दोनों सिंहोंसनपर जाबैठे स
 वसखियोंहाजिरहुई और इसभेदसे वाकिफयी कि
 राजा विक्रमाजीत यहाँ आवेगा और उससे इसकी-
 शादी होवेगी राजाको जो देखाने कलोंकी मालाले आ
 ई और गंधर्व व्याह किया राजा जैसे दुख पाकर पहुँचा
 था वैसा वहाँ उसने सुख भोग किया * अलग राजवेदो
 ने आपसमें रहने लगे और नौजवानीके ऐश उठाने ल
 गे और हर एक तरहका चेन करने लगे सखियोंभी खि
 जमतमें हाजिर थीं और मानिन्द चकोरके चोंदसा राजा
 का मुह देखती थीं * चन्द मुदत राजाको इसी तरह गु
 जरी अपना राजकी कुछ सुध न रही यह बातें कह
 लिलावती पुतली ने फिर कहा कि सुन राजा भोज जै
 सा राजाने बल किया तैसा ही विधाताने उसे सुख दि
 या किसमतने वह तमाशा देखा था फिर कहने लगी
 उन सखियोंमें एक सखीसे राजाको बहुत प्रीति हुई
 और वह राजाकी दया बीचार भेद वहाँका कहने लगी
 ऐ राजा तुम यहाँ आनकसे हो जीते यहाँ से कभी न
 निकलोगे तुम्हारा नाम सुनकर और तुम्हारे राजका

जका ध्यान करके मुझको रहम आता है क्योंकि तुम
ऐसे धर्मात्मा दयावन्त दाता परोपकारी हो यह और ह
ना तुम्हारा भला नहीं लाखों आदमी तुम बिना दुख पा
ते होंगे ॥ उसकी बात सुनकर राजा को ज्ञान हुआ राजा का
ध्यान आया तब उसे यूँ ही यह से जाने का भेद मुझे ब
ताओ बोली एक घोड़ी इस राज कन्या की घुड सार में है
सो उदैसे अस्त तलक जा सकती है यह बात सुनकर
दूसरे दिन राजा रानी को साथ लेकर टहलता हुआ इस
वस में जानिकला घोड़ों को देखकर तारीफ करने ल
गा रानी बोली जो तुम्हें शौक हो तो इन घोड़ों में से किसी
घोड़े पर चढ़ा करे ॥ भेद तो इसे वहाँ का मासूम ही था
दूसरे दिन घोड़ा उससे वहाँ से मगाया और उस पर स
वार हो वहीं फेरने लगा रानी भी खुशी होती थी और
राजा भी खुश होता था इसी तरह कई दिन कितने घो
ड़ों पर सवार होता रहा एक दिन उस घोड़ी को मारा गया
और रानी के हृदय से उस घोड़ी पर भी सवार हुआ
रही तो गफलत में रही कि इसने कोड़ा किया घोड़ी
मातिन्द्रहवा के राजा को ले उड़ी रानी और सखियाँ -

भ्रमचता पछतारह गई ॥ राजा भ्रमचावती नगरी में भ्रानय
 यहेंचा वहां नदी कनारे एक सिध बैठा देखा राजा उतर
 दंडवत कर उस पास जा बैठा सिध का जब ध्यान खुला
 तब उसने इसे देखा देखकर खुश हुआ एक फल की
 माला इसे दिया और कहा बिजेमाल मैंने तुझे दिया
 इसका गुन यह है कि जहां जायगा तहां फल हवावेगा
 और तूं सभ को देखेगा तूं झेंकाई न देखेगा ॥ फिर एक
 छड़ी राजा को दिया ॥ और उसको बेवरा भी समझा कर
 कहा कि इस लकड़ी का यह खवास है पहिले पहर रात
 को सोने का जडा उगढ़ना जो इसे मांगे सो यह स
 वदेगी और दूसरे पहर रात को एक खूबसूरत नारी दे
 खे देगी कि जिसे तुम देख राजा भ्रमचि कहो जा भोगे
 और तीसरे पहर रात को जब इसे ही भोगे लोगे तो
 तुम सब को देखोगे और तुम्हें कोई न देखेगा चौथे
 पहर रात को मानिन्द का लक यह हो जावेगी इसके
 से कोई दुश्मन तुम्हारे पास न आ सकेगा ॥ यह बात
 कह जोगीने राजा को हरसत किया राजा जब उजेन
 नगरी के पास यहेंचा तब उधर से एक ब्राह्मन और

एक भाट को आते देखा और जवन जरी कपड़े च
तब ओहों ने आसिसे देकर कहा महाराज आप के द्वारे
पर हमने बहुत दिनों सेवा की पर हमारा भाग ईसा था
कि उसका फल कुछ नहीं मिला तब राजा ने सुन ही ब्रा
ह्मण को छोड़ दिया और भाट को माला और उसका भेद
सब कह दिया आसिसे देकर वे दोनों कहने लगे महारा
ज इससे मैं तुम राजा कर न हो तुमारे बराबर दोनों आ
ज पृथ्वी में दूसरा और नहीं यह कहा और बिदा हो कर
गये ॥ राजा भी अपने स्थान को गया दीवार प्रधान
सब आनकर हाजिर हुए शहर की तमा मरए यत खु
श हुई और वे दोनों मग डाल भी भयकर राजा के सामने
खड़े रहे और कहा महाराज आपने जो छ महीने का क
र र किया था सो बात गया हमारा न्याय अब कर दिजिये
राजा बोला बिना बल कर्म के छ काम नहीं और बिना क
र्म बल काम नहीं आता इससे दोनों बराबर हैं इसको सुन
संगी खक रवाह छोड़ दो नो अपने धर्म ये राजा भोज यह
महवाल इसलिये तुमसे कहा यह खयाल छोड़ दे जाय
हलिया कतर खवह सिंहासन पर बैठे फिर उसके दूसरे

भोर हो ते ही सिंहासन पर बैठने को तयार हुआ कि इत
 ने में ॥ काम के दला छोटी पुतली
 ह सी और कहने लगी कि जिस सिंहासन के उपर राजा वि
 क्रम ने पाँव धर है न उस के बैठने के लायक कब है ॥ ऐव
 यो तू अपने होश को गुमान कर क्योंकि तू से देख मेरा म
 न मलीन होता है और इस सिंहासन पर वही बैठे जो वि
 क्रम सा राजा हो तब राजा बोला तू कह विक्रम ने क्या क्या
 कर्म किये हैं वह बोली तू सुचित होकर बैठ मैं नृपति की
 कथा कहती हूँ एक दिन नृपती अपनी सभा में बैठा था ए
 क ब्राह्मण ने मान कर एक भवरज की बात कही कि उ
 नरदिसामे एक बड़ा वन है और उस वन में एक पारवत
 और उसके आगे एक तालाब और उसमें एक खंभ फ
 टीक का जब सुरज निकलते हैं तब उस सरोवर में से वह
 खंभ भी निकलता है और जौ जौ सुरज बढते हैं तौ तौ
 खंभ भी बढता है जब हीक रोय हर होती है तब वह खंभ
 सुरज के रथ के दरबार जा पहुँचता है तब उस जगह रथ
 खड़ा रहता है और वहा जब सूर्ज कुछ मोड़न कर लेते
 हैं तब रथ चल निकलता है और खंभ भी घटता जाता है

तिसन ग्राम के वक्त यानीमें लोय हो जाता है इसको देव
 ताया देव को इ न हो जानता ॥ यह बात सोहन से सुन
 कर राजाने अपने मनमें रक्खी जाहिर न किया ॥ उस
 को तई कुछ रुपया दे बिदा किया और तालवै ताल को
 याद किया वै दो नो बीर आगर हाजिर हुए ओन्होंने
 कहा हमें जो इस वक्त याद किया है सो आज्ञा कीजिये क
 हिये स्वर्ग को ले जाव कहिये पाताल को कहिये समुद्र
 पार इन तीनों लोकमें जहां आपकी मर्जी हो तहां ले
 चलो तब हस कर राजाने कहा एक कौतुक देखने हम जा
 या चाहते हैं सो वह उत्तर खेउ में है वहां तुम ले चलो ॥
 यह बात सुन कर बीर कांधे पर चढ़ राजा को ले उड़े और
 उस जगह तुर्त जाय हं चाया राजाने यह तैलाव देखा
 कि चारों धार उसके पुरवता हैं हंस बकुले उसमें फिरते
 हैं कवल के फूलों पर भौरे गुंजर रहे हैं भोर बोल रहे हैं कोइ
 लकू कर हीं हैं तरह बतरह के पंछी हुलासमें हैं फूलों की
 सुगंधों के साथ पौन चली आती है और मेवे दार दर रत्न की
 शलियों चल के खाती हैं राजा यह समा देख कर बहुत
 दिल में खुश हुवा रात भर वहीं आराम चैन से *

रहा जब सुबह हुई सुरजनिकले जो कुछ कि ब्राह्मन
 ने कहा था वह सब वहाँ देख कर बीरों से कहा एक बात
 जी मे मेरे भ्राता है कि मेरे तई ले जाकर इस खंभ पर बै
 टा दो और भगवान का ध्यान कर अपने स्थान को जा
 ओत ब बीरों ने खंभ पर ले जाकर बैठा दिया और वे अ
 पने मकान को गये जों जों वह खंभावटने लगा तों तों
 राजा अपने दिल में खौफ करने लगा जेतना सुरज के
 नजदीक पहुँचता था उतना गर्मी से जला जाता था ॥
 निदान सुरज के निकट पहुँच जल कर आंगार हो गया
 जब खंभ ठग वरथ के पहुँचा और रायवान ने एक मु
 रहा जला आदेखा अपने रथ के घोड़ों की बाग खे
 ची खोड़े ठठ के सुरज ने सुककर देखा कि खंभ पर ज
 लाहु आ एक आदमी लगा रहा है सुरज चाही चाही
 कर बोला यह साहस आदमी कानहीं यह कोई जो
 मोहे या कोई देवता या गंधर्व इस मुर्द के होने में इस
 जगह किस तरह भोजन करूँगा यह कह कर सुरज
 ने अमृत ले इस पर छिड़क दिया राजा राम राम कह
 पुकार उठा और देख कर सुरज को दंडवत कर ही थ

बांधकर कहने लगा धन्यभाग हैं मेरे और मेरे कुल के
 जो आप के दर्शन पये और मैंने जो इस जन्म जन्म
 न जो किये थे उसी के सब वतुमारे चरणों देखे जिंदगी
 का जो फल पा सो मुझे मिला ॥ इच्छा संसार में संभूत
 है लेकिन जिस पर तुम्हारी मेहर बानी हो उसी को
 दर्शन मिलते हैं यह सुनकर सरय बौला तू क्यों
 न है और तेरा क्या नाम है तुझे देखकर मेरे जी में त
 रस आता है ॥ अपना नाम तू जल्दी कह तब राजा
 बौला स्वामी नगर अंबावती में मंथर्व में न जो राजा
 था उसका बेटा मैं विक्रम हूँ ॥ आप की कथा मैंने
 एक ब्राह्मण से सुनी थी मुझे आप के दर्शन की इच्छा
 हुई और आप को तब जजुह से आप के चरणों देखे
 अब मेरे नई आजादिये तो मैं बिदा हूँ यह सु
 न सरजन हसकर अपना कुंडल रतार कर राजा
 को दिया और कहा अब तू निडर राज कर फिर स
 राजकार्य भागे वठा और खंभ भी घटने लगा
 बराजा अकेला रह गया तब वीरों को बुलाया
 वीर आकर हाजिर हुए ओह के काधों पर स

होकर अपने मुकान को आया ॥ और जब शहर में
 हाविल होने लगा सामने से एक गोशोंई आया ॥ उ
 सने राजा से अपने जोग के मती से कहा महाराज जो
 तुम कुंडल लाये हो वह मुझे दान दिजिये ॥ और उस
 धर्म बड़ाई लिजिये ॥ ऐ जोगी मती हीन ऐसा जोग
 तुने कब कहा जो तुं कुंडल मांगता है ॥ वह स
 न्यासी कहने लगा महाराज मैंने तो जोग कुछ न ही
 साधा पर सुनाया कि राजा बड़ा दानी है इसे मैंने आ
 प को जांचा ॥ राजा ने हसकर कुंडल उतार उसके हा
 थ दिया आप खुश होता हुआ अपने घर में आया ॥
 काम कंदरा यह बात सुनाकर कहने लगे राजा तु
 मने भी इतनी कुरत होतो इस सिंहासन पर बैठ ॥
 यह बात सुन राजा मुन मलीन हो फिर गया उसके दुस
 रे दिन राजा दिल में गुस्सा खाता हुआ फिर सिंहासन
 पर बैठने चला और परोहित से कहा इस बेर मे पुतलो
 क कहने से और रोकने से नर कुं गा आज सिंहासन
 पर जरूर बैठेगा राजा ने पांव उठा कर सिंहासन पर चढ़
 किर खू तैस हों ॥

॥ कामोदीसातवीपुतली

पांवतले आनगिरी ॥ राजाने यह तोर देखदुखितहोया
 व रेंचलिया और उसपुतलीसे कहा तू किस कारन चरनमें
 आनगिरी तब उसने कथा शुरू किया हम जो हैं अबला स
 तजुगकी हैं राजातेरा और तार कलजुगमें। हमने एक ही-
 मर्दे का मुह देखा और दुसरे का मुह नहीं देखा हम पहले अप
 पना माजरा कहती हैं कि बिष्णु कर्माने तो हमें जन्म दिया औ
 र बाहु बल राजा के पास हम आकर रहीं। उनने राजा विक्र
 माजीत को हमें दिया ॥ वह अपने घर ले आया जबसे हम
 उससे बिछडी हैं तबसे कभी सुख नहीं पाया ॥ जो उस राजा
 के बराबर होवे सो इस सिंहासन पर बैठे ॥ राजा बोला विक्र
 ममें बस फकाये तू मुझसे बयान कर तब मुह कहने लगी
 सुन राजा विक्रमा एक दिन वह अपने घर में दोपहर रात
 को सोता था और तमाम शहर नौदमें यह गा फिल था जो कि
 सो आदमी की आवाज न आती थी कि उत्तर दिशात ही
 के पार एक खूब डोढे मारके रो उठी है वह आवाज राजा
 विक्रमाजीत के कानमें पड़ी ॥ राजा मतमें अपने बुदु
 त चिंता करने लगा कि हमारे नगर में कोई दुखी आया
 है और निहायत विकल और कलेश से भरा हुआ मालूम

ह
 कि

हे कि वह अपने दुख से कूक मार मार रो रहा है वह
 बात दिल में विचार डाल तलवार हाथ में ले उधर को च
 ला और नदी के तारे पहुंच कर बस छोड़ लंगोटा मार प
 र कर पार हुआ ॥ क्या देखता है कि एक भगी सुन्दरी ज
 वान नारी खड़ी कूक रही है उसके पास जा कर राजाने पू
 ष्ण पुरुष का तुझे बियोग है या पुत्र का तुझे लोभ है या
 तुझे सोत का साल है शत्रु ने दुखों में किस दुख से तू रोती
 है जो कुछ तुझे व्याया है सो मुझे कह तब वह कहने ल
 गी सुन राजा हमारा बालम बोरी करता था शहर के को
 त बालने उसे पंकड कर सली दिया है ॥ और मैं उसके
 खाने खिलाने के लाई हूं उसे भोजन करवाऊं पर सली
 उंची है और मेरा हाथ उसके मुह तक नही पहुंच
 ता इस दुख से रोती हूं और जितना जतन करती हूं
 पहुंचने नही पाती राजाने कहा यह तो यह थोड़ी सा
 बात है इसके वास्ते तू क्या रोती है उसने जवाब दिया
 कि मुझे यह थोड़ी ही बात बड़ी है तब राजा बोला मेरे
 कांधे पर बैठ के उस सली पर चढ़ और जोरेंगा था उ
 से खाने लगी रक्त मुंह से उसके राजा के बदन पर गि
 रने लगा ॥ राजा मन में सोचा यह कोई और है और

इसने मुझे धोखा दिया अपने जीमें राजाने यह सो
चकर पुछा कह सुनो पिताते राजा भोजन करता है कि न
हों तब कंकालिन बोली स्वसे खा चुका अब इसको पर
भरा मुझे बांधे से नीचे उतार ॥ जब हेट उतरी राजाने क
हा उसने कहा केखाया तब कंकालिन हसकर बोली
तुमाग जो तुझे चाही ये मैं तुमसे बहुत खुश हूँ मैं कंक
लिन हूँ तु अपने जीमें मुझसे मत उर ॥ वह बोला मैं तु
झे क्या उरूंगा और क्या मांगूंगा तूने तो मुझे मेरे कंधे
बठराया तू मुझे क्या देगी वह फिर बोली कि राजा तू
सके खयालमें मत पड़ कि मैंने क्या किया और क्या न
किया जो तू से इच्छा है वह मुझसे मांग ले राजाने हस
कर कहा यह पूर्ण मुझे दे और जगमें जससे वह बोली
अन्य पुराना मेरी छोटी बहिन है तू मेरे साथ चल मैं तु
से दूंगी ॥ इस तरह आयुस में दोनों बचन कर चले -
आगे आगे कंकालिन और पीछे पीछे राजाने ही
किनारे जा पहुँचे वहाँ एक मंदिर था उसके द्वारे कंक
लिन ने ताकी मारी और अन्य पुराने प्रगर हो कहाय
ह भूपाल कौन है वह बोली यह राजा विक्रम है इस
ने मेरी सेवा किया है और मैंने इससे बचन हा रहा है

अगर मेरी मुहबत तेरे दिल में है तो अन्य पुर्नाइ सैदे ह
 संकर उसने राजा को एक थैली दी और कहा इसमें से जितनी
 खाने की चीज मांगोगे सब पाओगे ॥ राजा ने हाथ फैलाले लि
 या वहां से खुश हो नदी किनारे आकर अशनात ध्यान कर ति
 चित्त हुआ कि एक ब्राह्मण आन पहुंचा उसके राजा ने बुला
 या और कहा कुछ भोजन करोगे उसने कहा मुझे भूख ल
 गी है आप दे तो मैं खाऊं ॥ राजा बोला क्या खाओगे किस
 चीज पर तुमारी सुरत है वह बोला इस वक्त एक वान खाऊं
 गा राजा अपने जिमें सोचने लगा जो इस दम एक वान न
 प हुंचेगा तो मैं ब्राह्मण से झूठा हूंगा ॥ इतनी बात मन में वि
 चार थैली में हाथ डाल कर जो निकाला तो देखा कि एक वान
 ही निकला ब्राह्मण ने पेट भर कर खाया और बोला महा
 राज भोजन तो मैंने किया अब इसकी रक्षना भी दिजि
 ये ॥ राजा ने कहा जो रक्षी नामांगों से सोमै दंगा ब्राह्मण
 बोला कि यह थैली में रक्षी ना पाऊं तो आनन्द से अपने घ
 र जाऊं ॥ थैली ब्राह्मण को देकर राजा अपने घर को चला
 वह इतनी कथा कह कर राजा भोजन फिर बोली कि इत
 नी में न त से थैली पाई और ब्राह्मण के देते बार देन ल
 गाई ऐसा साहसी और सादानी हो तो सिंहासन पर बैठ

और न हों तो पातक होगा वह भी महारत राजा का टल ग
या दूसरे दिन फिर राजा सिंहासन बैठने को आया तब ॥

पुहपावती आठवीं पुतली ने कहा
राजा तुने सिंहासन पर बैठने का चित किया है सो इस की आ
समन से झाँडे राजा बोला मैं किस तरह छोड़ूँ तब पुतली ने कहा
शुरू किया कि एक दिन वीर विक्रमाजीत अपने दरबार में बै
ठा था सब राजा मुजरे को हाज़िर थे उस वक्त एक बढई ने आकर
सलाम किया और कहा महाराज मैं आप के दर्शन को आया
हूँ और एक तोहफा आपके लिये लाया हूँ ॥ राजाने आज्ञा
किले आव ॥ बढई ने जो हि कमल का घोंडा बनाया था न
जर किया राजाने घोंडे को देख कर पूछा कि इसमें क्या क्या
गुन है बढई ने कहा महाराज इसमें यह गुन है न कुछ खा
ता है न कुछ पीता है और जहाँ चाहोत हाँ ले जाता है दरया
ई घोंडे के बराबर है था उस वक्त चालाकी से एक जगह घों
डा ठहरता न था कूँद फाँद रहा था जो जास जा देखता था से
झुता था आखिर पसंद करके कहा कि इसको इस महान में
फिर कर देखा दे जब उसने कोडा किया तब तो गई हूँ न जर
आती थी और घोंडा मालूम न होता था ॥ जब एसे गुन घों

उमें राजाने देखे दीवान को बोला कर कहा लाख रुपया इसे
 दो ॥ दीवान ने अर्ज की महाराज यह काठ का घोड़ा और
 लाख रुपये इनाम मुनासिब नही राजाने दो लाख रुपये
 फर्माये और उस दीवान ने चुपके हवाले कर दिये और अपने
 दिल में सोचा कि अगर कुछ और तक रक दूंगा तो
 और बढेंगे ॥ वह बढई रुपये ले अपने घर को गया घोड़ा था
 नयर बांधा और वह चलते हुए कह गया था कि इस पर स
 वार होते को डान कि जियो न एउ मारियो पर किसमत का
 लिखा कोई मिटान नहीं सका जो बात हुवा चाहती है सो हो
 ती है ॥ कई दिन के बाद राजाने घोड़ा मगवाया और अपने
 मुसाहिबों से फर्माया कि कोई तम मे से सवार हो कर इस घोड़े
 को फेरे तो हम देखें यह बात राजा से सुन कर एक एक का मु
 ह देखने लगा घोड़े की चालाकी से कोई न चढ़ा तब राजा
 झुझला कर बोला घोड़े को सा जलगा कर तैयार कर लाव
 यह बात सुनते ही एक की जगह हजार दौड़े और जल
 ही तयार कर लाये ॥ राजा सवार हो कर बहां फेरने लगा
 जेतना कि वह चाहता था कि आसन जमा कर घोड़े को
 अपने काबू में लावे राजा से निकल जाता था और पारे की

तरह एक जगह रहती नथा छलावे की मानिन्द छलवा
 कर रहा था राजा खुशी के मारे बढई की बात मूला गया
 और घोड़े को कोड़ा किया ॥ बाबु क लगाते ही आग बग
 ला होकर वह ऐसा उड़ा कि समुद्र पार ले गया और एक जं
 गल में दरख के उपर से गिरा आयरनों से निकल गया ॥
 राजा भी दरख पर से लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा और
 यह हालत हुई कि मरने के नजदिक हो गया जब बहुत दे
 र हुई कुछ उसे होश आया तब अपने दिल में कहने लगा
 देसनगर राज पाटल ये यत अपने पर ये सब के सब छूटे -
 किस मत मुझे यहां ले आई देखिये आगे क्या होता है यह म
 न मे विचार कर धिरज बांध उठकर वहां से आगे चला ऐसे म
 हावन में जा पड़ा कि निकलना फिर मुश्किल हुआ बारी उस
 जंगल से मूला भटका जोंतों कर के दसरो जमें सात को सर
 ह चलकर फिर एक ऐसे बन में जा पहुँचा उसमें यह अधे
 र था कि हाथ को हाथ न सुझता था और चारों तरफ शेर गेड़े
 चीता बलक सब तरह के जानवर बोल रहे थे ॥ उनकी डेसव
 नी आवाजें सुनकर राजा सहमा जाता था कभी पूर कभी
 पच्छिम कभी दक्षिन कभी उत्तर भटका भटका फिर ता था ॥

पर कहीं राहन मिलती थी ॥ इस तरह देख भोग ता हुआ
 पंद्र दिन के बाद एक तरफ जानिकला वह एक तमाशा
 नजर आया कि एक मकान है और उसके बाहर एक दर
 र खड़ा और दो कूए बड़े बड़े और उस दर पर एक
 बंदरिया बैठी है ॥ कभी नीचे उतरती है और कभी ऊपर च
 ढती है राजा यह कौतुक छिया हुआ देख रहा था इतने में
 निगाह उसकी ऊपर गई क्या देखता है कि उसह वाली पर
 क बाला खाना है जब दर खत पर चढ़ गया तो देखा कि वहाँ
 क पलंग बिछा है और सब ऐशका अशबाब धर है तब म
 न में कहा अभी जाहिर होना अच्छा नहीं पहिले यह मा
 लूम कहें कि कौन आता है और कौन जाता है जब दीकरी
 पहर हुआ एक सिधु वहाँ आया बाई तरफ जो कूआँ था उ
 समे से उसने एक तूवा जल निकाला वह बंदरिया उतर आ
 ई सिधु ने एक चिल्लु पानी उस पर डाल दिया वह खूब सर
 त ली होगई और उस रूपवती त्रिया से जोगी ने भोग कि
 या जब तीसरा पहर हुआ जोगी ने कूयें से पानी खेंच उस
 पर छिंसा मारा फिर वह बंदरिया की बंदरिया होगई और
 दर पर चढ़ गई जोगी भी पहाड़ के गुफा में जा बैठा ॥

और अपना जोग करने लगा राजा ने अंगार हो चतुर्दश कर दो
 रे कुलसे जलनि काल उस बंदरी पर धोरा मारा फिर वह रुकी
 सुन्दरी नारी हुई कि गोया इंदु के अखाट को अप धरा है और राजा
 जा को देख राजा से मुह फेर लिया काम के वानरा जा को आन
 लगे प्रेम कर उसको अपने पास बैठा लिया जब उसने और
 प्यार के देखी तब वह सकर बोली महाराज। हमारी और और द
 से मत देखो क्यों कर कि हम तपसी हैं जो हम सरपेंगे तो तुम भ
 सम हो जाओगे ॥ राजा बोला कि सरप मुझे न लगौगा मैं राजा की
 र बिक्रम जीत है कोई मेरा क्या कर सका है मेरे हुक्म में ताल बे
 ताल हैं ॥ बिक्रम का नाम सुने ही वह बाला राजा के चरण पर गि
 र पड़ी और कहा महाराज तुम तो नर स हो हमारा उपदेश सुन ज
 लदय ही से जाओ अभी जती भावता है तो मुझे तुम्हें दोना को
 सरप देकर जलाता है तब राजा बोला कि हम जती के सामने न
 होंगे हमारा तो यह कुछ कर न सकेगा पर स्त्री हत्या हमै लेनी उ
 चित न ही क्योंकि स्त्री हत्या लेने से आखिर को नरक भोगना प
 डता है ॥ फिर राजा ने कहा कि इस सिधने तुझे कहा था तब
 वह बाली काम देव मेरा बाप है और यह यावती माता मैंने उ
 न्हें के कुल में औतार लिया था जब बारह बरस की में हुई तब श्री

न्होंने मुझसे एक भ्राता की और मैंने भंग की तब माता पि-
 ताने क्रोध कर जती को दे डाला और यह मुझे भयने बस कर
 के इसवन में ले आया बंदरी कर के दरबार चढाया ॥ इस श-
 कु से एक वर्ष गुज़रा कि मैं इसवन में हूँ सब है कि किसमत
 के लिखे कोई मिटान ही सका ये ही सोच कर मैं बुपकी हूँ
 तब राजा बोला मेरा जी चाहता है कि तुझे भयने घर ले जाऊँ ॥
 वह बोली महाराज मेरे भी दिल में यही है पर क्यों कर जाऊँ तुम
 रानगर समुद्र पार है तब राजा ने वचन दिया कि मैं तुझे ले चल-
 गा समुद्र लाघने को फिर कुछ मत कर इस तरह ले जाऊँ
 कि तुझे मालूम न होगा योंही नौने आपस में बात कर रैन आ-
 नन्द से भोर किया और सब राह ते ही पानी दूसरे कु से नि-
 काल उस पर छिडका कि फिर बंद बंदरी की बंदरिया होगई
 कुद कर दरबार पर चढ गई राजा वहाँ छिपरहा और उसी द-
 म जोगी आन पढ़ें वा वही जतन जा गिने कर छन एक वहा
 खशी किया जब चलने लगा तब वह सुंदरी बोली महाराज मेरी
 एक दिन तो सुनये कुछ प्रसन्न है तुमसे मांगती हूँ मो तुम मुझे दे-
 व यह जोगी ने हस कर एक कमल का फूल उठा दिया और य-
 ह कह कि एक लाल यह हर रोज देवेगा और कभी न कुम्ल ला

यगा इसे मुमभच्छतरहरखना यह सुनकर उसने अपेचो-
 ली में रख लिया और दिल उसका खुश हुआ जो गीफिर से
 बंदरी बना के चला राजा ने फिर पानी कुए से निकाल कर उसे
 नारी बनाया और उसने वह कमल का फूल राजा को दे खला
 या और कहा महाराज एक अद्भुत चरित्र है कि इसमें से ए-
 क लाल रोज निकलेगा यह बात बुधवाहर है राजा ने कहा इ-
 सका आश्रय नहीं भगवान को समझाने है और वह का-
 क्या करन ही सका यह बातें कर सन सन से काटी सबेरा हुआ त-
 व उस कवल में से एक लाल गिरा दोनों ने यह तमाशा देखा त-
 व राजा बोला कि अब यहाँ रहना उचित नहीं बेहतर यह
 है कि मेरे देस को चला यह बात राजा की सुनकर वह बोली
 सुनो महाराज एक मेरी अधीनी में पांव पड़कर जोर कह-
 ती हूँ कि तुम बड़े दानी हो ऐसा दानी मैंने कहीं नहीं सुना ए-
 सान हो कि मुझे किसी को दान कर दो ॥ मै दानी हो हर वक्त
 तुम्हारी सेवा करूँगी ॥ तब राजा बोला यह नहीं होना कि
 कोई अपनी नारी पर पुरुष को दे यह धर्म विरुद्ध और लोक-
 विरुद्ध है तब राजा उसकी खातिर कर दोनों बीरों को लाया
 वे आकर हाजिर हुए उनसे कहा हमारे देस ले चला जाने

तखतपरबैठा उनको हवा की तरह ले उड़े वे तो अपने शहर
की तरफ गये और जो गी जो वहाँ आया और उस सुन्दरी को
नया या तो अचानक यचना मन मार मुरझा रह गया निरानरा
जा अपने नगर के पास आया और सिंहासन से उतर उस रा
जकन्या का हाँथ थाम शहर को चला रास्ते में रखा उसने कि
सी का खूबसूरत लड़का दरवाजे पर खेलतारहा राजकन्या
के हाथ में कवच का फूल देखकर वह लड़का रोने लगा और
बिलक बिलक बोला मैं यह फूल लूँगा राजा ने कवच उसके
हाँथ से ले लड़के को दिया लड़का फूल ले हसा हुआ अपने
घर में गया राजा भी मंदिर में जा बिराजा ॥ जब सुबह हुई
तब उस कवच के फूल से एक लाल गिरा लड़के के बाप ने उसे
देख उठा लिया और कवच को भी पारकवा रसीत रह से ह
रो जले अल निकाला किया कि एक दिन के तने ले अल
वह ले कर बाजार में बेचने गया यह खबर केतवाल को पहुँ
ची तो केतवाल ने उसे पकड़वा मगवाया कि तू बनियाँ तूने यह
ले लूक रहे पाये यों कह उसको बहुत सी सजावा ले अल ले
कर राजा के पास आया और सब वह अहवाल बताया त
ब राजा ने कहा उसको भी लाओ और उसे भी पुछो कि तु

ने ये लेभल कहों पाये * वतिये को बुलाकर पूछा यह लेभल
 ल तू कहाँ से लाया और राजाने उसे कहा जों तू सब मुझसे कह-
 गा तो मैं तुझे और भी दौलत दोंगा और झूठ बोलेगा तो देखे नि
 काल दूंगा उसने अर्ज किया सुनो भूपाल दारे खिलता था मेरा बा
 ल उसके हाथ में कोई कंवल का फूल दे गया था और उसने आ
 कर मुझे दिया मेने रात भर उसे अपने पास रखा सुबह होते उसे
 से लेभल सड़ा और हर रोज उससे एक एक लेभल यों ही नि
 कलता है और अब भी वह फूल मेरे घर में है * राजाने कहा य
 ह तो तूने सब सच्ची बातें कही अब तू ये लेभल लेकर अपने
 घर को जा कोतवाल ने वह न बुझा किया जो वेतह की क तुझे प
 क डलाया इसका न्याय अब यह है कि लारव रूप ये तुझे को
 तवाल डों डे यह कह लारव रूप ये कोतवाल से दिल्वाया
 और उसके घर को भेज दिया * यह बातें कह पुली फिर बोली
 सुन राजा वीर विक्रमा तके गुण और धर्म तुम सब हे कुछ
 उसकी हकीकत न ही जानता इस से राजा को तु अपने जाने
 हीन जान कर मानता है और अपने तई मन में तू अधिक स
 मझता है और यह बातें पुली से सुन राजा उस दिन यों ही
 अछूता पछूता रह गया वह सात भी जाती रही सुबह

कोदु सोर दिन राजा सिंहासन के पास आके खड़ा हुआ और
पुतली से युद्ध ने लगा कि तुरबुश तो है कथा सुने से मुझे निहाय
तुसी होती है और जो सुना है वह भी खरा होता है तब ॥

मधमावती नवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा भोज यही बैठकर मैं एक दिन की कथा राजा विर-
क्रमा जीत की कहती हूँ एक राजा ने होम का आरंभ किया जहाँ
तक देस के ब्राह्मण थे उन्हें को नेवता भेज बुलवाया और जेत
ने उसके देस के राजा और सदा वसा हुकार थे वे भी हाजिर हुए
भार भिरवारी भिक्षु व सुतक १ सब थाये देस देस को राजा अपने
सब लोगों को लेले आये और जेत ने देवता थे वे भी सब के सब
आये राजा अपने सिंहासन पर बैठा यज्ञ होने लगा कि एक बुढ़ा
ब्राह्मण उस समे आया ॥ राजा अपने यज्ञ के मंत्र पढ़ता ब्राह्म-
ण को दूर से देख मन में दे उवत की ॥ सपंडित ने आग म बिद्या
से मालूम किया हाथ बड़ा राजा को आसीं म दिया कि चिरं-
जीव हो जब राजा ने मंत्र से पुस्तक पाई तब उस ब्राह्मण से कहा
कि महाराज आपने बहुत मन्द काम किया कि बिना प्रणाम
आपको दे तुमने दिया जब लग पावे न लगे कोई तो वह आ-
सीं आप समझे ब्राह्मण ने कहा राजा ॥ जब तुने मन में दे उ

वत किया तब मैंने आसीस दिया * यह सुन राजाने लाख रु-
पये दान को दिया बाहरा कहने लगा महाराज ये तने रुप ये
मैं मेरा निर्वाह न होवेगा ऐसा कुछ बीचार कर दिया जिसमें
मेरा काम होंवे राजाने पांच लाख रुपये उभे दिये वह लेकर भ-
पने घर को गया और जो जो बाहरा उस यज्ञ में थे ओह को
भी बहुत कुछ दिया इस वासे राजा भोज में ने तेरे आगे यह वा-
त कही कि तुम सिंहासन के जोग न हो है सिंह की बराबरी का
स्यार करेगा और हंस की बराबरी कौंवे से न ही होती और बं-
न्द के गले में मोती की माला नहीं सोहती और गद्दे पर पाखर
नहीं कबती मेरा कहा मान और इस खयाल से दर पुज्जर नहीं
तो नाहक की किसी दिन तेरा प्राण जायगा * यह सुनकर
राजा चुप रहा और दिन भी गुजर गया जब रात हुई अंधेरा क-
र सुबह को बहसूर सिंहासन के पास आया और चाहे कि
समझे धरे तब

मेरा वृत्ति इस बीमारी

हंस कर बोली राजा यह ले तुम मुझ से यह बात सुन लो पीछे
सिंहासन पर खुशी हसी से वे खटके किसी बात के वैरो

राजा बोला तुम्हारा कह मेरा भी जो सुने को चाहता है राजा व
 हो आसन बिछा बैठा और पुतलोक कहने लगी सुन राजा एक दि
 न वसत नृत्य में दे सकलाह आया और मौराया हुआ कोयल कु
 कर ही थी ठंडी हवा चल रही थी राजा वीर विक्रमा जो न अपने
 बाग में बैठा हुआ हिंडो ल सुन्ता था इसमें एक बियोगी किसी देस
 से भूला भटका आनिकला राजा के पांव पर गिर पड़ा और कह
 ने लगा स्वामी मेने बहुत दुख पाया है और अब मे आप की सर
 न आया हूं और उसकी यह सुरत बन गई थी कि तमास लह
 वदन का सुख गथा था और आख से कम सुसता था अन्न पा
 नी सब छोड़ दिया था किसी तरह धीरे जन ही धुरता था रा
 जा जो जो समझाता था तो तो वह विरह से व्याकुल हो हो रो
 ता था तब राजा ने कहा तुम अपने ली को संभालो और इतने
 दुखी क्यों हो और अब जो यहां आये हो तो दिल को अपने त
 सस्त्री करो किस कारण तुम्हारी गत एसी हुई है और किस के ग
 म से तुम्हारी यह शकल बन गई है मुराद अपना कहो किस देस
 से आये हो और क्या तुम्हारा नाम है वह एक आह सदै दिल पु
 र दर्द से रोकर बोला नगर कलजर देस है मेरा मैं मति हीन -
 बुद्ध हूं एक जतीने मेरे आगे यह बात कह दी थी कि एक खूबस

रत ही एक जगह है वैसी सुन्दरी को ई जगमें न होवे
 गो गोया कामुदे वसै पहाहुई है वल्क तो नो लोक में वै
 सो न हो गो और लारें राजा जो भगवा उस के यहाँ आने
 हैं और जल जल जाते हैं उस न हीं जाते राजा के कहा
 कि सलिये जल ते हैं तव वह यह हकीकत कहने लग
 कि उसके पीने वहाँ एक भाग भंड लाने है और एक कडा
 हमर की चढ़ावा है वह पी बडा बोलता है और यह शर्त
 है कि जो उस कडा हमे भ्रम नान कर जिता वचनिक
 उस कन्या की शादी करेगा यह बात उस जो गी से सुनकर
 भी वहाँ गया था सो मैने अपनी आर्यों से यह तमाशा देख है
 नहुआ और वहाँ हजारों देस देस के लारों नो का का कर
 सा प्रले कर आते हैं यह देख पछता कर जाते हैं उन में से जो
 कही है कगह में गिर के जल मून जाता है जब से शकु उस गजा
 उस कन्या की नजर आई है सुख बुख में नग का भ्रम की हालत
 ह उसके रक्त में बना है यह बात सुनकर राजा देव का भ्रातृ
 भय वहाँ रडा कलह मनु समित कर वहाँ चले गे और उहे लु
 है दि ला देगे अपनी खातिर जमार रगे यह बात कह उ
 से भ्रम नान कर वाया कुछ बिलगा अपनी समा में

बैठा कर यह कह दिया कि जितने संगीत विद्या वाले हैं
 सब तयार हो हो आ जायहाँ आकर हाजिर होवें और अपना
 अपना मुजरा बजा लावें राजा की आज्ञा पर आन हाजिर हु
 ए और अपना अपना गुन जाहिर करने लगे ॥ राजाने उ
 स्से कहा कि इन्हें मेरे सिंहासन पर तुम चाहो हम तुम्हें दे तु
 म यहाँ बैठ कर सुख भोग करो और उस्का खयाल दिल से
 भुला दो सुन कर वह बियोगी बोला महाराज ॥ सिंह अगर
 सात दिन उपास करे तो भी घासन चरे से वाय उरक मुझे नि
 सी और की इच्छा नहीं इसी तरह तमान रगत बीतो जबत
 उकाहु आत बराजाने अशानत पूजा कर उन्हे विरों को
 याद किया वे तुर्त आकर हाजिर हुए और अर्ज किया म
 हाराज क्या कहें हम किंसे सको तुम्हें ले चलें ॥ राजा
 बोला जहाँ यह प्रेमी कहें उन्हे कहाराज कन्या के नगर में
 लेचलो जिस जगह वह घोड़ा कडाह खोल रहा है और सारा
 आलम वहाँ जमा है उसी देस को लेचलो राजाने तबत प
 र उस्को भी बिठला अगिया को यला दोनो विरों को हुं क
 किया कि उसी देस मे लेचलो वीर सुनते ही ले उडे और एक
 दम में सिंहासन उसी शहर में जाकर खदिया ॥ राजा

ने वहां जाकर देखा बाजन बाजर हैं हैं और मंगलाचार होर
 हा है ॥ वह राजकन्या फूलों का माला लिये फिरती है और
 राजपुत्र वहां उसके लिये कामना करके जो गये हैं सो सब
 खड़े हैं लेकिन हिया किसी का यह नहीं पड़ता था जो उस
 कड़ाह में कूदे और जो को राजान पर खेल कर कूदता है तो ज
 लमुन जाता है राजाने जब उस कन्या को पास जाकर उस
 के रूप को देखा देखते ही मोहित हो रहा और कहा जिस्को
 खसे यह कन्या पेदा हुई है धन्य है उसको खको आदमी
 आदमी की तो क्या जान है ॥ सैदे वता देखें तो बे होश हो जा
 दें ॥ इतनी बात राजाने कह कर वीरों को कहा कि हम इस क
 ड्राह में कूदते हैं तुम खबरदार रहना वीर बोले महाराज नि
 चिंताई से कूदिये और किसी बात का खोफ न किजिये इत
 नी बात कह राजा कड़ाह के पास जा म डाल से कूद पड़ा
 कूदते ही जल मुन राख हो गया बैताल ने देखा और तुते भ
 मृत ले आया और राजा के उपर डाला पड़ते ही उसके राजा
 राम राम कह खड़ा हो गया और जेतने ब्राह्मण वहां थे
 जै जै करने लगे ॥ वह जो राजकन्या थी उन्ने भ्रात ही फू
 लों के हार गले मे राजा के डाल दिया वह जै माल जब उन्ने

राजा को पहिरा दिया तब सब लोग भ्रम में रह गए कि
 यह राजा कोई अजब तरह का आया जो जल गया और
 फिर जो उठा यह काम बन खकान हों कोई देवता है जिस
 ने ऐसा काम किया राजा को नियत पूरा हुई तब उस कन्या
 के व्याह की तयारी हुई राजा के मुल्क के जेनने योग्य स
 व वस्तु हा हए और मंदिर में भी रानियों में गला चार करने
 लगे उस तरह राजा से शादी कर दिया जहाँ जेनने तवाहि
 र जोड़े घोड़े हाँ थी बाल की औरत माम माल माल बाव क
 ई क और का दिया यह देकर आधा राजा संकल्य कर दिया
 और दासी दास भी बहुत से दिये तब वह बिरही जो इस के
 साथ था देखे देखे बहुत खुश हुआ जब यह सब देखे लु
 के राजा ने बिदा मागी उस राजा ने सब भ्रम बाव और माल
 उस व्याही हुई तब हन समेत साथ उसके कर र खसन
 किया और कहा अपने देस को तुम जाव हम पर दया मया
 र वियों वह बोला हमारा सुह्रम लायक नही कि तुम्हें
 शि कुछ तारीफ करें जैसा साहस तुमने किया एसा न हम
 ने आँखों देखान का नो सुना इस कल जुग में तुम कोई
 भी नारा हो कर एक जुवान से हम कहों तलक तुम्हारी

सिफत कर सकै एक सिर है हमारा हम तुम्हें क्या बढावें तुम्हारे प्राक्रम पर कड़ो डों सिर निछावर हैं जो नीयत हमने की थी सो तुमने पूरा किया इसका भरोसा हमने न था हां व जो डके रा जासे कहने लगा और कन्या हां व जो ड कर रा जासे कहने लगी महाराजा यह महा दुख हमारा तुम्हने छुड़ाया नहीं तो मैं ब्रह्मने ऐसा पाप किया था कि आप तो नरक भोग करता और मैं उमर भर भजन ब्याही रहती इतनी बात कहने मावती पुतली बोली कि सुन राजा भोजन ऐसा पाक्रम करके उस कन्या को रा जा लाया और उस बिरही को उसै देते वारन लाया राजा कन्या को और सब माल भसवा बंदे करवा लो होयो आपने मंदिर में आपदा खिलहुवा और तू विद्यार्थी है ऐसा साहस तुझसे न हो सकेगा यह सुन कर राजा हैरान हो सिर निचे कर लिया वह साइत भी गई गुजरी फिर दूसरे दिन जब राजा सिंहसन के पास गया और चाहे कि बैठे तब

परमावती ग्यारहवीं पुतली हस कर बोली राजा पहले तू मुझसे कथा सुन ले पीछे सिंहासन पर पांव दे ॥ फिर कहने लगी एक दिन राजा वीर विक्रमाजी ने उज्जैन नगरी को गया और आपने सब आपदा मियों को विदा कर आप वहां रात को रहा और साता था कि एक एक उत्तर दिसा की ओर से एक रंजि भजवत रहसे

धायमार उठी और प्रकार प्रकार कहने लगी कोई ऐसा है कि
 मेरी आकर खबर ले इस या पैसे मुझे बचावे और जी दान दे-
 दम में मेरी पुकार ती थी और दम में धुप हो जाती थी उ-
 सकी आवाज सुनकर राजा वींक पड़ा तलवार ले अपने
 रात में उधर अकेला उठ चला किसी को खबर न हुई जब न में-
 राजा पैदा तब वह सुंदरी फिर रो रो पुकार उठी कि राजा वहाँ जा
 यह वादा कि वहाँ एक रेव उस स्त्री से रती मर जाये और व-
 हन ही मानती तब सिर के बाल पकड़ पकड़ कर जमीन पर दे-
 दे पटकता है राजा ने कहा ऐसा तो नृपति या को क्यों मारता है
 नरक से भी न हीं उरता राजा की बात सुनकर फिर वह उसे मा-
 रने लगारो जाने कहा तू ऐसे सो उदे न हीं तो मैं तुझे मारता हूँ
 यह सुनकर वह राजे के सनमुख हो गया गुस्से से शोर कर
 बोला या तो तू भाग या मैं तू से खा जाता हूँ और तू क्यों न है
 जो यहों आया है तब राजा ने गजब मे आकर एक तलवार
 ऐसी मारी कि सिर उसका धड़ से जुदा हो गया और रुंड मुंड
 से दो बीर निकले राजा के दो ना हीं थो से लपट गये राजा ने
 छल बल कर उन में से एक को मार दूसरा रैन भर ल उतार
 हा मोर होते भाग गया दे यत जब भाग गया तब उस रे डी

सेराजाने कहा भवत जल मेरे साथ चल और कुछ जी
 मे भ्रंदेशान कर वह ससमेरे उर से भागा फिर न आवेगा त
 व वह सुंदरी बोली कि सुनो भूपाल जो मे सात दीप में नौरं
 उपस्थित हैं जहाँ जहाँ भाग कर छिपर हों गी पर उसे बचने
 न पाऊँगी वह भाग कर ले जायगा उसके विनमरे मेरी जिंदगी
 न होगी उसके पास एक मोहनी युनली है वह उसे पेट में र
 हती है जो मैं री योगी उसके बल से वह ठूठ निकालेगा
 और उस युनली में यह ताकत है कि एक देव मेरने से चार दे
 व बना सकती है यह दान उसकी सुनकर राजा उसी बदन में
 छिपर हा सुबह होते वह देव आया उस औरत से फिर खा हि
 रा कर ने लगा जब उसने जमाना बाल सिर के पकड़ जमीन ग
 र पर के ने लगा वह धाड़ कर ने लगी उसकी आवाज सुने ही
 राजा निकल आया और लड़ने को तयार हुआ देव भी रंजी को
 छोड़ राजा के सामने हुआ चाहे कि राजा को मारे इतने में राजा
 ने ऐसा एक खाँड़ा मारा कि धड़ से सिर भलग हो गया उसके
 धड़ से वही मोहनी निकल आई भूमि तले ने चली राजा ने
 उस वक्र वों ही वीरों को भ्रंश की यह जाने न पावे वीर दौ
 ड कर उसकी चोरी पकड़ें वं चलाये और राजा के सामने

हाजिर किया राजा ने उससे पूछा कि तू चंपावरनी मृग ने नी
राजगामिनी की कटके से रो चंद्रमुखी नख सिंध से एसी की ह
सा से तेरे कल झड़ते हैं वतलातुं देव के पेर में कौ कर रही थी
तब वह बोली मुन राजा पहले मैं शिव गन थी एक भ्राजा शि
व की मैं चुक गई तिससे भो न्होंने आपरिया में मोहनी रू
प हो गई और इस देवत ने महादेव की बहुत तपस्या की तब
शदा शिव ने मेरे तई इसको बरखा दिया कर इस पापी ने मु
से ले कर अपने पेट में डाल करवा तब से मैं मोहनी कहला
ई पर शिव की भजा थी कि इसकी सेवा कि जियो और
तो यह कहें सो मानियो इसके वस में हो कर रहती थी मेरा
माजरा था जो मैंने तुम्ह से कहा अब यह बैताल मुझे काबु में
कर तुम्हारे पास लाया है और भ्रादमी की इतनी कुदरत
न होती बल्क तुम भी अगर बहुत रा उपाय करते तो भी
तुम्हारे हाथ न आती अब राजा मैं तुम्हारे वस में हूँ ॥ राजा
बोला अबतू क्या करेगी तब वह बोली तू राजा है और मैं मो
हनी हूँ ॥ तेरे वस और पास रहूँगी जो महादेव के पास पावें
गी ॥ यह कह कर बचन दिया एक वह मोहनी और दूसरी व
हरदी जिसे देव से छुड़ाया था राजा के साथ हुई ॥ यह बा
त करके और बखूबो समझा कर परमावती पुतली बो

ली सुतरा जा भोज उस मोह नो से राजा विक्रमा जीतने गंधर्व
 आह किया था और जो कुछ राजा के परक्रम हैं मैं कहती हूँ
 तुं सुन कान दे के वहरं डी दे यत से जो लोभी उसे जानें यों क
 हा सुन सुंदरी मैं तुझ से पृथक्ता हूँ देव ने तुझे कहा था या था कौ
 न दीप और अगर है तेरे को न वाप है तेरा नाम से उस का और
 अपमान वर सभ सुझ से कह और सब बातें तुने बताइ मृत क
 र सुन कर ने न स्या जे सातु कहेंगे वैसा हो मैं विचार करूँगा
 वह नारी बोली महाराज मेरी कथा सुनो कि किसमत का लि
 खा मिरगान ही है और जो कुछ विधाताने कया ल मे लिख दिया
 है वह इन्सान को भुगतना होता है एक ब्रह्म पुत्र है समुद्र के
 पास जिसे संग लक्ष्मी कहते हैं ब्राह्मण की मैं बेटी हूँ एक दि
 न सखियों के संग तालाब पर भ्रमण करने गई थी और वह ताला
 ब रेखा या कि घने घने दरखतों से घेरे नजर नही आता
 था वहाँ सखियों के साथ खान पान का कैं पर को आती थी कि
 सामने यह राजसमज आया और ती भागने लगा जों जों
 मैं नमानती थी तों तों मुँह दुःख देता था और मैं अनव्याही
 अपना धर्म क्यों कर गवाँती केतने दिनों से मुझे सताता था ॥
 और नरक पड़वे से इतना नया राजा तुने मेरा धर्म रखा और

मेरे कुल की लाजर रवी तुझे संसार में जस होगा जैसा तुने
उपकार किया वैसी ही मुझसे आसीस ले हजार बरस तक
जितारह और किसी के बस न पड़ दिन ब दिन सत और ते
जब ठे साहस तेरा ऐसा हो कि कोई न जिते इतनी आसी-
स जब दे चुकी तब उसै बेटी कह राजाने अपने पास तख्त
पर बैठा लिया और मोहनी को भी बैठा लिया और बैतालें
को हुक्म किया कि हमारे नगर को ले चले बैतालें ले उड़े॥
पल मारते महल मेला दाखिल किया और राजाने आ-
ते ही दीवान को याद किया वह मंत्री आकर हाज़िर हुवा
कहा कोई पंडित सज्जानी ब्राह्मन ठूंठ कर जल्दी ले आ
और परधान ने आज्ञा पाय नगर नगर ब्राह्मणों को भेज ए-
क ब्राह्मन सुंदर विद्यामान को बुलवाया मार के डेय नाम
वह ब्राह्मन जब आया प्रधान राजा पास ले गया राजा
ने हाथ जोड़ कर कहा एक ब्राह्मन की कन्या हमारे यहाँ
है उसै हम तुम को दिया चाहते हैं कि तुम्हीं यह बात क-
बूल करे ब्राह्मन बोला राजा वह कन्या हम को दो ज-
ग में तुम जस धर्म बड़ाई लोग जानें यह बात सुनते ही
ब्राह्मन की तिलक देशादी का सामान करदान दहे ज

तेयार किया फिर ब्राह्मन को बुला संकल्प कर कन्यादान
कर दिया ॥ इतनी बात कह कर पुतली समझाने लगी सु
न राजा वीर विक्रमा जीतने सोच कुछन किया और लो
खों रुपयों का दान दे जेदे एक पल में ब्राह्मन के हवाले
किया ॥ तुरंत सलायक नही है इस सिंहासन के बैठने से
उर। यह राजा भोज। तू गुरागाह कहै दानी और राह सी न
हों तुनाहक हो करता है यह सुन कर राजा चुप हो रह ग
या और सुबह होते ही फिर आया सिंहासन पर बैठने को
तेयार हुआ ॥ तब

कीर्तवती बारहवीं पुतली बोली

सुन राजा भोज एक दिन राजा वीर विक्रमा जीत भयनी
मजलिस में बैठ कर कहने लगा कि कलियुग में और भी क
हों कोई दाता है यह सुनते ही एक ब्राह्मन बोला सुन राजा
प्रजा के हितकारी तेरे बराबर तो साहसी और दानी कोई इ
हों पर एक बात है मैं कहा चाहता हूं शर्म से कह नहीं स
कता ॥ राजा ने कहा सत्य बात में लाज काहे की है तुम हमा
रे आगे साफ कहो हम उस बात में बुरान मानेंगे ॥ वह ब्रा
ह्मन बोला एक राजा समुद्र के तारे रहता है और सदा ध

मे काज करता है जब वह सबेरे स्नान किया चाहता
 है तब लारवह यथेष्ट न देता है तब जल पीता है यह तो
 एक मेने उस के दान की रीत कह आ और भी बहुत कुछ श्रम
 करता है और इस राजा धर्मात्मा हमने सेवाय उस के
 दूसरा नहीं देखा यह बात सुन कर राजा के जी में अच्छा हु
 ई कि उस राजा को चल कर दे रिये यों अपने जी में बी चा
 र कर बैठे तालों को बुलात खतर सवार हो सुदूर के कनारे
 चला और जब उसके नगर के पास पहुंचा तब सिंहासन
 से उतर बैठे तालों से कहा अब तुम दे सक जाओ ॥ और ह
 म इस राजा की सेवा करने पर तैयार हूँ तुम वों हों से ह
 मारे खबर लेते रहियो तब वे ताल बोला इसका विचार
 क्या है राजा ने कहा तुम इस बात से क्या काम जो हम तुम
 कहते हैं सो करो यह बात सुन कर वे ताल अपने नगर
 को आये और राजा पाओ पाओ शहर में दाखिल हुवा
 जब फिर ताहु अपने नगर में राजा के द्वार जाय हुआ द्वार
 वालों से कहा कि अपने स्वामी को समाचार दो कि को
 ई बिदेस तुम्हारे द्वारे सेवा करने के लिये खड़ा है इसकी
 बात डेव ही शरी ने सुन कर राजा से भर्त्ता किया राजा

सुनते ही हलाहुआ आपही बाहर निकल आया विक्रम ने जो
 हार किया राजा ने सलाम लेकर प्रणाम कर लिया तब वह बो
 ला आपकी दया से फिर राजा ने कहा तुम किस रस से आये हो तु
 म्हारा नाम क्या है और तुम्हारा अर्थ क्या है सब सुना वो यह बोला
 सुनो महाराज मेरा नाम विक्रम है राजा विक्रम के देस का मैं रहने वा
 ला हूँ कुछ बेराग मेरे जी में हवार से मैं आप के दर्शन को आया हूँ आ
 पका दर्शन मेरे किया सब मेरे सोच बीचार गया राजा बोला हम तु
 म्हे क्या राजा कर देंगे और के जने मे तुम्हारा निबोध होगा इने कहा
 चार हजार रुपये मेरी गुजरान होगी यह सुन कर राजा ने कहा
 ऐसा क्या काम करते हो जो चार हजार रुपये जीना हम तुम्हे दे
 वह काम हमसे कहो कि यह काम हम करेगे फिर विक्रम बोला जि
 सराजा के पास मैं रहता हूँ उसकी गाढी भी उमें मैं काम आता हूँ स
 तरह से चार हजार रुपये रोज ले कर राजा वहाँ रहने लगा यह
 बात पुतली ने समझा कर राजा भोज से कहा जब सतरह से नौ
 दस दिन गुजरे तब राजा विक्रम मा जीतने अपने मन में बीचार की
 जो लाख रुपये रोज दान करता है उसका नितने मक्या है इस मा
 लम किया आहीये किस देवता का इसै बल है इसी सोच में रह
 ने लगा * एक दिन देखता क्या है दोयहर रात के वक्ते राजा
 अपने लावन को जाता है यह देखते ही उसके पीछे हो लि

या आगे आगे राजा पीछे पीछे विक्रमाजीत इस तरह
 शहर से बाहर निकल एक बन में पहुँचे वहाँ जाकर देख
 तो एक देवी का मंदिर है उस मंदिर के बाहर कड़ाह चढ़ा
 है और उसमें ब्रह्म की आग से घी ओढ़ता है वह राजा
 लाव में स्नान करके देवी का दर्शन कर उस कड़ाह में कूद प
 डा और पड़ते ही भून गया वही ६४ जोगिनियों आन के
 राजा के असतले हुए बदन को नोच कर वागई इतने में कंका
 लिन अमृत ले आई और उसके हाड़ या ज़र पर छिड़का वह
 राम राम करके उठ खड़ा हुआ तब देवी ने मंदिर से लाख रुपये
 दीया और वह ले कर अयने घर को आया तब जोगिनियों
 अयने धाम को गई यह तमाशा देख कर राजा विक्रमाजी
 त भी उसी कड़ाह में कूद पडा और इसी तरह जल गया फिर
 तुर्त जोगिनियों दौड़ी और उसको भी वागई उसी तरह कं
 कालिन ने अमृत ला इस पर भी छिड़क जिला दिया मंदिर
 में से लाख रुपये उसे भी देवी ने दिया रुपये ले दूसरी बार फि
 र वह कड़ाह में गिरा जोगिनियों फिर जला भूना गोश्ल ब
 दन का नोच कर वागई और कं कालिन ने अमृत छिड़क
 जिला दिया फिर देवी ने दो लाख रुपये दिया * गरज वह
 इसी तरह सात बार गिरा और लाख रुपये हर मरतबे में सेवा

पाये जब आठ बौंदफा शरा गिरने का किया तब देवी ने
 आनकर उसका हांथ धर लिया और कहा मांग जो तुझे चा
 हिये राजा हांथ जो उकर बोला मैं मांगु जो मागाया तु देवी
 ने कहा कि जो तेरी इच्छा में आवे मांग वह ही मैं तुसे देवगी रा
 जाने कहा देवी जिस थैली में से तुमने रूपये दिये हैं वह थैली
 मुझे ह्मपाकर दिजिये यह सुनते ही उन्ने वह थैली दिया य
 ह खुश हो उठी राजे क स्थान पर गया और उसके दूसरे दिन
 रात को फिर वह राजा बन में गया और वहां उसने देखा कि न
 देवी का मंदिर है न कशह है स्थान भंग पड़ा है यह दसा वहां
 की देख सोच में निहायत डूब गया फिर जो होश आया तो
 धाय मार के रोने लगा आखिर कोलावार हो उल्टा फिर अ
 पने मंदिर में आया उदास हो सो रहा भोर हुआ जब सभा के
 लोग आये राजा को देखा कि निठल पड़ा है न बोलता है व
 किसी से हसता है बल्कि जो कोई राजा काज की बात करता
 है सुनकर मुह फेर लेता है यह हालत राजा की देख देवान ने
 बिनती करके कहा महाराज आप के मन मलीन होने से
 सारी सभा उदास हो रही है राजा ने यह जवाब दिया कि
 तुम बैठ कर दरबार करो मेरा शरीर मांदा है तब प्रधान वै
 उ राजा काज की बातें करने लगा और जो कोई आता था अ

पने मूलमें जो चाह ताथा सोचता व विचारताथा कोई कहता
 क्याहुवा या राजावीमार हुवा या राजाको कोई मोह गया
 और कोई कह ताथा शार्द राजा है नही पर राजा के ची
 तकी बात और अवस्था किसी को मालूम नहीं होती थी॥
 इतनेमें अपने वक्त पर राजावीर विक्रमाजीत भी गया और
 पृच्छा है राजा तुम्हारे मनमें क्या दुख है और कौन सी र
 सो कष्ट शरीरमें मालूम होती है जिसे इतना दुख हो क्यों
 कि मैंने तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हा (मुश्किल में का
 म आउंगा सो मेरा बचन क्या आप भूल गये मेरे आगे तु
 म अपनी सब अवस्था और चित का मेरे और वार कफ
 करके कहिये॥ तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे क्या अप
 नी बात कहूं पर एक मेरे जीमें है कि अपना प्राण घात क
 रूंगा यह बातें राजा के जवान से दुख की भरी हुई और
 सोच की मिली हुई सुनकर राजावीर विक्रमाजीत ने क
 हा हे पृथीनाथ एक बेर मेरे आगे अपने मन चीत की वि
 षा कहो ये कफा करके तब फिर योद्ध और जतन की जिये
 गा॥ राजा चित को सन्हाल अपने जी का हाल उनसे क
 हने लग गे विक्रम एक देवी मेरे पास थी सो मुझे बड़ा
 संदेह और निहायत सोच है और नहीं मालूम होता कि

वह कहों गई लाख रुपये राज मुसे वह दे ती थी वे लाख रुपये मे
 नितदान करता था और अब मुसे बड़ा कष्ट हुआ है मेरी नित्य
 क्रिया निभेगी नहीं इस वास्ते मैं जान दूँ ज्ञ और ए सामें किसी
 को नहीं देखता जिसे मेरा नित्य नेम चले और जो धर्म पुन्य
 नरहेगा तो मेरा जीना संसार में अकारण है यह बात उसकी
 विक्रम ने सुने ही वह थैली हाँथ में दिया और कहा महाराज
 अब स्नान ध्यान कर नित्य धर्म किजिये और थैली से जेतने
 रुपये चाहोगे खर्च करोगे कम कभी नहीं गे वह सुनते ही खु
 श होकर उठ बैठा और थैली हाँथ से ले अपने प्रधान को बुला
 उसमें से रुपये निकाल खर्च को दिया और कहा जेतने ब्राह्मन
 सदा दान पाते हैं उन्हें को उसी तरह से दो दीवान मुवाफिक कह
 के अपने काम में मशगूल हुआ ॥ राजा वीर विक्रमाजीत
 ने कहा महाराज मुसे अज्ञादि जिये तो मैं अपने देस को जाऊँ
 बहुत दिन गुजरे हैं तब वह राजा बोला हम तुम्हारे कहों तक
 गुन मानेंगे तुमने हमें जी दान दिया है फिर कहा जो तुम अ
 पने देस पहुँचो संदेसा हमें भेज देना कि हम तेम कुशल से य
 हैं चे और टीक अपना देका नायता बना जाओ जो हमारा
 पत्र तुम्हारे पास पहुँचे तब उसने कहा मैं राजा विक्रमाजी
 त हूँ अंबावती नगरी का राज करता हूँ तुम्हारा नाम और ज

स सुन कर दरसन के लिये आया था सो तुम्हें देखा और मेरा
 चित्त प्रसन्न हुआ तुम्हें अच्छी तरह राज करो और हमें बिदा
 दो तुम्हारा साहस बल धर्म हमने देखा ॥ यह सुनते ही वह
 राजा उसके पावों पर गिर पड़ा और हाँथ जोड़ कर कहने लगा
 बड़ा अग्रधनुः आ और मैंने तुम्हारा मर्म न जाना तुमने मेरी
 सेवा किया सो तुम अपने जीमें कुछ मत लाना और जैसा ध-
 र्म मैंने आया का सुनाया वैसा ही देखा और धन्य है तुम्हारे
 तई और राजा तुम्हारे धर्म साहस और परक्रम को यह क-
 ह राजा को तिलक दे बिदा किया राजा बिरे को बुला स-
 वार हो अपने नगर को आया * इतनी बात की तब ती पु-
 तली कह कर राजा को समझाने लगी सुन राजा भोज राजा
 कीर विद्वान् जीत का साहस ऐसी बस्तियाय कर देते कुछ-
 बिलंब न लाया और अपने जीमें न पछताया और जैसा साह-
 स राजा ने किया वैसा सुरनर कोई नहीं करता और तुम किस
 गिनती में है ॥ यह सुन राजा भोज बुझ हो रहा युधिदूरे दि-
 न के प्रभात में राजा उठ तैयार हो पार बैठने को गया मन
 में राश बैठने का करता था फिर शिश्न कर रह जाता था
 इतने में बिलोचनी तेरवीं पुतली
 बोली उठ सुन राजा ॥ एक पुरातन कथा मैं तुम्हें सुनाऊँ

इससिहांसनपरवहीबढ़ेगा जो विक्रमके समान आ
क्रम करेगा तब राजाने कहा कह सुंदरी विक्रम का बल
और कथा सुनने को मेरा भी मन चाहता है * पुतली बो
ली सुन राजा कान दे के एक दिन राजा और विक्रम जीत
शिकार खेलने को चला और साथ में जेतने मुसाहिब स
जपूत वली थे वे भी सज सजा कर तैयार हो आये और ए
क एक की सवारी में हजार हजार को सके धावे का तुरंगवा
राजा भयने घोड़े पर सवार था और वह गोया छलावा था
राजा दुमार भयने भयने शिकारी जानवर बाज बहरी
जुराह शाहीन कुही लगड़ मगवा मगवा भयने भयने
हाथों पर ले ले साथ हथ और राजा भी एक राजा भय
ने हाथ पर बैठा लिया मीर शिकारों को हुक्म पड़ चा
कि जिस जिसके पास जो जो शिकारी जानवरों तैयार है
लेकर रिजा बने हाजिर होवे इस तरह वन वन के एक व
न की राह ली और वहां जा कर किसीने बाज और किसी
ने बहरी किसीने कुही किसीने शाही उड़ाई और भयने
भयने जानवरों को पीछे छोड़े उड़ाये और उधर राजाने
भी जेतने मीर शिकार थे वे भी हं हुक्म किया कि इस जंग
ल में सब शिकार करो मैं तमाशा देखोंगा जो शिकार कर

लावेगा वह इनाम पावेगा और जो शिकार न कर लावेगा
 वह नोकरों से दूर होवेगा * यह बात सुनते ही जेतने भी
 शिकार थे उन्हें सभी ने उस वन में चारों तरफ जानवर छो-
 डे और उधर हवन बहेलियों को किया कि तुम भी शिकार क-
 रों इसी तरह सब शिकार करते थे और ले आये आकर राजा के
 गुजराने थे वह स्वयं तमाशा देख रहा था फिर उसने एक
 बरंदा पर बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा जिधर जि-
 धर वह बाज जाता था राजा भी पीछा किये जाता था इसमें
 कोसों निकल गया देखते शाम हो गई तब सुर्त आई और
 फिर कर पीछे देखा तो वहाँ कोई आदमी नजर न आये और
 यहाँ तमाम फौज राजा की शाम हु ए पर राजा को डड शिका-
 र ले ले आनकर नगर में दाखिल हुए और वहाँ सुने जंगल में
 राजा भरकटा फिरता था और कहों रुक न पाता था जब अ-
 धरा हो गया और रात बहूत गई एक नदी के किनारे पर पहुँ-
 चा उतर कर अपने ही य जीन पोस बीछा घाड़े को एक स-
 टी से बांध बैठा फिर देखता क्या है कि वह नदी बढती-
 आती है यह हट न लगा * गरज जों जों राजा हरता जा-
 ता था तों तों वह बढती आती थी फिर जो निगाह की तो यह
 देखा कि नदी की धार में एक मुर्द बहा चला आता है और

उस के साथ साथ एक बैताल और एक जोगी खिंचा खिंचो किये
हुए आते हैं और आपस में यों सगड़ते हैं कि जोगी बैताल से कह
ता है तुने बहुत सामुदा खाये हैं और यह मैंने अपने अवसर
पर पाया है तुछो उदे में इसे ले जाकर अपना जोग कमाऊ गोया
यह सिध मैंने तुस से पाई बैताल बोला भाई मैं अपना नही हूँ
जो मुसे तू फसलावे कौं कर अपना आधार मैं तुसे देव ॥ इस
तरह आपस में दोनों सगड़ते थे और कहते थे और कोई दूस
रा शख्स इस वक्त एसा नही कि हमारा न्याव चुकावे ॥ फिर
जोगी कहने लगा कि बैताल तुमेरी बात सुन कल सुबह के
वक्त हम तुम जोग सभामें न्याव चुके वही तू भी प्रमान कर
और मैं भी ॥ इतने में एक दुष्ट राजा की और जाय दी देख क
र दोनों हसे और कहने लगे वह कोई मनुष्य नदी कनारे में न
जरूपा ना है वहींचलो कि वह न्याव न वेडे थाने फैंसल
करै ॥ यह कहकर मुदी लिये दोनों कनारे पर आये राजा
को तमाम किस्सा सुनाकर कहा स्वामी तुम धर्मात्मा हो
धर्म विचार के हमारा न्याव निवेडे जोगी बोला महाराज
मैं कहता हूँ सो आप ध्यान देकर सुनिये इस बैताल ने
बहुत मुदी खाये हैं और यह मुदी मैंने अपने दाव पर
पाया है यह ना हक मुससे राउ करता है और कहता है

किमें तुझे नदंगा मैं इससे मिनती करके मांगता हूँ और क
 हता हूँ कि गोया यह मैंने प्रसाद तुझसे पाया यह नहीं मान
 ता राजा ने बैताल से पूछा कि तू अपने भी मन की बात मुख
 से कह ॥ वह बोला महाराज यह जोगी बड़ा मूर्ख है जो इस
 ने मुख से यह मुझ जालगाया मैंने हजार की ससे इस मुर्दे
 को ले आया यह मुख से मांग रहा है मैं इसे क्यों कर दूँ कि इस
 मुर्दे के लिये मैंने बहुत कष्ट किया यह नाहक देख के मन च
 ला जाता है मैं क्या कहूँ कि जो जो मैंने इसके वास्ते दुखः उठाये
 अब आहार के समेत इस दुष्ट ने भ्रान्त सताया इसका न्याय ते
 रे हाथ है क्यों कि तू धर्मात्मा राजा है जो तू कहेंगा सो मुखे प्र
 मान है तब राजा कहने लगा तुम दो नों बड़े हो प्रसाद हमें दो कु
 ० तुमसे हम मांगते हैं तब तुम्हारा न्याय हम बुका देंगे यह सु
 न जोगी ने हसकर आले मेसे एक बटु भ्रान्त काल राजा के हा
 थ देकर यह कहा राजा तू जितना द्रव्य चाहेगा उतना यह ब
 टु आ देगा इसमें से कभी कम न होगा पुनि बैताल ने कहा राजा
 मैं एक मोहनी जिलक तुझे देता हूँ इसे जब तू घिस कर टीका दे
 गा सब तुझसे देंगे तेरे सामने कोई न होगा यह दो नों ने प्र
 साद राजा को दिया उतने उठ कर लिया और बोला कि सुन
 बैताल तू इस मुर्दे को छोड़ दे मेरे घोड़े को घा यह मुर्दा जोगी

केहवाले कर दे क्योंकि तुम्हारा नरहे और उसका काम भी
 बंद न हो ॥ यह सुनते ही बेताल उस घोड़े को बुला गया और
 राजा को मुर्दे ले अपने नाम से साधने गया राजा ने दीर्घों को बुला
 या और अपने देस को चला ऐसे में एक भिलारी सनमुख से
 चला आता था उसने बोला कि साके वेध राजा आता है उ
 स्ने उरते उसने सवाल किया कि महराज आये के नगर में मेव
 हत दिनो रहाले किन कुछ अर्थ मेरा सिधुन हवा अब मे तु
 मसे कुछ मागता ह मेरे तई दीजिये यह सुनते ही राजा ने
 वह बटु आ उसके हाथ दिया और उसका भेद बताया
 वह आसीस देता हुआ अपने घर को गया और राजा अपने
 ने मंदिर में आया इतनी बात कह त्रिलोचनो पुतली कह
 ने लगी कि सुन राजा भोजन सादा तो और ऐसा साहसी
 जो होवे सो इस सिंहासन पर बैठे नहीं तो पा तक है उसके
 दूसरे दिन राजा सबेर उठ स्नान ध्यान कर दरबार में आनवे
 और दीवान मुत्तसदी को बुला कर कहा कि आज मेरा दि
 न बहुत प्रसन्न है जल्दी चलके सिंहासन पर बैठेंगा इतनी
 बात कह बहां से उठ सिंहासन पास आ सो गोदान कर आस
 नों को बिरते कर दीया फिर आपगनेश को मना सिंहासन
 पर बैठने को पांव बढाया कि इतने में ॥

बिलोचनी चौदहीवीं पुतलीने
 कहा पहले कथा सुन जो मै कहती हूँ पीछे सिंहासन पर
 बैठ राजाने सुनते ही पावें खेच लिया और सिंहासन के
 नीचे आसन दिखा बैठा तब पुतली बोली कि राजा सुन
 क दिन राजा वीर विक्रमाजीत ने अपने प्रधान को बुला
 कर कहा कि मैं यज्ञ करूँगा जिससे पुन्य हो और आगे को नि
 मार होवे दीवाने सुने ही देस देस को नौता भेजा जहाँ तब
 क राजा प्रजापति उन्हें बुलाया कर नारक गुजरात कश्मीर क
 तौज तिलंगान इन नगरों में भी नौता भेजा जेतने ब्राह्मण थे
 ओन्हें बुलाया और सातों ही में नौतारवाना किया वहाँ के रा
 जाओं को तलब किया फिर एक वीर को पाताल के राजा के पास
 नौता भेज उसे बुलाया और दूसरे वीर को स्वर्ग को रवाना कर
 देवताओं को नौता भेज बुलाया और एक ब्राह्मण को बुला
 कर कहा कि तुम समुद्र को जाकर हमारे दंड बतक हो और
 निवेदन करो कि राजाने यज्ञ आरंभ किया है और आप को
 ब्रह्मचरिनी कर बुलाया है * वह ब्राह्मण तुरंत वहाँ से च
 ला और केतने एक दिनों में सागर के तीर जा पहुँचा और दे
 खता क्या है कि न कोई मनुष्य है और न कोई वह पशु पं
 छी है केवल जल ही जल नज़र आता है ॥ यह देख ब्रा

हमने अपने जीमें चिंता कर कहने लगा कि राजा का संदेश
 मैं किसे कहूं इहां तो कोई जीव देखानहीं देता और हे तो
 जल ही जल है ॥ ऐसा बीचार अपने मनमें कह वह पुकार
 राजा बीर विक्रमाजीत का नौतामें दिये जाता है तुम जल
 ही पहचाना ॥ इतना कह जब वह उहां से चला तब रस्ते में
 एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप समुद्र नजर आया और उन्ने पृथ्वी
 वीर विक्रमाजीत ने हमें किस वास्ते बुलाया है तब उसने क-
 हा कि राजा के यहां यज्ञ है और तुम्हें जरूर बुलाया है तब स-
 मुद्र बोला चलो मैं आऊंगा पर मेरे चलने से जल जो यहां से
 बड़ेगा तो कई नगर डूब जायेंगे मेरी तरफ से राजा को बिनती
 कर कहना मेरे न आवने का पछतावा न कुछ करना मैं इस
 सब वसे पहंचनही सका यह कह कर समुद्र ने ब्राह्मण को
 पांच लक्ष दिये और एक घोड़ा राजा को सौ गात भेजा—
 आप वहीं रहा और ब्राह्मण रुख सत हो राजा के पास ग-
 या और पांचवीं रात राजा को दिये और घोड़ा ला सामने
 खड़ा किया और वहां का सब विर्तत कहा तब राजा ने प्र-
 सन्न हो ब्राह्मण से यह कहा कि यह लक्ष और घोड़ा
 तुम्हीं लो मैंने तुम्हें दिया यह कह कर पुतली ने राजा
 भोज को समझाया कि सुन राजा भोज ऐसा पदार्थ राजा

विक्रमाजीतने देते बिलंबन किया वह ले आल और घोड़ा
कई राज के कीमत के थे ऐसे दानी राजा के आसन पर बैठने
जोगतन ही है पंडित तू है परमाया तुझसे छूटती नहीं ॥
वह दिन भी यों ही गुजर गया दूसरे राज राजा फिर सिंहा
सन पर बैठने को तैयार हुआ तब ॥

अनूपवती पंद्रहवीं पुतली बोली
सुन राजा वीर विक्रमाजीत के गुण कहने में नहीं आसक
ते जो बात कहने जोग होवे तो कहिये अयुक्त कहते हुए
जी सकाता है ॥ राजा बोला तू कह मेरा जी सुनने को चाह
ता है जैसी बात हुई वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं तब पुत
ली बोली अच्छा मैं कहती हूँ तुकान देकर सुन ॥ एक दिन
राजा वीर विक्रमाजीत सभा में बैठा था और कहीं से पंडित
आया उन्ने आकर राजा के सनमुख एक श्लोक पढ़ सुनकर
राजा मन में बहुत प्रसन्न हुआ उस श्लोक का मुदा यह था
मित्र द्रोही और विश्वास घाती जो है सो नरक भोग करेगे ज
बतलक बाँद और सरज है यह सुनकर राजा ने लाख रुप
ये उस ब्राह्मण को दान दिये और कहा कि इसका अर्थ मु
झे समझा दो कि इसका विर्तीत क्या है तब वह ब्राह्मण क
हने लगा कि एक बड़ा भजानी राजा था उसकी सकरा

नी जो थी प्रान का आधार थी पल भर भी वह राजा उसे आ
प से जुदा न करता था जब सभा में बैठता तो सभा में भी जा
घ पर ले बैठता और जब शिकार को जाता तो दूसरे घोड़े प
र बिठला साथ लेता गरज जागना सोना खाना पीना एक
ही साथ था पर ऐसा मुख था कि किसी से पत या तान था रा
नी को दृष्टि में रखता एक दिन उसके प्रधान ने और सरया क
र कहा कि स्वामी मुझे जो जो दान दो तो मैं एक निवेदन कहूँ
राजाने कहा अच्छा तब वह बोला कि महाराज रानी के स
ग आश शोभान हीं पाते और राजा कुल की आन और म
र्याद इसमें रहती नहीँ देस देस के राजा हस्त हैं कि ऐसी
सुनदरी राजा के मन में बसी है कि पलक और भी नही क
रता ॥ एक मेरी बात मानिये जो आप को यह बतलव्य है
है एक चित्र पर लिखवाइये और अपने पास रखिये इस
में लोग निन्दा करेंगे ॥ यह बात प्रधान की राजा के मन में
भाई कहा अच्छा चित्र कर को बुलाओ मित्र ने उसको बु
लाये जा वह तुर्त आकर हाज़िर हुआ और वह तसबी
र खींचने वाला कैसा था कि जोतिश विद्या में भी अत
नियुक्त था और चित्रकारी विद्या में पंडित था उसे राजाने
कहा कि रानी की मूर्त का पट लिख दे जो मैं अपनी नज़
रों में हमेशा रखूँ ॥ यह सुनकर वह सारद पुत्र ने मस्तक

सुकाके कहा महाराजा अच्छा मैं लिखता ताहें राजा से हस्व
 सन हो अपने घर आया लिखना आरंभ किया केतने एक दि
 नों में लिख कर वह चित्र तैयार किया सो एसा कि जाने अभी
 इन्दलोक से अपसरा उतरी है और उस रानी का जैसा अंगज
 हो था तेसा ही उने अपनी विद्या के जोर से लिखा जब वह त
 सबीर सिर पैर तक तैयार हुई लेकर राजा के पास गया और रा
 जाने देख कर बहुत पसंद किया अंग अंग उसने निरख नि
 रख देखा नख से सिखतलक गोया साचे की ढाली हुई थी
 राजा की दृष्टि देखते देखते जाँघ पर जा पड़ी तो वहाँ एक ति
 ल देखा बहुत सा अपने जी में घबराया और कहने लगा कि
 उने रानी के जाँघ का तिल क्यों कर देखा हो न हो तो रानी
 से उसकी मूला कात है इस तरह अपने मन में बीच भर क्रोध
 कर दीवाने से कहा कि उस चित्र कर को तुर्त बोला ओ उने
 सुनते ही उसे बुला भेजा उसने जावा कि राजा खुश हुआ
 है कुछ इनाम देगा जब वह आन के राजा के सन मुख हु
 आत व अधिक को बुला हु कन किया कि इसकी गर्दन मार के
 ओखें निकाल मेरे पास ले आ जब वह उसे मारने चला ही
 वान भी बिदा हो पीछे हो लिया बाहर निकल जल्दा से
 कहा कि तू इस मुझे दे और ओखें हरन की निकाल कर

राजा के पास ले जा जहाँ ने मधान का कहना किया
 और दीवान राजा के तरफ से बहुत बेइतबार हुआ कि
 ऐसा मुखवा राजा हमने कहीं देखा सुनानहीं कि गुनवत
 पुरुष का यों जीमारे कदाचित गुनवान पुरुष से कुछ त
 क सीर हो जाय तो उसे दे सनि काल देते हैं यह राजाओं-
 का चलन हमेशा से है पर कोई राजाओं की बात पर नम
 ले मुहमे तो उनके अमृत रहता है और पेट में विष भर
 रहें जो कहते कुछ और हैं और कर्ते कुछ और हैं ॥ इस
 तरह दीवान ने अपने जी में बीचार कर उठे उरते उसे धी
 पार कहा और जहाँ हरन की आरखें नी काल राजा के
 पास ले गया और कहा कि महाराज उसकी आरखें नी
 काल आप के पास लाया है राजा ने हुक्म दिया कि इन
 आरखों को ले जा कर सेंडास में डाल दो इस तरह से वह
 सड़त तो डाल गई के तने एक दिनों के बाद उस राजा
 का बड़ा रु दिन अकेला शिकार को गया जाते जा
 ते एक मत्त बनु में जानिकला एक शेर वहाँ नज़र आ
 पा बाध के देख वह बहुत डरा घोड़ा वही छोड़ एक वि
 ल पर चढ़ गया उसके उपर जो देखा तो एक रोछ बैठा
 है रोछ को देखते ही उसके हाँथ पाव फैल गये और
 कापने लगा चाहे कि बैठा बहो कर गिरे इसमें वह

रीं छबोला कि एक वर तं अपने मन मे मै मत कर मे तु से
 नहीं खाने का कौं कि तु मेरे सर न आया है मैने तु से जी
 रान दिया ॥ अब तू निरसंदेह होकर आनंद से ये होवे
 हा यह बात सुनरी छ से उसके जी मे जी आया इस मे ति
 न बित गया ॥ और रात हुई तब वह री छ बोला एरा ज पु
 ने अब रात हुई यह ना हर शत्रु हम दोनो का बे ठा है ॥ स
 वत सोना जी का जियान है बे ह तर यह है कि दो दो पह
 र रात हम आपस में जागे आधी रात तु जागे और आधी
 रात में जागुंगा राज पुत्र ने कहा बहुत अच्छा री छ ने क
 हा पछि ले दो पह र रात तक तु सो रह मै जागता हूं और पि
 छले दो आस निशा कान जागियो मै सो रहंगा आपस
 में वह दोनो ने इस तरह का करार किया राज पुत्र सोरहा
 वह री छ वेठा और चौकी देने लगा इस में शेर ने कहा ए
 री छ तु मेरी बात सुन ले और अज्ञानी मत हो यह मनुष्य
 मत्त है हमारा तु क्यो बिय का बीज बोता है ॥ सैनी बे डाल
 दे हम दोनो खा जायें यह आदमी है और हम दोनो ब
 न वाशी है होथ का मानिक गिर के फिर होथ नहीं आता
 अब यह जाग उठेगा तब तूं सोवेगा तो वह तेरा सर का
 ट कर फेंक देवेगा अब यह ही बहतर है कि मरा कहना क
 र फिर यह ओ सर न पावेगा ॥ री छ ने जवाब दिया कि

मुन आ ज्ञान बाध ॥ अपने उपर अपराध लेना उचित
 नहीं है जितना होता है पाप राजा के मारने और वृ
 त्त के काटने से गुरु से झूठ बोलने और वन जलाने औ
 र विसवास धात करने से इतना ही होता है ॥ सरना मत क
 ले के मारने से इन सब का पाप महा पाप है और यह पाप
 किसी तरह क्षटता नहीं और इन्ने मेरी सरन पकड़ी है
 क्या हुआ जो एक जी मैंने नखाया तब उस वक्त बाध खपा
 होकर बोला कि तुने मेरा कहा तो नमाना मैं भी तुसे जी
 तो न जाने दूंगा इतने में रीछ कि बारी तो गुजर गई *
 और राज कुमार जागा फिर रीछ सोने लगा और वह राज
 कुमार बी की दे ने लगा तब उससे भी यही बात बाधने
 कही कि भाई मैं जो कहें सो तू सुन भूल कर भी तू इससे म
 त पतया और इस पर कुछ विस्वास मत ला सो कर जब य
 ह सुबह को उठेगा अलसो कर तुझे खा जायगा ॥ वह य
 ह मुझसे कह चुका है कि सो कर उठ तो मैं इसे खा जाऊं ॥
 इससे मेरे दा निस्त मे ये ही भला है कि तु यह ले ही रस रीछ
 को गिरा दे तो मैं इसे खा जाऊं और अपने राह ले तू भी
 सही हसला मत अपने घर को जा ॥ *
 उस वक्त उससे पर मो धने से यह बातों में आगया और
 उस रहने को पकड़ कर जोर से अपने रसा हिलाया वह

कि जिसे वह रीछ तले गिर पड़े इससे उसकी आँखें ल
 लगी और हटने से लिवटकर रह गया और उसे कहा है
 र भैयापी जो तुने मुझसे यह सलक किया मैं तेरी जी
 नरखी और ते मत हीन मेरे मारेने को ते या रहवा भव
 जो मैं तुसे मार कर खा जाऊं तो क्या कर सका है ॥ यह वा
 तरीछ की सुने ही उसकी जान सुरग गई अथने दिख
 मे जाना अवयह मुझे मुकरा खाया इससे सवेरा हो
 गया ॥ रीछने उसके कानों में मृत दिया और कहा तू से
 जो से क्या माँहूँ क्योंकि अवयह होते रा कोई बचाने वाला न
 हो है इसे अस्मर्थ जान कर मैं छोड़ देता हूँ यह कह कर
 रीछ तो चला गया और वह गुंगा बेहरा हो गया वहाँ से घ
 बराया और व्याकुल हो नगर में आया ॥ राजा उसकी दसा
 देख जी में चिंता करने लगा महलों में जो खबर पहुँची
 तो रानियों कूक मार कर रोने लगी और कहने लगी कि भ
 गवान ने वहका अयुक्त किया कोई कहने लगी किसीने
 इसे छला है जिसे इसकी यह हालत हो गई है राजा ने
 सोच कर दीवान से कहा कि जतने गुनी लोग हैं जंत्र में
 जानने वाले नगर में उन सब को बुलाओ कुर को देख
 लाओ ॥ प्रधान ने आदिमियों को भेज कर सब सयाने
 और गुनियों को बुलवाया और उनसे कहा जिसे इस

आराम हो सो दिया चाहिये वे अपने मंत्र जंत्र करने
 लगे जिसके दर कि ओन्होंने इसका उतार किया कु
 छ फायदा न हुआ ॥ हारकर उनसे ओन्होंने जवाब दि
 या कि हमारी विद्या इहां कुछ काम नही करती ॥ ज
 ब मंत्री ने यह देखा कि ओन्हों के गुनों से इससे कुछ आ
 राम न हुआ राजा से हाथ जोड़कर बिंती की महाराजा
 मेरे पुत्र की बहू जो है सो बहुत गुनवंती है आप भ्राता
 कि जिये तो मैं उसकी तई ले आऊँ और वह कुवर को दे
 खे भगवान चाहै तो आराम हो जायगा इस सिवाय
 और जतन नहों राजा ने कहा तेरे बेटे की स्त्री क्या जा
 न फिर देवाने कहा महाराज वह एक जोगी की चे
 ली है उस जोगी ने मंत्र जंत्र तंत्र विद्या सब सिखा दि
 है राजा ने भ्राता दी और दीवाने सवार हो अपने घर
 को गया उहां चित्रकार को बुला सब अवस्था वहां की
 कही और कहा कि मैं इस तरह से राजा को बचन दे
 आया हूँ तू स्त्री का भेख बनाकर मेरे संग होले उसने
 कबूल किया और स्त्री भेख बन साध हो लिया दोनों
 सवार हो कर राजा के पास आये लोग महल में उसै प

र हाकर केलेगये दरमिया न एक कनात रेवे चली और
 उस तरफ कनात के उसे बैठाया राजा और लडवा
 और शिवान ये तीनों न नात के बाहर बैठे और उस
 ने कनात के अंदर से कहा कि कुवर को स्नान करवा
 कपड़े बदलवा चौका दिलाया एक पट्टा बिछवावे
 ठा और कुवर से कहा कि तुसावधान होकर बैठ और
 जो मैं मंत्र कहों सो तु कान देकर सुन बिभीषन वडास
 र बीरथा और दंगा करके रामचंद्र से जा मिला उसने रा
 वन का राज सब खराब किया और अपने कुल का ना
 स किया उसलाज से एक बरस तक सिर न उठाया और
 अपने किये का फल पाया कि सब कुल गवाया और
 भस्मासुर ने महादेव की तपस्या कर बरपाया और उन्हीं
 से बिसवास घात किया कि पारवती के लेने की इच्छा की
 और उसका भी फल उसने तुते पाया कि छनभ से जल
 के भस्म होगया और कुवर तुमि न दोही और बिसवास
 घाती कैयों हआ कि सोते हुये रोछे को तुने कैयों टक लाउ
 ने तेरा उपकार किया था तुने उसका बुरा विचार पर इ
 समें तेरा कुछ दोख नही है तेरे पिता का दोख है इस वा
 स्ते कि जैसा बीज बोवेंगे वैसा ही फल होगा यह तु

ने अपने पिता के पास से दुख पाया इतने ही बात सुनते-
 होकर सचेत हो बोल उठा तब राजा बोला है सुन द
 री तू सच कह कि तूने वह वन का जानवर क्यों कर पह
 चाना यह सुनकर उसने जवाब दिया कि राजा मैं अप
 ने पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रगट करूँ सुन जब मैं अप
 ने गुरू के पास पढ़ने जाती थी तब गुरू की अती सेवा कर
 ती थी गुरू ने प्रसन्न हो एक मंत्र बता दिया वह मंत्र मैंने सा
 धा तब से सरोसती मेरे मन में बसी है और जैसे मैंने रानी
 की जाँघ का तिल पहचाना वैसा ही वन के रोछ के भी जा
 ना ॥ यह सुनते ही राजा ने प्रसन्न हो परशुदामियान से
 दूर कर दिया और कहा कि तू सच सारद पुत्र है तेरे गुण को
 मैंने अब जाना यह कह राजा ने आधा राज उसे दिया
 और अपना मंत्री किया इतनी बात कह वह ब्राह्मण बो
 ला कि राजा वीर विक्रमाजीत इस श्लोक का यह अर्थ है
 यह कथा उस ब्राह्मण से सुनकर राजा वीर विक्रमाजीत
 ने हजार गाँव चर्त कर दिये ये बातें करके पुतली बोली कि
 सुन राजा भोज तुझ में इतना गुण कहाँ और इस जग
 में विक्रम समान राजा होना मुश्किल है मैंने तुझ से य
 ह सच बात कही और इस सिद्धासन के तू जाग नही उ

सदिनकी भी साइत यों हीं जाती रही राजा महल में दावि
लहुवा दूसरे दिन सुबह को उठा स्नान पूजा कर ध्यान ल
गा सिंहासन पास आखड़ा रहा और प्रधान को बुला क
र कहा कि मेरा जी चाहता है कि सिंहासन पर आज वैद्वे
हतर है कि दुष्टिया भ्रष्टा महत इस वक्त मुझे ख दो
दीवाने ने कहा महाराज आप तो वैद्वेगा पर ये पुतलियों
आप आप को रो रो में गी राजा ठठकरहा और

सुंदर वती सोलवीं पुतली बोली

सुन राजा मैं तुझसे विचार कर कथा का हवा ल कहती हूं
जैन नगरी में छतीस कौम और चार जात बसती थीं ए
क वहाँ का नगर सेठ जिसके यहाँ अति धन था और बड़ा
प्रतापी था नगर के लोगों को ब्यो हार करने के लिये बह
त माया देता लेता था जो कोई उसके पास अपना स्वारथ
विचार कर जाता था वह खाली फिर कर नहीं आता था
उसका एक बेठारतन से न नाम और बहुत सुंदर था और
रश्मि विद्यामान माता पिता की भर्त्ता में निस दिन र
हता उस सेठ के मन में आई कि कहीं अच्छी कन्या ठह
रे इसका व्याह कर दें ब्रह्मनों को बुला दे स देस में जाओ

और कह दिया जहां जहां अच्छी लड़की ठहरे वहां
 काटी का लेके तुम आओगे तो बहुत कुछ तुम्हें दूंगा और
 कुछ रुपये रखे को देकर बिदा किया ब्राह्मण ने दे स दे स
 दे दने गये॥ उनमें से एक ब्राह्मण ने समाचार पाया कि समु
 द्र पार एक सेठ है और उसकी बेटी बहुत सुंदर है उसे भी
 बर की तलाश है॥ यह सुनकर एक जहाज पर बैठ समु
 द्र पार गया वहां जा सेठ का दे काना पूछा उसके द्वार पर
 जा ठहरा और खबर की या कि उज्जर नगरी से एक ब
 रान वहां के सेठ का आया है॥ यह खबर सुन उस सेठ
 ने उसे बुलाया और दे उवत कर आसन दे बिठाया ब्राह्म
 ण आसिन दे कर बैठा सेठ ने पूछा कि सकार ज के लिये
 तुम आये हो सो कहो ब्राह्मण ने कहा हमारे सेठ ने मे
 जाहे लड़के के सादी के लिये और कह दिया है कि जहां
 कन्या अच्छी कुलीन की ठहरे वहां काटी का ले हमारे
 पास यह जो सेठ यह सुन कर बोला मेरी भी बेटी अच्छी
 थी कि पुत्री का ब्याह मैं कहों करूंगा पर भगवान ने धर व
 ठ संजोग बना दिया फिर कहा के तन दिन तुम यहां आ
 र म करो मैं भयना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा वह लड़
 के को देख ही का जा कर देगा॥ और तुम भी इस लड़की को

देखलो और वहां जाकर उस सेठ को कहो कि हम अपने
 भाखों देख आये हैं वह ब्राह्मन के तने दिनों वहां रह और
 उस कन्या को अपनी भाखों देख सेठ के ब्राह्मन को साथ
 ले उ जैन नगरी को फिर चला उस सेठ ने अपने पुरोहित से
 कह दिया कि ठीक देव्याह की जल दी कर आना यह दो
 नों वहां से चले जहाज पर चढ़ के तने दिनों के बाद उ जैन
 नगरी में आन पहुंचे ब्राह्मन ने सेठ को खबर दी या कि
 मैं कन्या ठहरा आया हूं और उस सेठ का पुरोहित साथ
 लाया हूं सेठ ने उस ब्राह्मन को बुलाया और लउके को
 अपने पास बैठा देख ला दिया ब्राह्मन ने देख उसे तिलक
 कर दिया और हां थ जो उ अपने सेठ के तरफ से विनती क
 र कहा कि आप जल्दी से बरात लेकर आइये हम जाकर
 वहां तैयारी करते हैं फिर सेठ से खबर हो वह ब्राह्मन अ
 पने मुल्क को गया ॥ वहां जा सेठ से यहाँ का सब समाचा
 र कहा सेठ सुनकर व्याह का सब सामान करने लगा और
 १५ पर यह सेठ व्याह की तैयारी में हुवा नकार खाने में नौब
 त बजने लगी और घर में मंगलाचार होने लगे तरह तरह की
 तैयारियाँ कि जेतने कुनवे के लोग थे ओन्हीं को नये नये
 जोड़े पहना अपने साथ ले जाने को मुकुर किया नाच राग ।

रंग खुशी से होने लगे । अंतरह से तमा मशर का जिया फ
त कर ते कर ते बरात की तैयारी करते करते व्याह के दिन नज
दीक प हुं चा भ्रज व से कि जाना दू या फिर करने लगा कि
भ्रसा थोड़ा रहा है समुद्र पार हम इतने दिनों में क्यों कर
जा सकेंगे यह बात सुन के उसके सब भाई बंधु भ्रदेश
करने लगे और खुशी तमा मशर की भूल गये इसमें एक
शरस्व ने भ्रान कर सेठ से कहा की इस बर कन्या की प्रा
रब्ध होगी तो इस लग्न में विवाह होगा और मैं एक जतन
बताता हूं तुम उसकी फिर करे भगवान चाहे तो बन जा
यत व उसने हाँ थ जोड़ कर कहा कि भाई ॥ या तो भगवा
न के हाथ हमारी लज्जा है या तेरे हाथ जिसमें हमारा का
म बने सो तु व ह ॥ तब वह कहने लगा कई एक महीने हुए
हैं कि एक बटई उड़न खटोला बना कर राजा के पास ले
आया था और कहता था कि इस खटोले का यह सुभाव
है कि इस पर बैठ कर जहाँ तुम्हारी इच्छा हो तहा जाओ
यह प हुं चा वेगा राजा ने सुन कर उसको दो लाख रूपये दि
ये और खटोला लिया अब वह राजा के दर में है तुम जा
ओ और राजा से मागो जहाँ तुम्हें राजा दे तो तुम्हारा सब
काम सिद्ध हो * यह सुन कर वह खुशी हो कर जल्द राजा

१ परगया और द्वारपाल से कहा मेरी खबर महाराज से करते
 डेवडी शरण ने दीवान से जाकर भर्ज की या कि नगर में द्वार
 पर हाजिर है आपकी आज्ञा हो तो राजा के दरशन को आवे
 दीवान ने कहा बुला लो डेवडी शरण आकर उसे ले गये उसने
 जाकर दीवान को दंडवत किया और विनती कर कहने लगा
 कि महाराज के दरशन को मैं आया हूँ और अपना बड़ा ज़रू
 र काम लाया है॥ वह सुनकर मंत्री ने कहा कि राजा महल में
 हैं सेठ यह सुन भूत उदास हुआ कहा मेरा बड़ा कारज था कि
 लंडके की शादी है और जाना समुद्र पार चार दिन बाकी रह
 गये हैं इसमें जो नपुंसक तो मेरे कुल की हसी होगी वनि
 से यह बात सुनकर दीवान ने राजा से जाकर हकीकत
 जाहिर किया राजा ने भर्जा दिया कि वह उड़न खटोला उसे
 ले जाकर दो और जो कुछ वह कहें सब उसकी नैयारी कर दो
 और किसी तरह उसके काम में विघन न होने पावे प्रधान ने
 खटोला मगावा सेठ को दिया और कहा जो कुछ सामान तु
 शेरदार कार हो सो कह महाराज का यों हुक्म है तब सेठ ने क
 हा महाराज की दया से सब कुछ है मरी यही ज़रूर थी और
 आप के कृपा से सब काम सिद्ध है महाजन खटोला ले आ
 घने घर को आया ब्रह्मन को बुलाकर साथ लिया लंडका और

र आप उस पर बैठ ससुंदर चला कुछ एक भर्से मेव हाँ जा
 पहुँचा और वहाँ जाकर देखा तो मंगला चार सारे नगर में
 हो रहा है और सब राह देख रहे हैं जब लोगों ने देखा तो हा
 थो हाथ ले गये जाकर एक हवेली में उतरा और अपने सेठ
 को खबर दी या कि तुमारा समधी वरात ले आप पहुँचा है व
 ह सेठ भी वहाँ से उसको मुलाकात को आप आया और दे
 खकर इन तीन आदिमियों को अपने जी मेव बहुत पछता
 या और पूछा क्या सब है जो तुम इस्तरह से आये हो तब
 उसने सब वरग और सब अवस्था अपने सुनाई सुनते
 ही उस सेठ ने अपने गुमाशते से कहा कि कल ब्याह है औ
 र आज वरात की तैयारी तुम जल्दी से कर दो कि जिसे
 शहर के लोग न हसै उसने सब तयारी बात कहते ही कर
 दिया दूसरे दिन वरात ले कर यह सेठ ब्याह ने गया औ
 र बेटे का ब्याह किया उस सेठ ने हाँथी घोड़े जोड़े पालकी
 मियाँ ने जडा उगहने और बहुत सा कुछ दान रहे जदि
 या यह वहाँ से लेकर जहाज में रखवा दिया आप सवा
 र हो अपने शहर में आया और फिर नये सिर शादी रचा
 ई ब्राह्मनो को बहुत कुछ दान दिया और कुछ जवाहिरों
 शाक और बाजे तो हफा था लौ मे रख और चार घोड़े खासे ले

का राजा के नजर को बला और वह खडो ला जो ले गया
 था वह भी फेर देने जब दारे पर पहुंचा द्वारपालों से कहा
 कि महाराज को मेरी खबर दो राजा ने खबर सुनते ही बुला
 लिया और जो कुछ ले गया था जाकर सब राजा को भेंट
 किया और कहा महाराज आप के पुन्य पर तो ये सब का
 म भ्रष्ट होवा अब इस दास की भेंट आप को कबूल कर
 दी होगी राहा सुनकर बोला कि मेरा यह सुभा वह कि दि
 हुई चीज मे फेर न हो लेता यह खटोला मे ने तु श्री को दि
 या और जो कुछ तो हफालाया है यह सब तो हफे और
 रला खपये अपने खजाने से और हमने तेरे बेटे को दि
 ये इस वास्ते कि उसकी शादी हुई है गरज यह सब कुछ
 नायत करके पाने दे उसै रख्यंत किया यह प्रसन्न हो अप
 ने घर को आया इतनी बात कह वह पुतली बोली सुन ए
 जा भोज राजा बीर विक्र मा जीत की बराबरी इन्द्र भी न
 हो कर सका था और तू तो किस गिनती में है जो तूने अप
 नाम न बढ़ाया इससे तू बाज आ इन बातों मे वह दिन भी गु
 जर गया राजा महल मे दाखिल हुवा रात जिस तिसतर
 ह से गुजरी फिर जब सुबह हुई राजा सिंहासन के बैठ
 ने का इरादा करव हां आया कि ॥

सत्यावती सतरहवीं पुतली बोली

मुनराजा भोज एक दिन गला बीर विक्रमाजीत सभा में
 नंदसमान बैठा था और गंधर्व मधुर मधुर सुरों से गारहे
 थे और पातुर नृत्य कर भाववतार होँ था कही भाट खंड
 होज सब रनन कर रहे थे किसी तरफ ब्राह्मन पाठ कर रहे
 थे और किसी तरफ मध्व भाष समें जुद्ध कर रहे थे और
 किसी तरफ चीते कुत्ते शियाह गोशत हरन में ठे मीर शि
 कार लिये खंडे थे और जेतनी तैयारी राजा यों की चाहि
 ये सब थी सभा में एक से एक पंडित चतुर और वीर बैठे
 था उनमें राजा इन्द्र के तरह बैठा था और सब सामान इ
 न्द्र के आखाटे का सा था इसमें राजाने अपने चित में
 बीचार कर पंडितों से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनो
 कि सर्ग में राजा इन्द्र जो है सो मृत लोक का सब मम जा
 नता है कहो कि पाताल का राजा कौवन है और किस ज
 गह वह रहता है तब उनमें से एक पंडित बोला कि महा
 राज पाताल का राजा से सनाग है जिस्को हजार फ
 न है और पद्मानी एनी उसके यहाँ है और कभी सोग
 से तोप उसको नहीं व्यापता आनन्द से अचल राजव
 हो का वह करता है और जैसा वह राजा सुखी है वैसा

सम्राट् को नही है यह सनकर राजा को उसके मिलने की
 उच्छाहई वे तालों को बुलाकर कहा कि मेरी तई पाताल
 को ले चलो मैं से सनाग के दर्शन को जा उंगा वे ताल उठ
 कर पाताल को ले गये और से सनाग का दूर से मंदिर देख
 दिया राजा ने दूर से देख वे तालों को बिदा किया और आ
 प मंदिर को चला जब जाकर उसके पास पहुचा देखे तो व
 ह के चन का मंदिर रत्न जड़े हुये जगमगारहा है और ऐसी
 जोत है उसकी कि जिसे रानी के सेवा यरंतर दिन कु
 छ नहीं मालूम होता द्वार द्वार पर कवल के फूलों की बंद
 नवारे बधी हुई है और घर घर आने न हो रहे हैं राजा कु
 छ डरता डरता कुछ खुशी खुशी द्वार पर जा खड़ा हुवा
 और वहाँ के द्वार वालों से दंडवत कर कहा महाराज को ह
 मा स समाचार पहुचा था कहो कि मृत लोक से एक रा
 जा आया के दर्शन को आया है द्वारपाल राजा को खबर
 दे ने गया और यह द्वार पर खड़ा हुवा कहता था धन्य
 भाग मेरे हैं कि मैं यहाँ तक आन पहुचा हूँ और चारों त
 रफ से राम कृष्ण राम कृष्ण की आवाज आती थी और
 राजा के मंदिर से वेद की धुन कान पड़ती थी जब द्वार पा
 ल राजा के सनमुख जा प्रणाम कर हाँथ जोड़ खड़ा हुआ

राजाने उसकी ओर दृष्टि किया उसने कहा महाराज एक
 नुषा द्वारे पर खड़ा है और कहता है मृत लोक से आया है द्वा
 रे को हजारां दंड वतें करता है बल्कि जिसको देखता है ओ
 र आपके दर्शन की अभिलाषा है जिसे निहायत वैचै
 न है यह बात सुनते ही शेषनाग उठके द्वारे पर आया
 राजाने देखते ही अष्टांग प्रणाम किया और उसने ह
 सकर आसीस दीया और पुष्पा की तुम्हारा नाम क्या
 है और क्यों न सादे सहे राजाने हाथ जोड़ कर कहा कि
 स्वामी विक्रम भुपाल मेरा नाम है और मृत लोक का रा
 जा है आपके चरन दर्शन की मुझे इच्छा थी सो मेरे म
 न की इच्छा पूरी हुई आज मुझे कठो डयज्ञ का फल हुआ
 और कंडो डोदान किये का पुन्य और धन्य भाग मेरे जो
 आपके चरन कमल के दर्शन हुए ॥ विक्रम का नाम सु
 नते ही शेषनाग बोला और हाथ पकड़के अपने मका
 न में ले गया अच्छी जगह बैठा से मकुशल पुष्प राजा
 ने कहा महाराज के दर्शन से सब आनंद है फिर कहा
 तुम वि सकारण यहाँ आये हो और आने हुए पंथ में
 तुमने बहुत कष्ट पाया होगा विक्रम बोला फिनिनाथ
 मैंने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दर्शन किये से बिसरा

फिर राजे के रहने के लिये एक अच्छा स्थान दिया और बहुत
 से लोग टहल करने को और उन लोग से कह दिया कि मेरी
 सेवा से भी तुम अधिक से बाराजा की जानना इस तरह पाँच
 सात दिन राजा विक्रमाजी तब हो रहा बाद उस के एक दिन
 हाँथ जोड़ कर कहा पृथ्वीनाथ मुझे विदा कीजिये तो मैं
 अपने नगर में जाऊँ और वहाँ बैठ आपका गुन गाऊँ तब
 शशने हस कर कहा कि अब राजा तुम्हें घर जाने की इच्छा
 हुआ भला हम तुम्हें कुछ प्रसाद देता हूँ तुम लेते जाओ य
 ह कह चार लक्ष लमगा राजा को दिया और उसका गुन
 कहने लगा एकर लकाय हसुभाव है कि जितना गहना
 चाहोगे सो यह तुम्हें देगा और छन भर देता बल्लभ नक
 रगा और दूसरे नक का यह सुभाव है कि हाँथो घोड़े पाल
 की जितनी तुम मागोगे इतनी तुम से सेवा भोगे और ती
 सरे लक्ष लकाय हगुन है कि जितना लक्ष्मी जाचोगे उ
 तनी वह देगा और चौथे लकाय हसुभाव था हरमजन
 और सत कर्म करने की जितनी इच्छा रखोगे उतनी यह
 पूरी करेगा इस तरह चारों लक्ष लकी गुन राजा समझा
 कर कहा और विदा किया राजा हाँथ जोड़ कर खड़ा
 हो कहने लगा महाराज मैं आपके गुन का उपमान ही

देसकता पर आप मुझे दास समझ कर कृपा कर देंगा ॥
 यह कह कर राजा रसत ह आया और वैताल को बुला स
 वार हो कर अपने नगर आया जब कोस एक नगर रह
 गया तब वैताल को छोड़ आया राजा पा आया आया शहर
 को चला देखता क्या है कि एक भूखा दुबला ब्राह्मण चला
 आता है जब वह पास आया यह उसने कहा कि मैं भूखा हूँ
 कुछ भोजन भिक्षा दे जिये जो मैं जाकर अपने कुटुंब को पा
 लूँ सुनते ही चिंता कर कहने लगा अपने मन में कि इस ब्रा
 ह्मण को इसमें से एक लभ्य लूँ यह बीचार कर ब्राह्मण
 से कहा कि देवता मेरे पास चार रत्न हैं और चारों के यह
 गुण हैं कि जो तू चाहे इनमें से वह मैं तुझे दूँ ब्राह्मण ने क
 हा पहले मैं अपने घर हो आऊँ तब तुम से कहूँ यह कह
 कर ब्राह्मण अपने घर को गया और राजा वहाँ धुड़ा रहा
 वह घर पर जाकर अपनी स्त्री और पुत्र की बह से कहने
 लगा कि उन चारों लभ्य का यह व्यवहार है उन तीनों में
 से उन्हीं ब्राह्मणी को ली कि स्वामी तुम वह लभ्य लो
 जो लक्ष्मी देव है और सियाल मन से उठा दो क्योंकि ल
 क्ष्मी मेरी है तै है सहाय और लक्ष्मी से सब होते हैं
 मैं ज्ञान नेम पुन्य दान यह सब लक्ष्मी से

होता है इससे तुम और तरफ चित्त मत डोलाओ जाकर
 लक्ष्मी लेओओ ॥ फिर उसका पुत्र बोला कि लक्ष्मी कि
 सकाम की है जो राधा साधन न हो और जो सामान
 हो तो राजा कहाँ और सब कोई सिर नवावे सरंजाम हो
 तो दुर्जन उरें और संसार में शोभा पाए लक्ष्मी हुई और
 जगह में शोभा न पाई तो उस पुरुष का जन्म लेना निर्य
 ल है तुम वह लभ्य लो जो संसार में सोभा दे ॥ इतने में उ
 सके बेटे की वह बोली की तुम वह लभ्य लो जो आभू
 यन दे कि गहने के पहिनने से स्त्री अप्सरा मभ्य लम हो
 जो राजा भी पहने तो अती सुंदरी देखे और विपत्तय
 उ तो बच बच वह त साधन ले और जितना मागोगे उतना
 उ स्याओ और केतना लाओगे पुरुष हमारा बावला
 है और सास बुढ़ी समुझती न हीं ससुर तुम सजानो
 हो और तुम से मैं कहती हूँ वह लभ्य लो जो
 मैंने तुम से कहा है उससे तुम सब कुछ पाओगे ॥
 यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि तुम तीनों बोरये हो और
 मेरी इच्छा सिवाय धर्म के और किसी पर नहीं क्यों
 कि धर्म से संसार में आदमी राज पाता है और धर्म से
 सब काम सिद्ध होते हैं और धर्म से जग

ता है और धर्म करने से देखो कि राजा बली ने पाताल का
 जपाया और धर्म से राजा इंद्र ने जप में जाइंदासन पाया
 और धर्म से यह काया अमर हो जाता है और गर्भ वास छुट
 जाता है इससे तुम मेरा धर्म मत डोलाओ और मैं भी अपना स
 तन छोड़ूंगा इससे जो हो सो हो रही तरह चारों ने चार मत की
 बातें एक को एक ने नमानी तब वह ब्राह्मण फिर कर राजा के
 पास आया और सब अहवाल सुनाया कहा कि महाराज मैं
 घर तो गया पर बात कुछ बनन आई अपनी अपनी सब को
 कहता है और हम चारों की चार मत है और आपने यहाँ
 खड़े होकर हमारे लिये दुख पाया पर हमारा मत बनन आ
 या यह सुन राजा ने कहा महाराज तुम अपने चित में निरास
 होकर उस मत हो चारों लक्षण तुम अपने घर ले जाओ
 मैं तुम्हें देता हूँ क्योंकि जिसमें तुम्हारा कुटुंब भी प्रसन्न हो
 और तुम भी हमारे इसी में कल्याण है ॥ निदान राजा ने चा
 रो लक्षण खुशी हो कर ब्राह्मण को दिया ब्राह्मण ले कर अप
 नी सदेकर अपने घर को गया सुन राजा भोज राजा वीर वि
 क्रमाजीत भी अपने मंदिर को आया और देते दान कुछ
 चित में बेल न लाया ॥ ऐसा दानी इस कलजुग में कौन है
 जो उसके समान दान दे वह इस आसन पर बैठे और नहीं

तो न के बासपावे भ्रमों त भ्रमने मनमें मत उकता थीर
जधर और आगे कथा सुन नो जोग जाने साहस और दान
किया है यह बात पुतली की सुन कर राजा सिंहासन के पा
से उठ कर घर में आया सारा रात सोव और चित में गदाई
सुवह होते ही स्नान पूजा कर के बैठा इतने में हीवान प्रधान
आकर हाजिर हाजिर हुए सब को साथ ले सिंहासन के पास
जा बोले कियों उठा कर धरे कि॥

रूपरेखा आठारवीं पुतली हां हां कर उठी
और कहा कि राजा मुझ पर दया कर यह ले मेरी बात सुन पी
छे जो इच्छा में आवे सो करत बराजा बोला तू कह जो तेरे चि
त में है वह पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज एक दिन हो
स न्यासी आपस में जोग की रीत से सगड़ते थे न वह उससे जी
त सकता था और न यह उससे॥ आखिर को इस तरह सग
ड़ते सगड़ते बीर विक्रमाजी तपास आये और कहा कि म
हाराज हम दोनो विवाही हैं इसका अपन्याव चुकावें आप
धर्मोत्तम राजा हैं यह समुझ कर हम आये हैं राजा ने कहा मु
झसे समझा कर तुम जाहिर करो कि किस बात का सगड़ा
है उनमें से एक जती बोला महाराज मैं कहता हूँ कि मन के
बस में जान है और मन के बस में आत्मा है और मन के बस में

देह है और माया मोह पाप पुन्य ये भी सब मन से हैं और जे
तनी बातें हैं यह मन के लिये हैं और मन की इच्छा से सब होता
है नर जा है तमाम शरीर का और जे तन भ्रम है सो मन के आ
धीन है मन उन से जो काम लेता है सो करते हैं एक दो नों में से यह
जब कह चुका तब दुसरा बोला सुनो राजा जो मैं कहूँ ज्ञान जो है य
ही राजा है देह का और मन जो है उसके तावेदार है और जो कदा
चित मन भ्रमता भ्रम ल किया चाहै तो ज्ञान से उसका कुछ बस
नहीं चलता मन के काबू में है इन्द्रियाँ वह चाहें तो उन से कर्म कर
वावै पर ज्ञान करने न हों देता जब ज्ञान आता है तब मन को मार क
र निकाल देता है और पांचो इन्द्रियाँ भी ज्ञान के खड्ग से कटी हुई
हैं जब मनुष्य से मन और इन्द्रियों का विकार छटा निर्मय हुआ सं
सार के मै से जोग सिद्ध हुआ दो नों की यह बातें सुन कर राजा
बोला कि तुमने जो कहा सो मैं सब समझा इसका उत्तर विचा
र कर दूंगा के तनी बातें राजा ने कहा कि सुनो योगेस्वर चा
र वस्तु एक साथ रहो हैं भूमी जल वायु और अग्नि चारों से
शरीर है मन इन का सदा रहै मन की मति से जो ये चलें तो घ
डी पहर में ना लख दे पर उन पर ज्ञान बली है मन का वेकार हो
नै न हों देता और जो न हों है ज्ञानी उन की काया विन सने न
हो पाती वे इस संसार में भ्रमर हैं और जब तक जोगी ज्ञान से

से मन को न जीने तब तक उसका जोग सिद्ध न हो होता *
 वह बातें राजा को जोगी ने सुन भयने मन का हठ छोड़
 डिया एक जोगी ने प्रसन्न हो कर राजा को एक खड्ग दिया
 का एक टुकड़ा दे कर कहा कि इसमें यह गुन है जो इससे तुम
 दिन को लिखोगे सो राजा को सब प्रतं ह दे खोगे यह कह
 कर जोगी हो नो चले गये राजा ने भयने जी में भय र
 जमाना कि यह बात कि सतरह से सत्य होगी तब राजा ने
 एक मंदिर खाली करवाया और सड़वाय धोलवाय लिप
 वाय भके ले उस घर में जा विष्टो ना विष्ट वा के वाड़ा बंद कर
 दीवाल में मूर्तें लिखने लगा पहले कृष्ण की मूर्त लि
 खी पीछे सरस्वती की फिर देवताओं की इतने में सो सड़ई
 और एक बार जै जै शब्द होने लगा जो जो देवता लिखे थे सो
 साफ देखा देखने हो राजा मोहित हो गया और जो जो ब
 तें वै भ्यापु समझने थे राजा सब सुनता था और देखता था
 भैसे कुछ कह नहीं सकता था इतने में प्रभात हुआ और दे
 वताओं ने उठ उठ भयनी भयनी रह लिया और वह पुन
 ली की पुन लियो रह गई फिर राजा ने इससे ताक शिवार में
 हाथी घोड़े पाल की रथ और फौज यह सब कुछ लिखा कि
 र जब शाम हुई तो सब वे जाग्रह रहये राजा देखे स्व भयना

जो मे प्रसन्न होता था और गीत को याद करता था कि मु
 से नरूप दार थदे गया जब भीरु इतने फिर चित्रा का चित्र
 रह गया फिर तीसरे दिन राजा ने यहिले एक मिरदंगी लि
 खा फिर गंधर्व लिखा पुन अपसरायें खैंचीं तालबीन रुखा
 व तंबूर मुह चंग सितार पिनाक बांसुरी करताल अल
 ग झांझ एक एक साज एक एक मुरतिके हांथ देदे लि
 खा जब संध्या का समय हुआ तब यहिले एक शब्द हुआ
 और गंधर्व संगीत शास्त्र की रीत से गाने लगे और सब
 साज सुरों के साथ मिल मिल बाजे लगे और वे अपस
 रायें नृत्य करने लगीं और भाव बताने इस तरह से राजा
 हमेशा अनन्द से रात काटता था और दिन को ये ही
 लिखता था इसी तरह से रात दिन वहां बितीत करता
 और रनवास में नहीं जाता था रातियों के जी में चिंता हुई
 कि राजा किस कारण से महल में नहीं आता और जुहू में
 दर में रहता है इसका क्या सबब है यह मालूम किया चा
 हिये यों रातियों आपुस में मता दान राजा को खोज ले
 ने को ते पार हुई और उनमें से चार रातियों आपुस में बि
 थार कर्क कहने लगीं हमारा जोना भी थिरकार है कि
 राजा हमें छोड़ वहां बैठा रहा है और हम यहाँ बिरह से

दुख पाती हैं ये तने दिनों तो हमने दुख भरा पर अब नि
 नभ भी बिना प्रीतम रहने लगे जा जायों विचार करत
 को सवार हो जिस यंदि में राजा बैठा को तु क देख रहा था
 यह भी वहाँ जाय हूँ ची हाय जो डबिनती कर कहने लगी
 कि महाराज हमसे क्या अपराध हुआ है जो आप हमारी
 सुरत बिसराय यहाँ बैठा रहे हैं ॥ यह सुन राजा हसकर बो
 ला सुनो सुन्दरियो तुम्हें किसने सताया और किस कारण
 तुम यहाँ आई क्यो तुम्हें किसीने कुछ कहा है कि तुम्हारा
 मुख मलीन हो रहा है राजा की यह बात सुन सिर निहडते
 ओज्झों ने कहा स्वामी जो बात है सो आप के सनमुख हम
 प्रकाश करती हैं राजा ने कहा अच्छा कहो तब उनमें से
 एक रानी जो चतुर थी सो बोली महाराज हम अब ला हैं
 और कभी कुछ न ही देखा सुख ही में उमर गवाई अब
 विरह मे काम हमें निस दिन दहै है सो यह दुख हम तुम्हारे
 सेवा किससे कहें इस विथा से हमें क्या और आपने
 हमसे बचन किया था कि हम तुम्हें फिर न देंगे सो ये तनी
 मुदत से तुम्हने हमें बिसरा दिया इतने दिनों तक
 मतरह हुवा हमने बियोग भरा ॥ अब हम बलवही
 मतरह की बातें करते हुए सुबह होगई और वे सब मु

ते फिर न कशरार होवा ही गई तव रानियो ने कहा कि
 महाराज जब से तुम्हारे भविष्य का है इ स्वसे सब रानि
 वास की होर ही है और उन्हरानियो का पाप आप को ल
 गता है क्यों कि सब आप हो के आसरे से हैं सुन सुन ये वा
 ते राजा हस कर बोला कि अब जी मैं तुम मसन हो जा तु
 म्क हो सोह मकर और जो मांगो सोह मदे रानियो स्व
 र्ण हो कर बोली महाराज हमारे मांगने से जो आप दें तो
 हम मांगें राजा ने कहा जो मांगो सोह मदे रानियो
 ने कहा यह जो खडिया आप के हाथ में है सोह मदे सु
 नते ही राजा ने आनन्द से हवा ले किया रानियो ने लसि
 या और छोड़ा कवी फिर सवार हो हो अपने अपने म
 हल में आई और राजा भी आकर दाखिल हुआ आप
 ना राज का जकरने लगा इतनी कथा कह कर परे खा पु
 तली बोली कि मुझ राजा भोज ऐसा पदार्थ देते राजा
 ने बिलंबन किया और ऐसी विद्या त क हो पावेगा ॥
 और पावेगा तो तुम से दिया न जावेगा इस मदेश आप
 सन पर वर देने का तू दावा छोड़ दे मे तुम से मच कहती
 ह तू दावा न जा और तू इस जोग न ही वह भी सा इत
 नु जर गई राजा उठ कर वहाँ से महल में दाखिल हुआ

तमा मरा त सोच मे गुलार गई सुबह को उठ लान पूजा
सेफ रागत कर फिर उसी मकान में आया सिंह हासन के
पास खड़ा हो चाहे कि पांव उठा कर धरे इस में

तार उन्नीसवीं पुतली

खिल खिल कर हसी और कहने लगी कि ऐराजा अज्ञा
तो बावले पहले मेरी बात सुन पोछे और विचार कर जो
तू इस सिंह हासन पर चरगा रखेगा तो अपराधी होगा मु
झ पर पग दिया थारा जा विक्रम जीतने तूने अपने जी
में क्या विचार है जो यह इरादा करके आया है मेरा हृदय
जो है कंवल है और मधुकर बीर विक्रम जीत था तूंगा बर
का किड़ा मुझे पर किस तरह पांवर खेगा ॥ राजा बोला सु
न बाला तूने मुझे गोबर का किड़ा किस तरह जाना पुतली
बोली सुन राजा एक दिन की कथा एक ब्राह्मन भामुद्रिक
नाम सा मुद्रिक खूब पढ़ा हवा था बन में चला जाता था उस
के बराबर दुनयाँ में कोई और पंडित न था अनेक अनेक
भेद विद्या के जानता था उसने दरिया कू किया कि इस र
से कोई आदमी गया है जब उसके निशान पांवर के देखे
तो उसमें उद्देखा और कंवल का चिन्ह नज़र आया तब उ
सने अपने जी में विचार कि कोई राजा नंगे पांवर इस राह से

पुजरा है उसको देखा चाहिये कि कहाँ गया है यह बात बिना
 रकर उलू पा योंवा निशा देखता हुआ जब कोस भर पर
 जा पहुँचा तो उस वन में देखा कि एक आदमी दर एत्र से लक
 डियाँ तोर कर गढ़ा बांध रहा है ब्राह्मण उस के पास जा कर ख
 डी दुआ भ्यो पूछा कि तू यहाँ इस वन में कब से आया है यह
 बोला कि महाराज मैं दो घड़ी एत रह से आया हूँ तब ब्राह्मण
 ने पूछा कि तने किसी को इस राह से जाते देखा है कि न हाँ उन्ने
 कहा कि मैं जिस समे से आया हूँ इस वन में मनुष्य तो निक
 क्या है कोश्वंछो भी नजर नही आया फिर उस ब्राह्मण ने क
 हा दे खु तेरा पांव उसने आगे रख दिया भ्यो ब्राह्मण ने सब
 चिन्ह देखे देख कर भयने जी से सोचने लगा कि यह सच कहा
 है फिर पूछा उन्ने कि के तने दिनों से तू यह काम करता है उस
 ने कहा जब से मैंने होश संभाला है तब से यह उदम क
 र्के खाता हूँ भ्यो जीता हूँ और राजा बिर विक्रमा जीत के
 नगर में सदा रहता हूँ ब्राह्मण ने पूछा तब हुत दुख पाता है व
 ह बोला महाराज यह भगवान की इच्छा है कि किसी को
 हाथी पर चढ़ावे किसी को पैदल फिरावे किसी को धन दौल
 त विजय मार्ग दे किसी को भी खुश गावे कोई सुख से न करे

कोई दुख मे बौए रह है भाग्यन को गत नहों जा नो जाते ॥
 कि कौन रूप किसमें रचा है और जो कर्म लिख दिया है सो म
 न्य को मुगत ना होता है दुख सुख उसके हाथ हैं ॥ संमें कि
 सो का कुछ जोर न हीं चलता ॥ उससे यह बतें सुन और वह
 चिन्ह देख ब्राह्मन ने अपने जो में अचरज माना कहा कि मैं न
 व री में मन से विद्या पढी थी सो मेरा अब वृथा गया और सा
 मुद्रक में जो विधि लिखी है पुर्व के लक्षण देखने की सो मठ
 ठ हरी और यह उमर अपनी हमने बेकायदा गवाई यह क
 हमन में मलीन हो विचार करता राजा के पास चला कि जा क
 उसका भी पांव देख कि उसमें भी निशान है या नही और जो
 लक्षण पोयी प्रमाने न मिलेगा तो सब प्रीतियों का उल्ला
 स त्यागी हो तीर्थ यात्रा को चला जाऊंगा फिर संसार से कु
 छ अर्थ न रखेगा क्योंकि इतनी मुद्रत की मेहनत मठ कर्म
 के पीछे गवाई तो आगे संसार में क्या फल मिलेगा उससे भ
 गवत भजन करना अच्छा है इसलिये कि स्वारथ न हो तो ग
 र मार थके होगा ॥ यों विचार करता हुआ राजा के पास जा प
 हुंवा राजा को आसास दिया राजा ने देव वत कर कहा ब्रा
 ह्मन देवता तुम इतने मन मलीन क्यों हो क्या इस मन मनु
 मारे उपजा है मुझसे कहो ब्राह्मन ने कहा राजा तुम यह

अपना चरण मुझे देखला ओ जो मेरे चित का संदेह जाय ॥
 राजाने अपना पांव देखला था और उसने उसे कुछ ललचन
 नपाया यह देख सिस नवाय चुप हो रहा और अपने जी में क
 हने लगा कि यह पोथियां जला संसार को त्याग कर वैराग ले
 दे सरे सफिर ये यह तो अपने जी में विचार कर रहा था राजाने
 कहा पंडित तुम्हा को धकर सिर डुलाय पक्ताय चुप हो रहा है
 अपने मन की बात मुझ से कह कि तुने अपने मन में क्या ठ
 नी है ब्राह्मन बोला सुनो महाराज मेरे पास सामुद्रक पोथी है
 बारह बस में ने पढ़ कर याद किया सो मेहनत मेरी निरफलाग
 सवा स्त संसार में मेरी जो उदास हवा है ॥ राजाने हसकर क
 हा कि यह तुमने प्रतल क्यों कर देखा वह बोला महाराज
 मैंने बड़ा दुखी देखा कि उसके पांव में उड़ रहा और कवल था
 उसकी रोजी यह थी कि लकड़ी बन से लाता था और बेच
 खाता वह देख कर मैंने जो पांव तेरा देखा तो कोई अच्छा
 ललचन नपाया और तू राज सारे नगर का कर्ता है इस से मेरे
 जी को क्रोध हुआ है अथ जला दे सं त्याग करेगा ॥ राजा
 ने कहा हे ब्राह्मन सुन मैं तुझे बुझा कर कहता हूं कि तू
 साध कर तुझे देख लाता हूं तब तेरा जी पतियावे जा
 किसी के ललचन उप होने हैं और किसी के प्रगट ॥ ब्राह्म

न कहामें कि सत रहसे जानें राजाने छरी मगवात लुपकी
 वालची ललन दिखला दिया ब्राह्मने देखा कि कैवल
 और उदरेवा हे देव कर उसके जीको संतोश हुआ कहा
 एविप्र रसी विद्यापटी हुई किस काम आती है कि जिस
 के सब भेद मालूम न होवें सतरह के लसन देखा ब्राह्मन
 को आसीस दे अपने घर को गया ॥ इतना कि स्था
 कह पुतली बोली कि सुन राजा भो जकबतें रसजोग हुआ
 जो सिंह सन पर बैठने की इच्छा कर्ता है और जो रतना सा
 हस कर सो इस सिंह सन पर बैठे नाम धर्म अस आदमी के
 जाने से न हों जाता जैसा फूल न हीर हता और उसकी सु
 गंध आनर में रह जाती है यह सुन कर राजा को कुछ चेत
 हुआ कहने लगा यह संसार थिरत ही जैसी तरवार की ध्वा
 न है वैसी ही दुनया की गत है जिस तरह चंद्र सुरज आते जा
 ते हैं उसी तरह मनुष्य का जितना मरने जैसे कोई सपने में
 को नुंक देखा ता है वसा ही जग का रूप नजर आता है और
 मनुष्य देह धरके आगे दुख भोग करे है पर सुख यह है जो
 हर भजन हो इतना जान राजा अपने नी में विचार वहां से उ
 ठ अपने मन्दिर में गया ॥ जों तो काही प्रभात होते ही
 फिर वहां से आन कर को नूर हुआ एतलियों से पुष्टा आ

बैसा कहें तुन रास से कहो ॥ तब ॥

चंद्र जोती वो सवों पुतली बोली

महाराज मेसम साके कथा भाषके भागे कहती हैं एकरि नर
जाबीर बिक्रमाजी तने खुश होकर रासमंडला की प्रधान को भ
शा दिया कि यह कातिवधर्म मही ना है ॥ समे कुछ हरे काम ज
न मन लगा के किया चाहिये नर पुनो को दाकुर की लिला करो प्र
धान ने राजा को भजाया परे सदे सके राजा और पंडितो को ने
वता भेज बुलाया और जेतने नगर के जोगी ये सब को खबर देत
लव किया और जेतने देवता धे मंत्रों से आवाहन कर के निरसा
या रास होने लगा चारो ओर से जै जै शब्द निकलने लगा और
राजा एक एक का शिर चार मनुहार कर कर फूल माल ठाकु
र की प्रशार देने लगा देखा राजा ने सब देवता आये न चंद्रमा
नहीं आये ॥ यह अपने जी मे बीचार बैठा रापर सवार हो धं
इमा लोक को गय वहां जासन मुख होइ उवत किया और हाय
जो उकर कहा स्वामी मेस कथा अपराध है जो आपने कृपान की स
बने मेरे भाग पर कृपा की है तुमारे विन मेरा काम अधुरा है अब विजे
को जिये और काम मेरा सुधारि ये आप को धर्म होगा मुसे
आप के रूप से संसार में अस अति अंत मिलेगा जो

कहा चित आपर समें बिलंब कि जिये जाते मे हत्य
 मा तब बंध माने हस कर को मलम धुर चवन से कहा राजा
 मे तुम से सत्य कर कहता है तु अपने जो मे उदा समत हो मे
 र जाने से संसार में अंधकार हो जायगा ॥ इस लिये मे राजा
 न बने ता तु से अभिलाषा थी मेरे दर्शन की सो तेरी इ
 च्छा तु जीने का काम सुफल होगा तेजा अपने नगर में जो
 काम तेने आरंभ किया है सो पुरनकर ॥ इस तर हसे राजा
 को समझा अमृत दे बिदा किया राजाने सिर चढा ले लि
 या और दे उवत कर अपने नगर को चलार स्ते मे देखा कि
 जम के दो दूत एक ब्राह्मन का आन लिये जाता है राजाने य
 ह देख कर से जाना और उस ब्राह्मण को भी आनने राजा
 को देख दूर से कहा कि इस राजा से भेट है राजाने उस ब्रा
 ह्मन की आवाज सुन कर कहा कि भाई तुम कौन हो तब
 उसने दो नों ने समझा कर राजा से कहा कि हम जम के मे
 ने उज्जैन नगरी गये थे ब्राह्मन का जो लिये अपने स्वामी
 के पास जाते हैं राजाने कहा उन से पहले इस ब्राह्मन को
 तुम हमें देखा दो पीछे अपने काम को जाओ वे दूत राजा
 को अपने साथ ले नगर में गये जहां उस ब्राह्मन की देह
 पड़ी थी वहां देखा राजा देखते ही उस ब्राह्मन को

सिर निहडा अपने जीमें कहने लगा कि यह तो हमारा ही पुरो
हित है राजा ने दूतों को बातों में लगा नजर बचाव हमें मृत
उसके मुंह में डाल दिया ब्राह्मण राम का नाम ले उठ खड़ा रह
राजा ने प्रणाम किया ब्राह्मण ने आसीन दिया दूतों से हां थ
जोड़ बिनती कर कहा यह जो दान मैंने तुम से पाया यह देख क
र दूतों ने अपने जीमें भ्रम भा किया कि यह राजा ने क्या किया
हम जाकर क्या जवाब देंगे यह विचार करते हुए दूतों ने जम के
पास जा सब राह की अवस्था कही ॥ जम सुनकर चुप हो रहा ॥
और राजा ब्राह्मण का हां थ पकड़ अपने मंदिर को ले आया
बहुत सा दान दे विश किया यह कथा कह पुतली बोली कि ऐ
राजा भोजन ऐसा पुरधारथ कर सके तो इस आसन पर बैठे नहीं
तो इस खयाल से दर गुजर इस तरह वह भी लग्न गई राजा उ
ठ वहां से अपने मंदिर में आया रात जिस तिस तरह से काशी
सुबह होते ही तैयार हो फिर सिंहासन के पास जा खड़ा हुआ
बाहे कि उठा कर पांव धरे ॥ कि ॥

अनुरोध वती इसी सवीं पुतली बोली ॥

राजा क्या अपने बड़ाई करता है और इस अनीत की क्यों
नसीब बड़ाई है पहले मुझे सेवात सुन ले पीछे इस पर वैठाना

धीनाम एक ब्राह्मण था वडा गुनी उसकी तारीफ नही हो सकति जोग
 जो गीहोकर वह तन्नाम हृष्टि मे पिरे आया वही ठहर कर रहने नही
 पाया मानो काम का औतार था स्त्री दिखते ही उस मोहित हो जाती थी
 वह राजा वह सब विद्या पढा था अनिचतुर था वे सामर्थ्य को जिये मनुष्य
 कम पैसे हो जाहे जो स राजा की सेवा करने जाता वहां दिन दस एक उसका
 आहर होता जब वह आपना गुन प्रकाश करताने वह राजा उसे देस
 निकाले जा इस तरे से देस देस भटकता दुख पाता कामान गरीमे आ
 पुपु हा काम से न बाहं का राजा था उसके यहां काम कंदला एक पातु थी
 वह तोया दरवसी का औतार थी गंधर्व विद्या मे अनिचतुर थी वह राजा
 जिस भा मे रह सकर रही थी माधो मि उसी राजा के दुवार पर जा पहुंचा द्वार
 पर से का हा राजा को आकर हमारा समाचार कहो आय के दर्शन करने के
 वास्ते एक ब्राह्मण आया हे डेहु डिदार उस कि बानसन कर गये वह हा
 र मान कर वह वैदा जो जो वहां से मृदंग की आवाज और गाने की शब्द आ
 ती थी तो तो यह सिरधुन कर कहना था की राजा भिमुख रखे और उसकी
 जभा भि दूठ है जो विचार नही करता ॥ यहो नाम यांच जान दफे कही द्वार
 पालन पा हो ब्राह्मण देस राजा के दर कुल कह तो न सके पर राजा के सन
 मुरा जा हाव जो उ कर रखे नगे माहा राजने उनकी तरफ देखा उन्होने वि
 नंति कर कहा एक ब्राह्मण बिदेसी दुखल द्वार पर आन वैदा है सिर दुला
 मनु लाय कर कह ना है राजा की जभा के लोग अनिमुख रखे जो गुन विचार

नही करता यही बात पांच सात दफा कही द्वार पास खड़ा हो
 स्नान देख राजा के डर से कुछ कह तो न सके पर राजा के सनमुख जा
 हाथ जोड़ खड़े हुए महाराज ने जो उन की तरफ देखा उन्होंने विनती
 कर कहा एक ब्राह्मन बिदेसी दुर्बल द्वार पर आन बैठा है भिन्न हुआ
 हुआ कर कहता है राजा की सभा के लोग अति मूर्ख हैं जो गुन बिना
 नही करते तब राजा ने उन द्वारपालों से कहा जा कर उस से पूछो कि
 उन को मूर्ख तूने किस लिये कहा ॥ उन्हो ने राजा की आज्ञा पाय
 और पर भाव ब्राह्मन से पूछा महाराज ने आज्ञा की है उनके गुन में
 दोष क्या है वह तुम बताओ तो हम तुम्हारी बात सब जानेंगे ॥ उन्हे कहा
 बारह आदमी बार बार तीन तरफ में खड़े हुए जो मूर्ख बजाते हैं ति
 न में पूरव मुखवालों में एक मूर्ख का संग्रह नहीं है इस ने समझ
 थाव हुल की पड़ती है इस ने ऐसे सक्ती कह कहे तब कहे तो तु
 म जाकर देख लो ॥ वे खड़े हुए राजा के पास भवन सब बातें सुनाई
 राजा ने पूरव मुख के चारों मूर्खों को बुला एक एक का हाथ
 देखा तो उन्हो में एक का संग्रह मोम का बना हुआ था यह नका
 रा राजा देख प्रसन्न हुआ और उस ब्राह्मन को बुलाया ॥ वह जाकर
 सनमुख हुआ राजा ने रंडवत की और उस ने आसीस दी फिर लि
 भाचार कर नदी पर बिठला जैसे बल आभुषण भाव पहने थे वे

सही मगाया और ब्राह्मण को पहनाये और काम कंदला को बु
लाया अज्ञा किया यह महागुनी है इसके आगे तुम अपना गुन
प्रकाश करो जिससे यह प्रसन्न होवे ॥ काम कंदलाराजा की
अपना गुन जाहिर करने लगी संगीत नृत्य का आ
रंभ किया शीशेरंग के भरे हुए सिर पर धर मुह से मोती पड़े ती
हुई हाथों से बड़े उछालती हुई नाचने लगी सब साज सुर
मिलाये हुए नाचती थी ॥ इसमें कुलों की और अंतर की
खुशबो पाकर एक भौंरा उड़ता हुआ आकर उसके कुच
की मिरनी पर बैठा और डंक मारा उसके बदन में हुई तब वि
चार अगर कुछ भी हरकत करती हूं तो ताल भंग होगा और
मेरे गुन की हसी होगी इतना जो मे सोच भंडार बिद्या कर सं
सारे कुच की राह निकाली पौन लगते ही वह भौंरा उड़ गया
माघो इस गुन के देखते ही मोहित हो बोला ॥ धन्य है तू मे
और तेरे करतब की यह कह प्रसन्न होकर बल्ल आभूषन
जो राजा ने दिया था सब उतार दिये यह देख राजा और मंत्री
आपसमें कहने लगे कि देखो इस ब्राह्मण ने क्या मुख ताई
की या है कि इस वेश्या को यह कपड़े और तमा मजवाहिर ए
क आन में बख्शा दिया ॥ यह जात का भिरवारी हमारे आगे स

रवावत याने सखीप ना देखलाता है राजा खफा होकर ब्राह्मन
 से पुछा कि तू इसके किस गुन पर ऐसा वह मेरे आगे बयान कर
 ब्राह्मन ने कहा सुनो महाराज तुमी मुख है और तेरी सभा
 भी कुट है तेरे सभामे यह ऐसा गुन प्रकास करे और कोई गुन
 का विचार न करे इसके कुच पर मौन आन बैठा था सो इसने
 अपनी सांसरो क कुच की राह निकाल उसे उड़ा दिया यह का
 म देख सब कुछ मैंने रसे बखश दिया ॥ माधो ने जब यह बात
 कहो तब राजा लज्जित हो रह गया और कुछ राजा से न बन
 आया कहा रसी समे मेरे नगर से निकल जाजों सुनूंगा कि
 इस नगर में है तो मैं बधवा कर दरिया में डबा दूंगा तब माधो ने
 कहा महाराज मुझसे एसी क्या अपराध हुई जो आप मुझे देस
 निकाल देते हैं राजाने कहा मैंने जो कुछ तुझे दिया था सो तूने
 उसे मेरी ही आगे दान कर दिया क्या मेरे पास देने की कुछ न था
 जो तूने दिया सुनकर माधो मन मलीन हो राज सभा से निकल
 बाहर जा एक दरख्त के निचे व्याकुल खड़ा हो अपने जी मे क
 हने लगा कि माता बटे को बिछदे और पिता पुत्र को बेचे राजा सर्व
 सले तो कोई सरन किस की ले फिर कहने लगा राजाने मुझे निरु
 ता अब कहाँ रहूँ ॥ यों अनेक अनेक तरह की चिंता कर का मुकंद ल
 का

नाम लेले रोता था और घर काम के दलामी राजा ने वह नाकार विरा
हुई और एक आदमी दोड़ा कि वह ब्राह्मण जो नया वे उसे ले
जाकर परे मकाम में बैठा था वह आदमी गया और ब्राह्मण को ले
जाकर उसके मित्र में बैठा था रघुस यह भी बुरा जाप हंची रोना
आपसने बैठ कर प्रेम की बातें करने लगे तब उस ब्राह्मण ने कहा मु
झे राजा ने देस निकाल दिया है और तूने अपने घर में बुला बैठा था
जो यह बात राजा सुनेगा मेरा प्राण जायगा तो मैं दुःख से छूटूंगा पर
तुझे भी राजा अति कष्ट देगा इससे एसी बात करनी उचित नहीं है
कि अपनी जान जाय और तगहरी हो प्रेम दे जो सो दुःख की स्वा
न है जिसने प्रेम के राह में पावे दिया उसने कभी सुख न पाया ये बा
त माधो की सुनकर काम के दलाने कहा कि अब तो मैं इस पथ में
भाई जो कुछ करे सो भगवान * इतना कह कर सब राजा बाज मगवा
अपनी विद्या जाहिर करने लगी जिसकी विद्या उसे पार की उत्तरी
जब मकाश कर चुकी तब माधो ने उन्हीं दोनों के साथ अपका पुत्र
भी सब कर देखा था जब रात छोटी सी रह गई तब काम के दला
ने कहा कि तुमने अम बहुत किया चलकर आराम किजिये यह
कह माधो को रंगम हल में ले गई और जेतनी खुशी थी सब की
जब गजरवान दोनों के जैसे राजा की बात बाद पाई सध सुधा

जाती रही धबरा का माधो ने कहा सुन सुंदर रात तो आनंद से
 बिताई अब जो मै यहाँ हूँ गा तो दोनो के प्राण जायेंगे रस्से कुछ
 जतन किजिये जिसमें निर्द्वंद्व आनंद से रहे ये मै ने एक बात जी
 में विचारी है कि अब मैं यहाँ से जाऊँ और कुछ उपाय कर फिर
 आतुं भी यहाँ से ले जाऊँ तु अपना जी मजबूत रख मैं जरूर
 आकर तुझे से मिलूँगा यह बचन मैं तुसे देकर जाता हूँ तनीब
 त वह सुनते ही मुझो का गिरपड़ी और माधो ने उठकर सह
 ली वहाँ से निकल कर बन बन फिरने लगा और हाथ काम के
 दला हाथ काम के दला करने लगा उधर इसी भी सरियों ने मुल
 ब मुह पर छिड़क कर उठाया जब कुछ होश आया तब यह भी
 माधो माधो पुकारने लगी खाना पीना त्याग किया बहते रस
 रियों सपना तो थीं उसके जी में एक न आती थी जा तो मुल
 ब कपूर चंदन लाला कर लगाती थी तो तो योगी दाह ब
 डती थी किसी तरह से सिललता न होती थी जब कोइ मा
 धो का नाम सुन सुनाता था तब उसे जरा आराम आता था ॥
 उधर माधो भी भटक भटक के अपने मन में विचारने लगा
 अब संसार में कौन है जिसके निकट जाइये जो हमारा दुख
 दूर करे इसमें उसे याद आया कि सुनते हैं राजा वीर विक्रमा

जीत पर दुख ने वारन है मला उसके पास जाइवे और देखि
 ये लोग सच कहते हैं या श्रुत॥ यह विचार कर उज्जैन नग
 र को चला गया वहां लोगों से पूछा यहां राजा से भेट आधी
 न की क्यों कर होती है तब एक उस नगर का बासी बोला गो
 दावरी नदी के किनारे शिव का मठ है उस मठ में राजा शिव के द
 शन को नित आते हैं वहां तु जा जा तब मनोरथ है तो तू कह
 ते ही कामना पूरी होगी॥ यह सुनकर वह वहां गया और उस
 मठ के द्वारे के चौकट पर लिखा कि मैं ब्राह्मण विदेसी विरह
 से अत दुखी विरसे व्याकुल तुम्हारे नगर में आया हूँ यह
 सुन के कि राजा पर दुख ने वारन है और यह दुख जो मेरा
 जायगा तो मैं अपना मान रखूंगा न हो तो तीसरे दिन गोदा
 वरी में प्राण त्याग करूंगा यह बात सुकर मैंने अपने जी में
 ठहराई है इसमें तुम राजा हो हमें सा गौ ब्राह्मण की रक्षा क
 रते आये हो और अब भी करोगे मैंने अपने मन की बात स
 ब प्रकाश कर दी है॥ इतनी बातें कह पुतली ने राजा भोज से
 कहा कि सुन राजा विर विक्रम जीत का यह नेम था कि अ
 न दुखी ब्रह्म दुखी द्रव्य दुखी भूमि दुखी विरह दुखी और
 किसी तरह का दुखी नगर में आता राजा सुनकर जब तक
 उसका दुख न मेटा देता तब तक अनजल का तो कपाजि

कि० है दानुन भी नचीरता था सबेरे राजा जब दर्शन को ग
 या दर्शन कर सक्रमा करने लगा राजा उचीट च कर देखे
 तो कोइ इस्वी अपने दुख की अवस्था लिख गया है राजाने
 सब बाच कर महादेव की दंडवत कर मंदिर में आया अज्ञा
 की कि माधो नाम ब्राह्मण हमारे नगर में आया है जो को
 १३ सैठ ठलावे तो मुहमागा दूख पावे यह बात सुन लोग न
 गर में ठठने लगे घाट बाट रोहाम हल्ला बाग बागीचा सब न
 गर ठठ फिरे कहीं टेकाना उसका नपाया जब राजाने एक
 दुतो को बुला कर अज्ञा की कि जो तू उसैठ ठलावे तो मु
 हमागा धन पावे उसने कहा महा राजा यह क्या बढी क
 ढिन बात है मैं अभी जाकर ठठ लाती हूँ ॥ यह कह उस
 देवहां से सुधीराह मंदिर की लिया जहां उसने लिखा
 या जाकर मंदिर के पास बैठर ही शाम के वक्त वह भी
 मटकता हुआ आन पहांचा उसने उसै देख मन में वि
 चार किया हो न हो यह बिरही वही है कि लिखे कि
 मुहपीला और सुजारी तन हीन मन मलीन हो रहा है य
 ह तो यह विचार कर रही थी कि वह ब्राह्मण वही आन
 वेष्टा और एक बार हाथ काम कं दला हाथ काम कं
 दला पुकार उठा चट उसने वहां जा हाथ पकड़ लिया

और कहा मैं तेरे ठूठने के लिये राजा की भजाया कर
 आइ है तूं उद मेरे साथ जल दो चल तेरा मनोरथ पुरा हो
 गा तेरे दुख से राजा नियत दुखी है यह सुनते ही उठ के
 साथ हो लिया वह राजा के सनमुख यह चकर कहने
 लगी महा राज यह वही बियोगी है जिसके लिये भ
 यने यह दुख पाया है तब राजा ने उस ब्राह्मण से पुछा
 कि तूं किसके बियोग में इतना दुखी है मेरे आगे कहत
 व उसने एक आह भर कर कहा महाराज काम के दला
 के बियोग में मेरी यह गती हुई है वह राजा काम से नया
 स है तूं धर्मात्मा है इससे मैं तेरा सभाया है तूं मुझे उ
 सका दिला दे तो जी दान दे यह सुन राजा हस कर बो
 ला सुन ब्राह्मण वह बेव्या है तूं उसके प्रेम में भवना
 धर्म कर्म छोड़ यह तूं से उचित न हो है माधो ने क
 हा महाराज प्रेम का पथ निराला है जो नर प्रेम कर
 ते हैं सो अपना तन मन धर्म कर्म सब समरपन करते
 हैं प्रेम की अकथ कहानी है मुझ से कहो न हो जाती
 ॥ राजा ने यह बात सुन और उसे साथ ले मंदिर में ग
 या और सब रानियों को भजा दिया कि तुम बनाव
 सिंगार कर के आओ रानियां सब सिंगार कर आ

१ और उस ब्राह्मन से राजा ने कहा जिसे तुम्हारे रक्षक
 हो उसे इन रानियों में से लो अपने मन का दुख बिसारो
 और सुख चैन करो ॥ उन्ने जवाब दिया महाराज मैं आप
 के भागें सत्य कहता हूँ कि मेरे भाँखों में वह बसर ही है इस
 लिये मेरे दृष्टि में न हों कुछ आता चातक की चया खाती की
 बूँद से बुझाती है और जल पर उसे रुचन हों होती र सी प्रम की
 दृढता ब्राह्मन की देख राजा अपने मन में विचार किया कि
 साथ ले जाकर काम कंदला को दिला दूँ उसके बिना इस
 के मन को थिरान न होगी ॥ यह बात राजा ने मन में विचार
 ब्राह्मन से कहा देवता तुम अशन पूजा कर कुछ खा लो
 तब तक मैं भी अपने लोगों को बुला तुम्हें अपने साथ
 ले चलूँ और उसे दिला दूँ तुम अपने जी में किसी बात की चिं
 ता मत करो मैंने तुम से यह बचन किया ॥ ब्राह्मन अपने खा
 न पीने में लगा राजा ने प्रधान को बुला कर आज्ञा किया कि
 मेरे ऊँचे नगर के बाहर निकालो चार घड़ी के बाद कामानग
 री कोतर प्रेमरा कुच है सब लोगों को खबर दो इसमें केतनी
 दूर के पौछे राजा तैयार हो ब्राह्मन को साथ ले कुंच कर उठे रामे दा
 खिल हवा जेतने वनौ करथे सब हाजिर हुँ राजा वहाँ से कु
 च दर कुंच जाता था केतने एक मंजिलों के बाद जल्द का

मानगरीसे इसको सरंधर उठा किया और उस राजा को पत्र लिखा कि हम इस लिये आये हैं कि तुमारे यहाँ काम केंदला जो पातुर है उसे मे जंदा नहीं तो हमसे जुद्ध करने का सामान करो यह पत्र लिख के एकदुत के हाँथ राजा के पास भेज दिया राजा को खबर हुई कि एकदुत राजा बीर विक्रमा जीत का खत लेकर आया है यह सुनते ही राजा ने उसे सनमुख बुलाया जाकर उसने जो हार कर राजा के हाथ खत दिया राजा ने उस चिही को बाचकर कहा कि भच्छ भय पने राजा से कहो चले आवें हम जुद्ध करने पर तैयार हैं। दुत ने आराजा से कहा महाराज वह लड़ने पर तैयार है राजा ने भी हुक्म भयने लोगों को दिया कि हमारा भी दल तैयार हो फिर राजा के जीमे आया कि जिसके वासे हम आये हैं उस की भी परिक्षा लिया जाहि यो॥ इस तरह जीमे ठहरा बैद का सवांग वन राजा के नगर में गया लोगों से मकान काम केंदला का पूछ दरवाजे पर जा बैद हकीम का पुकारा॥ आवाज सुनते ही एक दासी बाहर निकल आई पूछा कि तुम बैद हो तो हमारे नायका की कुछ इलाज करो जो वह अच्छी होगी तो तुम बहुत से रूपये मिलेंगे ये बातें कर दासी उसे हाथ धर काम केंदला के पास गई राजा ने दे

रवा कि निरजीर पड़ी है फिर उसकी नाड़ी देख कर कहा कि
 इसकी नाड़ी रंग और कुछ नहीं है प्रीतम का वियोग है जि
 से इसकी यह गत बननी है यह बात सुन काम कंदलाने
 आ खैर बोले उसकी तरफ देखा और कहा इसका कुछ इला
 ज तुम्हारे पास हो तो करो तब राजा ने कहा इसका इलाज
 तो था पर इस समे में हमें कुछ कहते बन नहीं आता तब
 वह बोली तुम्हारे पास क्या इलाज था वह बताओ राजा ने
 कहा माधो नाम एक ब्राह्मण था उसै हमने राजे ननग
 में बिरह वियोगी आता सो गी देखा सो वह दुख पाय म
 र गया ॥ यह सुनते ही हाय कर उसने भी अपना प्राण छोड़
 दिया जेतने दासी दास उसके घर के थे यह दासा देख सिर
 पाट पीट सब रोने लगे तब इन्ने कहा तुम कुछ चिंता अ
 पने मन में मत करो इसै मुख्य आई है कितने दर में सु
 ध आवेगी तुम इसकी चौक सी कर तेर हो मै जा कर अ
 पने घर से औषध लाऊँ ॥ राजा उलटा फिर अपने दर
 में आया और माधो के आगे उसके मरने का खबर की
 सुनते ही एक आह के साथ उसकी भी जान निकल गई
 यह देख कर राजा अपने जी में पछताकर विचार कर
 ने लगा कि जिसके वास्ते इतनी सेना साजके पर मुमि

में आया और उसी सतरह बिरिया यह दोनाह त्या मेरे उ
 परपडी अब अपना भी प्रान रखना उचित नही यह बा
 त जीमठ हरा चंदन बहत सामगवा चिता बनवा राजा जी
 ता जलने को तै यार हुवा दोवान प्रधानने जेतना मना
 किया नमाना जो चाहे कि चिता में बैठ आग लगावे कि वै
 तालने आ हाथ पकड़ लिया और कहा राजा तूं अपना
 जी कौं देता है तब सने कहा कि दो की जान मैंने जान
 के कोई अब मेरा भी जीना संसार में उचित नही इस वद
 नामी के जीने से मरना उत्तम है॥ बेतालने कहा राजा मैं
 मृत ला देता हूं तूं दोनो को जिला दे यह कह कर जल्द वै ता
 ल पाताल से अमृत ले आया उस ब्राह्मन पर छिड़का व
 ह जी उठा फिर ले जा कर काम कंदला पर छिड़का वह भी
 जी उठी और माधो माधो पुकारने लगी राजा की सरत दे
 ख कर कहा तुम कौन हो और कहा से आये हो मुझ से क
 हो तब राजा ने कहा हम वीर विक्रमा जीत है माधो का बि
 रह दुर करने के लिये उज्जैन नगरी से यहाँ आया हूं तू रा
 तिर जमा रख कि तुझे हम माधो से मिला देंगे यह सुनते
 ही उठ राजा के पांव पर गिर पड़ी कि राजा यह तुम जी द
 न देवगे और जैसा जस तुम्हारा सुनते थे देखने में आ

या इतनी बात कह राजा फिर अपने लश्कर से आया दूसरे दिन अपनी फौज लेकर कामानगर पर चढ़ाया वहाँ के राजा से जुद्ध किया उस राजा ने हार मानी और कबूल किया कि हम कामकंदला को भेज दें और यह जो मैंने जुद्ध किया सो आपके दरशन के वास्ते और इसलिये कि किसी तरह हमारे नगर में आपके चरण पड़े ॥ बाद इस के राजा से मुलाकात कर के वह राजा अपने मंदिर में ले गया बहुत भेट आगे धर कामकंदला को बुला राजा के आगे खड़ा किया और राजा वीर विक्रमाजीत ने माधो को बुला कामकंदला को उसके हाथ हवाला किया फिर वहाँ से कुंचकर अपने नगर में आये माधो को बहुत धन दौलत दे बिदा किया इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि ऐ राजा साहस जो तुझमें हो तो सिंहासन पर चरन धर नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा ॥ वह भी दिन राजा का टल गया दूसरे दिन वह फिर आन मौजूद हुआ तब अनुरोधवती पुतली बोली

कि राजा तु अपने मन की चिंता छोड़ दे मैं जो कथा कहती हूँ सो सुने एक दिन राजा वीर विक्रमाजीत सभा के बैठा था प्रधान से पूछा मनुख बुद्धि अपने कर्म से या

ते हैं या उन के माता पिता सिखाते हैं मंत्री बोला महाराज
 ज यह नरपुर्व जन्म में जैसा कर्म करे है तैसा बिधाता
 उसके कर्म में लिख देते हैं तिसी प्रमाण बुद्धि होती है
 माता पिता के सिखाये बुद्ध होती नहीं कर्म लिखा फल
 पाता है भादमी भादमी को क्या सिखावे और जो सिखे
 से बुद्ध हो तो सभी पंडित हो इसमें महाराज कर्म के लिखे बि
 ना बिद्या होती नहीं कइो जन्म को ई कर कर्म की रेखा मि
 टे मिरती नहीं ॥ राजा ने कहा दीवान यह तुने यह क्या कहा
 संसार में यह तो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेते हो लइका
 माता पिता से जो सुनता है और जो देखता है उसो ब्याहार
 से चलता है इसमें कर्म का लिखा क्या है यह सिखाये से सिख
 ता क्या है और जैसी संगत में बढता है वैसे ही बुद्ध होती है
 इतनी बात सुन कर बोला कि धर्म भावें तार हम आप की
 वस बरी नहीं कर सके यह अपने मन में विचार करतुम
 समझो कि कर्म का लिखा ही फल मिलता है तब राजा
 ने कहा अच्छा सब बात की परि चालिया चाही यत बरा
 जाने एक महा वन में मंदी खनवाया कि जहां मनु
 य की आवाज भी न जाय एक अपने बेटे को पैदा होने
 ही उस मंदिर में भेजवा दिया और उसके साथ एक

दाई वल्लोकरि धा वह आखों से मंथी कानों से वह गे मुह से
 मंगी। वही उसे दुप पिलाती थी और पर्वरि शक्ति थी फिर
 सातरह से एक दीवान के बेटे को और एक ब्राह्मन के पुत्र को
 क कोत वाल के बेटा को जन्मते ही गंगी मंथी वह री राइयां दे
 उसी मंदिर में भिजवा दिया दिन ब दिन बड़े बड़े ने लगे और
 सीगा ठी चौको उस मंदिर के दो दो को सगिर्द में बैठा दीया मनुष्य
 के जाने की तो क्या सामर्थ्य थी डोलन कार की भी आवाज न जा
 ती थी। सतरह से जब बारह बरस गुजरे तब एक दिन ब्राह्मनी
 ने अपने स्वामी से कहा कि एक जुग पूरा हुवा मैं न अपने पुत्र
 का मुह न देख सका चित जो निकल जाय तो मन की अभी
 लाधार हो जाय। ससेतु मराजा के निकट जाकर बोली कि महाराज
 जबारह बरस वितवु के मैंने बेटे का मुह न देखा अब मेरे जी में है
 कि पुत्र को घर से पकर दूँ ही तो तपस्या करूं यह ब्राह्मनी बात
 सुनकर ब्राह्मण तैयार हो राजा के पास गया राजा ने देखते ही
 देउवत किया और उसने आसीस दिया राजा बोला तुम भ्रान्त
 से हो ब्राह्मण ने कहा कि महाराज आपके राज से भ्रान्त मंगल
 है पर मैं एक कामना करके आया हूँ यह सुनकर राजा ने कहा
 क्या तुम्हारा काम है सो कहो तब ब्राह्मण ने अपना भ्रह्म वाल
 सब कहा सुनते ही राजा ने प्रधान को बहुत जल्दी से

बुलाया और भजा की कि उन चार बालकों को अब म
गाओ कि बारह बस हो चुके दीवान सुनते ही तुरत सदा
हो उन लड़कों को लेने को गया पहिले उनमें से राजा के
वर को ले आया नख और के स पड़े हुए शरीर तमाम
मेला कुचला इस भेख से राजा के सनमुख लाखड़ा किया
राजा ने देख कर कहा सुन तुम कुशल से हो ये तने दिन तु
म कहाँ थे और अब कहाँ से आये सब बेवरा अपना
हम से सम्झा कर कहो यह सुन कुंवर ने हस कर राजा
से कहा कि आप के कृपा से कुशल है और आज का
दिन भी कुशल का है जो आप का दर्शन पाये ॥ यह सु
न कर अपने मन में हरषी त हो राजा ने मंत्री की तरफ
देखा मंत्री उठ हाथ जोड़ जो हार कर के बोला महारा
ज यह सब क्रम ही का लिखा है फिर देवान के पुत्र को
बुलाया आकर वह भी राजा के सनमुख भया न क भेख
से खड़ा हुआ जैसे बदन में भालक को पकड़ लाते हैं ना
खून और बाल उसी तरह बड़े हुए शरम में नीचे गढ़
न किये खड़ा था राजा ने पूछा तुम अपनी कुशल कहो
कहाँ थे और कि धर से आये हो तब वह बोला महाराज
अलहेम कहाँ है गो उधर ससार में उपजे है इधर बिन

से है जैसे ही मरने और उठ जातो है दिन जाता है दिन जा
 न है नर जाता है ये ही जग का लोहार है इसमें कुशल से
 मरने का है क्या कहें ये उसकी बातें सुन राजाने ही वान
 से कहा ऐसे यह किसने सिखाया है जो तुने कुछ कहा था
 सब सच है यह फल कर्म से इसने पाया फिर राजाने कोत
 वाल के बेटे को बुलाया उसने आते ही राजा को सलाम कि
 या और हाथ जोड़ खड़ा हुआ राजाने कुशल पुछी तब उ
 सने कहा पृथ्वी नाथ दिन रात नगर का पहरा देते हैं रसों
 भी चोर आन चोरी करता है बरना महम होते हैं बिना भ
 म अधिक लंक लगे तो फिर कुशल काहे की है ॥ राजाने फि
 र ब्राह्मन के पुत्र को बुलाया जब वह सामन मुख आया राजा
 ने देवत किया उसने मंत्र पढ़ आसीस दिया राजाने उस
 की कुशल पुछी उसने कहा कि महाराज आप पुछते हैं
 मुझसे कि बेशरीर में कुशल है सो कुशल कहों है मेरी शरी
 र में दिन बदिन उमर धरती जाती है महाराज कुशल तो
 तब कहने में आवे कि मनुष्य चिरंजीव होवे जिन पर न सा
 थ है उसकी क्या खुशी कहें चारों की चार बातें सुन कर ही
 वान से कहा कि सच है पढ़ाने सं पंडित नहीं होता पंडि
 ताई जो कर्म में लिखी होय तो मिले ॥ यह कह ही वान

को सब प्रधानों का संदीर किया और अपने राजकाज का
भार दिया ॥ और उन चारों लड़कों का विवाह कर दिया और
बहुत धन दौलत दिया इतनी बात कह पुतली बोली पुन
राजा भोज कलजुग में ऐसा धर्मात्मा राजा होना कठिन है
जो इतनी बठार और धन पाय अपनी बात पर खयाल न
करे और जो न्याय का धर्म था सो ही कहा ९ साजो तु काम
करे और इस जोग हो तो सिंहासन पर पावंधर और न
हों तो सब आस तज राजा अपने मन में चिंता कर्ता हुआ
उठकर अपने मंदिर में आया एतको लेटा हुआ विचार
ने लगा देखू मेरा भाग फिरे है या अभिभाग रहता हूँ ॥
एततो इसी तरह से बीती सुबह होत ही फिर आन भोज
रह आ चाहे पांव उठ सिंहासन पर धरै इसमें

करुनावती २३ तेरसवी पुतली

क्रोध करके बोली सुन राजा जो कहा चित तू इस पर पां
वर खेगा तो तुरत जल कर भस्म हो जायगा और तू से ल
ज्जान ही आती कि तू घड़ी घड़ी यह श्राव करके आता
है और कोई होता तो फिर मुह न देखाता जिस सिंहास
न पर राजा बीर विक्रमाजीत बैठें जिसके बैठने का तू
मनोरथ करे हंस की वगैरी कोवान होकर ता सिंह के

समान गिर उके कोई नहीं मानता पंडित के बराबर को
 ३ मुख को नहीं जानता ॥ राजा तु निरबुद्ध है और
 २ तु से ज्ञान नहीं जैसे मछली थोड़े जल में उछल
 ती है वैसे तु थोड़ी प्रभुता पाके इतरा चला है ऐसे ऐसे क
 दिन बातें सुना कर पुतली रोने लगी ॥ राजा अपने
 चित में चिंता कर उस पुतली से पुछने लगा कह संदरी
 तु क्यों रोती है अपने जी का दुख समझा कर मुझ से कह
 राजा बीर बिक्रम जीत में क्या गुन पुरुषार्थ था यह सु
 न कर नावती पुतली बोली राजा जो तुम अस्थिर हो कर
 बैठो और कान धर कर सुनो तो मैं सब कथा कहती हूं राजा व
 ह सब बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछा बैठ गया और जे
 तने लोग राजा के साथ थे सब गिई पेश बैठ गये फिर पु
 तली बोली कि राजा बीर बिक्रम जीत के गुन राजा भो
 ज तुं सुन एसा जसी साहसी पुन्यात्मा कल जुग में कोई ज
 न्मान नहीं और न कोई जन्मों गा जिस समें राजा बिक्रम जीत
 संख को मार गद्दी पर बैठा संख के ही वान से कहामें राका
 मतुस से न चलेगा बेहतर है कि २० हास मुझे अच्छे लादे
 जो राजकाज करने के लायक हों मैं उसे सब अपना
 काम लूंगा ही वान हक मया २० आदमी अच्छे ले आ

कुलमे बैसमे सुंदरतामे सबके सब अच्छे थे राजा के सामने
 चडे कर दिए राजा उनको देखते ही अतम सन्नह भ्रा और
 उसी समे सबको बागे यह बा पान दे कर कहा नि तुम हमारे
 खिदमत में सदा हाजिर हो फिर इसके कई दिन के बाद उनमें
 से किसी को दीवान किसी को कोतवाल किसी को फौज रख
 किया ॥ मग अब इसी तरह से हर एक को काम दे पुराने लोगों
 को जबाब दीया और सब नया बंदो बल किया पर एक उ
 स पुराने दीवान को जबाब न दिया दीवान जब अपने घर
 में बैठा करता वे सब पुराने लोग आकर हाजिर हुये और
 आपस में चर्चा करते दि यह राजा बुधवान है जो राजा को
 लिया और बंदो बल यो किया कई दिन के बाद दीवान
 ने उन लोगों से कहा कि तुम मेरे पास न आया करो इस
 लिये कि काम तो तुमारा मेरे हाथ निकलता न ही और
 अगर राजा सुने गा तो खफा होगा और कहे गा कि
 यह अपने घर में क्या काम किया करता है मैं अपनी ब
 द नामी से उता हं कुछ तुम यह मेरे कहने का बुरा नमा
 नना ॥ यह सुन कर उनमें से फिर कोई उसके पास न
 आया यह अपने मनमें विचार करने लगा कि ऐसा
 कुछ काम किजिये जिसमें राजा संतुष्ट हो और दिन

वही विचार करता रहता था एक दिन वह प्रधान नदी किनारे
 आनन्द करने गया वहाँ आनन्द करने कमर भर पानी में खड़ा
 था जप करता था। तब उस नदी में एक फूल अती सुन्दर कि
 वैसा कभी दृष्ट न आया था वह तो दृष्ट आ देखा अपन जप
 छोड़ कर आगे बढ़ फूल लेकर जिसे विचार किया वह राजा के
 ठ कहेगा तो वह देख कर बहुत खुश हो वेगा वह फूल हा
 थ में लेकर खुशी खुशी अपने घर में आकर कपड़े रंगार के
 पहिर राजा के पास गया और फूल नजर किया राजा फूल ले
 बहुत खुश होकर बोला कि मैंने अपने राज पाठ का तुझे प्रधा
 न किया उठ उठ कर मेरा दिया और आदाब बजा लाया ॥
 फिर राजा ने कहा सफूल का बुरा मुझे ला दे अगर ला देगा
 तो मैं तुझे बहुत खुश दूँगा और जो न ला देगा तो अपने न
 गर से निकाल दूँगा वह राजा की आज्ञा ले अपने मुँह में
 आया और जो विचार करने लगा कि मैंने पूर्व जन्म में
 साक्षात् पाप किया है जो एसी सुन्दर बलुराजा को दिया और रा
 जा ने पद न हो कर दिया फिर वह क्रोध किया कर्म की गतो
 वृत्त नहीं जानो कि भला कर्तव्य होवे ॥ अकेला बैठा बहुत
 विचार करने लगा कि अगर राजा की आज्ञा न मान तो देस नि
 दा लागे और डेढ़ न जाउ तो मैं कहों डेढ़ कर लाऊँ जो

इरवयाकर कहें जाउं और ठुंठ नपाउं तो और भी दुना इरवहे
 गा मैं जानता हूँ कि काल मेरे निकट आय हूँ चाहे इसे और इस
 कामर ना भलान हों अगर यों हों मरना है तो बने में जाइये जा
 दुं मिल जाय तो ले आइये नहीं तो वहाँ मर जाइये ॥ इतनी
 बातें अपने जी मे विचार बाढ सकर के बैठा अपने दीवान को
 बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढई को बुला दो कि एक
 नाव हमें ऐसी तैयार कर दे कि वे डुन मलाह और वगैर खे
 वटिये के निधर को चाहे उधार ले जाय। वहाँ कारीगर बढ
 ई को बुलवा दिया बढई ने कहा महाराज मुझको स्वर्चकी
 भजा होवे तो मैं जल्द बना लाऊं मंत्री ने दीवान को कहा जे
 तने रुपये यह मांगे उतने इसे दो तो यह जल्द बना लावे ॥
 ये उसे दिया वह घर को ले आया और केतने दिनों के बाद
 नाव तैयार करके खबर दिया कि तैयार हो चुकी तब दी
 वान ने अपने स्वामी से जाकर कहा आपने जो नाव बना
 वने की भजा दिया था सो तैयार है ॥ यह सुनते ही दीवा
 न नदी के किनारे आया नाव को देख पसन्न हो उस बढ
 ई को जोश घोश दे पोच गाव बत कर बिदा किया दीवान
 अपने सर जाम नाव पर रखवा आप कुटुंब से बिदा हो हां
 थ जोड़ कर कहने लगा कि जो हम जीते फिरेंगे तो फिर

तुमसे मिलेंगे और जो मार गये तो यह बिदा हमारी है *
 वह तो यह कह कर हरसत हुवा त माम धर के लोग कुक
 मार न लगे फिर यह भी जो भारी किये दुःख उस ना वयर बै
 ठा ॥ पाल चढा कि क्षीर बोल दिया जिस तरफ से वह फूल
 वह ता हु आ आया था उसी तरफ यह चला जाता था और
 दो नों कनारों के दर रत्नों को देखता जाता था के तने दिनों में
 चला चला एक महावन में जा पहुँचा और खाने की तिनिस
 भी तमा म होगई तब उसने अपने जी में विचार किया कि
 अब ना वयर बैठ रहना उचित नहीं जिस काम को आये है
 उस काम का फि फिर किया चाहिये ॥ यह अपने जी में विचा
 र करता था कि एक पहाड़ दर्मियान उस दरिया के नज़र
 आया और उसी पहाड़ से पानी आता था कि शरीर व ही
 लगा आप पहाड़ पर गया क्या देखता है कि जहाँ तहाँ हों
 धीगे डेशेर अपने दहाड़ रहे हैं सिवाय उन की आवाज़ों
 के कोई बात कान नहीं पड़ती सुन सुन आवाज़ें जी में अप
 न सहमता था मगर इस पर भी आगुं हों पां व धरता था ॥
 जब उस पहाड़ को लाघ गया वहाँ जा कर देखे तो एक वे
 सही फूल बहा हुवा चला आता है उस फूल को देख जी में
 ठ उस सी हुई कहने लगा वैसा फूल दुसरे भी देखा मग

वानचाहै तो बिहारी भी नजर आवे * जंव जेव आगे बढ़ा तो
 तो फूल और भी बहने देखे वह अंदेशा उसके जी से कराया
 और दिल में कुछ कर आया आगे देखता क्या है कि एक बड़ा
 हाट है और उसके नीचे एक मंदिर है उस मंदिर को देखकर
 अपने जी में विचार किया ऐसा सुंदर मंदिर इस जगह बना हुआ
 है बाह्ये कोई मनुष्य भी हो ॥ यह कहता हुआ उस मंदिर
 के पास जा पहुँचा और वहाँ जाकर देखा तो एक तरवार में एक
 कतपसी पाशों में जंजीर बांधे हुए उलटा लटक रहा है हाट
 भाँस चाम खुरकर काट हो गया है और उसमें से एक एक
 बंद रक्त की उस नदी में गिरती है और वह फूल होकर वहाँ
 बहती चली जाती है ॥ उसे अचरज को देख जी में यों कह
 न लगा कि भगवान का लीला कुछ बुद्धि में नहीं आती नीचे
 निगाह करके देखे तो बीस जोगी वेशही जटाधारी बैठे हैं और
 खुरक वे भी खंड ख हो गये हैं और चारों तरफ रुंड कमंड
 ल पड़े हुए हैं और जिस ज्ञान ध्यान में जैसे बैठे थे वे सेही बैठे
 हैं ॥ यह दृश्य वहाँ की देख प्रधान उलटा फिर अपनी ना
 व पर आया और वहाँ से केतने दिनों में अपने नगर में आ
 या लोगों ने खबर उसके आने की पाई पेशवाले ने को गये
 और उसे आये को कोई आता था तब कुशल पूछकर ब

धाई देता था परन्तु उसके नौवत बजने लगी मंगलाचार हो
 ने लगा ॥ यह खबर राजा ने सुनी और एक प्रधान को भेज दी
 को बुलाया वह आनकर ले गया यह जाकर राजा के पांव
 पर गिर पड़ा राजा ने उठा ध्याती से लगा हो मकुशल मूर्छी और
 कहा कहंत सकतंग था था और कहा देकाना उसका कर आ
 या यह सुनते ही वह फूल जो लाया था राजा के भेट किये औ
 र हाथ जोड़ कर कहने लगा कि महासज एक भवं मे की बात है
 जो मैं कहूंगा तो आपन पति आवेंगे फिर राजा ने कहा कि जो
 तुने भवं भा देखा है बयान कर वह बोला महाराज मैं यहां से
 चला हु आ एक जंगल में पहुंचा और वहां जाकर एक पहाड़ दे
 खा उस पहाड़ पर जब मैं बठा तो और एक पहाड़ नजर आया
 इस तरह के पहाड़ जब लो घुमै आगे गया एक पहाड़ के त
 ले एक सुंदर मंदिर देखा जब मैं उसके पास गया तो एक पेड़ प
 र तपसी पांवों में जंजीर बांधे हुए उलटा लटकता हु आन ज
 र पड़ा मास चाम सब उसका सब पहाड़ में सट रहा है और
 रक्त उस देह से जो टपकता है सो फूल बन कर बहता है औ
 र उसके नीचे देखा तो बीस तपसी आसन मारे जिस ध्यान से
 बैठे थे वहां के वौहीं रह गये हैं और जान एक में भी न हीं ॥
 यह सुन कर राजा हसा और मंत्री से कहा तु सुन मैं उसका

विचार कहता हूं कि वह जो तुने तपसा कलमें लरकता देखा
 वह तो मेरी देह है मैंने उस जन्म एसा करि न तपस्या की थी उ
 सका फल यह राजमुझे मिला है और वे जो दीस सिधु तुने
 सा दीसो दास हैं ये जो तुने ला दिया और उस तपस्या के तेज
 से मेरे भागे कोई नहीं ठहर सका और उसी बल से मैंने संख को
 मारा और यह पूर्व जन्म का लिखा था इसमें कुछ दोष भरा न
 ही ॥ जब तक मैं इस ध्वी में भ्रमंडल एक गंगा तु तब तक मैं
 और है ना तु भ्रमने जी में चिंता मत कर इसमें दोष तेरा भी कुछ
 नहीं जैसा पूर्व जन्म का लिखा था सो हुआ और जैसा तब उ
 न्होंने मेरी सेवा की थी वैसा ही अब उसका फल भोग करोगे
 तब भो न्होंने मेरे साथ जो दिया था इसलिये मैं उन दीसों को
 भ्रमने निकट रखा है यह भ्रमना पर चढ़ने के लिये तु भ्रमसे
 निद्राई की थी अब तेरा मन पतिया या और तुने हमारा
 मर्म बूझा क्यों विलोक कहते हैं कि विक्रम ने भ्रमने बड़े
 भाई को मारा इसमें दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्म का लि
 खा है सो हो रहा है आज से मैंने तुझे अपना प्रधान किया
 और जिसमे राजकाज भ्रष्ट होवे वह कि जो यह बात
 कि सो के भागे मत कहियो इसलिये कि जो सुनेगा राज के
 लोभ से जाग कमावेगा इतनी बात कहना वती पुतली क

ह करबोली सुनराजा भोज जेतना चीर विक्रमाजीत
 नाराज था तिसका भार उन्ने ही वान को दे मुख ता
 र दिया और राज पाट हवाले किया जो उसके समान
 हो तो इस सिंहासन पर बैठने का नाम ले नहीं तो य
 ह खयाल दिल से डर कर वह सायत और वह दिन भी
 राजा काट लगवा दुसरे दिन सुबह भान फिर सिंहासन
 के पास भान खड़ा हुआ इसमें ॥ - - - - -

चित्रकला चौकी सर्वोत्तम पुतली बोली ॥

सुनराजा भी में एक दिन की ह की कत राजा की विक्र
 माजीत की तेरे आगे कहती है सो तुम दिल में अपने
 खुबतरह समुस एक दिन राजा नदी के किनारे दस हरे
 के नहाने को गया था वही जाकर देखे तो एक स्त्री ब
 नियों की जवान खूब सूरत नदी के तीर खड़ी हुई बा
 ल सुखाती है और सोनने उसके एक साहु कार बना
 बैठा तिल कर रहा है और आयु समे दोनो की से नें च
 ल रही है कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय भुँमट काय
 बार सुलझाती है और कभी सिर का भुँचला छाती
 से सर काय बदन देखा फिर छिपाती है कभी आर
 मोह खा चुन कर छाती से लगाती है इस तरह से अपने

क भनेक रीत से चेष्टा कर रहि है और हम भी इसी तरह
 इशारे कर रहा है उन दोनो को हालतें देख राजाने भय
 ने जी में विचार किया इनका तमाशा देखा चाहिये
 ये क्या करते हैं राजाने स्नान ध्यान भयना भी सब किया
 पर उन की ओर देख ता रहा तने में वह स्त्री स्नान कर चढ़
 र ओढ़ धुंधल कर भयने धाम को चली और साहु कार बचा
 भी उसके पीछे पीछे चला राजाने एक हर कार उन दोनों
 के पीछे लगाया और उस हर कार को कह दिया कि इन दोनों
 काम कान देख सब वाकिफ हो भ्या और हमें जल्दी खबर
 दे जब वह औरत भयने घर में गई तब उसने फिर कर देखा
 और सिरवाल कर देखा या फिर छाती पर हाथ धर भय
 ने मंदिर में गई और सेठ के बैठने भी भयने छाती पर हाथ
 रक्वा यह खबर हर कार ने भ्यान कर राजा को दिया राजा
 भी भयनी सभामें भाकर बैठा और एक पंडित से पूछा
 कि कोई त्रियाचरित्र हमें सुनाओ कि हमारा जी सुनने
 को चाहता है तब पंडित ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी
 तो क्या सामर्थ्य है जो मैं त्रियाचरित्र भायें के आगु क
 हूं त्रियाकाचरित्र और पुरख का भाग ब्राह्मण भी नहीं
 जानते भद्रमी की तो क्या कुहरत है और यह देख ही व

न भावे जवान कहान हीं जाता यह बात पंडित से सुन रा
 नाच पहर हा और अपने जीमे कह हा यह चरित्र देखा चाहिये
 तने में शाम होगई राजा उठ महल में गया कुछ खाने बाहर
 निकल आया और उस हरकारे को बुला कर कहा कि तू इस काम
 का बेवरा समझा है उसने जवाब दिया कि महाराज कुछ मेरे जी
 में आया है पर आपका आगे कहते शंका होती है राजा ने कहा
 कि जो तू समझा है निडर हो कर बयान कर देह वला महाराज
 उने जो मार दे सकें रघुनाथ पर हाथ रखे वा सा उने कहानि
 सब कहें धीरे रात होगी तब मैं तुज से मिलुंगा और उने मी छप
 तो पर हाथ रखे वा जवाब दिया कि अच्छा यह तो रास के सम
 झमें आया है राजा ने कहा तो सच समझा है ये ही उन कामत ल
 ब है मैंने भी बड़ी देर तक पाठ पर बैठा आने का मतलब मा
 लूम किया था पर तुम्हें मुझ को उसके घर पर ले चल हरकारे ने
 कहा अच्छा महाराज मैं हाजिर हूँ चलिये ॥ राजा हरकारे को
 ले उसके मकान पास आया और उसको बिदा किया पिछवा
 रें चौबारे के एक खिड़की थी उसमें से धीराग की जोत नजर
 आती थी और कभी कभी वह छात ती थी तो उसकी झलक
 भी मालूम होती थी जब दोपहर रात गुजरी और खुब भ

अधेरी होगई तब राजा ने पधरसे एक कं करी उस खिडकी में मांगे
 लगते ही वह झांकी राजा को देख यह जाना कि वही शर
 न पहुंचा फिर उसने तमाम घर का जवाहिर और सब गहना
 एक डिब्बे में भरा और साथ ले कर निकल राजा के पास आ
 ई कहा कि यह ले और मुझे चल राजा ने कहा यों तो मैं तु
 से न ले जाऊंगा क्यों कि तेरा खाविंद जो ता है जो कभी खबर
 पावेगा तो राजा के दरबार फरियाद को जायगा राजा तुझे
 मुझे मार डालेगा इसे बेहतर यह है कि पहले तुझे मार
 फिर आ जा निकट कहो हम तुम सुख भोग करें ॥ उसने
 बेलें बकुल किया सुनते ही घर में जा कड़ाहिले खाविं
 द को मार फिर चली आई और वह जवाहिर का डिब्बा रा
 जा को दिया दोनो इस तरह से नगर के बाहर गये आगे
 आगे राजा पीछे पीछे वह स्त्री जवन ही क नारे पहुंचे
 तब राजा वहाँ खड़ा हुआ और अपने जी में बीचार करने
 लगा कि जिसने अपने खाविंद को मारा और बेलें बकुल कि
 या उसको दुसरे को क्या तब लुक होगी अब इसे जुदा हो
 ईये और इसका चरित्र देखिये कि अब यह क्या करती है
 यह दिल में विचार करके राजा ने कहा ऐ सुंदरी ॥ मैं देखू

हले इस नदी में जल के त नाहे जो मैं इस नदी की थाह पाऊं
 ॥ इसी रस्ते से तुम भी ले चलेंगा ॥ यह कह राजा नदी में
 पड़ा और पतार कर रास्ता लिया और जब उस कनारे गया त
 व पुकार कर कहा कि मैं तो पार उतर आया पर तुम से लान हों
 सका क्यों कि पानी अथाह है ॥ यह कह कर राजा ने आगे
 की राह लिया तब उस आतने अपने मन में विचार किया
 कि इन्व्य उसके हां थलगा है इस वह मुझ को छोड़ गया अ
 भी रात कुछ बाकी है बेहतर है की घर को चलिये और स्वा
 मी के साथ जलिये यह दिल में दान कर अपने घर में आई
 और खाविंद के पास जा कर कूक मार मार हाय हाय कर
 रोने लगी और पुकारने लगी अरे चलो दोड़ो मेरे खाविंद
 को चोर मारे हुए चला जाता है और घर का सब माल भी लि
 ये जाता है यह सुन कर घर बाहर के लोग सब दौड़े और पु
 ष्ण कि चोर कि धर है उसने कहा अभी इसी रस्ते निकला
 जाता है लोग तो दूटने लगे और यह सिर पीट पीट रो रो
 के कहती थी मेरा सोहाग लुट मुझे अनाथ किये जाता है
 लोग सब कुटुंब के समुझाने लगे कि यह भगवान की मा

याहे इसमे कि सीका बसन हींचलता वमोत आतीहे
 तो कुं अवहाना किये आती है ॥ इसके रिनपुरे हींचुके न
 हीं तो कों नै कि सुको मार सका है ॥ अब अपने जीमें
 सबाध इसकी गत करत वह बोली कि इसके साथ मैं भी
 ती हूँगी कोंकि मेरा जगत में कोई न हीं लोगों ने वह तोरे स
 मसाया ॥ उसने नसा नाखा विर को लेन रोकि नारे गई और
 रची ताबना उसको ले आया जो जलने को बैठी तमा मनगर
 के लोग देखने को आये राजा भी आनख डह आ उसने
 खाति राजा से आग अपने हाथ से चिता में लगाई और
 सभल कर बैठी ॥ जब कपड़े और बाल जल कर नष्ट में आ
 चलती घबड़ा कर उठी और लोग सब देख कर हसे वह चीता
 में से कूद नदी में जा पड़ी तब राजा से चुप न रहा गया कहा कि
 यह सुंदरी यह क्या है वह बोली सुनो राजा इस काम मर्म जाक
 र अपने घर में पूछो और मैंने जो अपने कर्म में लिखा लाई
 थी वह कलया या पर तुने अपने घर का भेद न पाया ॥ हम
 सात सखियाँ इस नगर में हैं उनमें की एक मैं हूँ और छत्तरे
 घर में हैं यह कह वह तो पानी में डूब गई राजा अपने सहल
 में आया और छपरहा किसी को देखाई न दिया ॥ एक दि

न और एक रात को खगारहा दूसरी रात जब हुई आधी रात
 ने उसमें छ आरानियों हाथों में कंचन के थार मिठाई एक वान से
 र भर के ले कर महले के पिछवाड़े की बाड़ी में गई ॥ उसके
 आगे एक बन था उस बन में एक मंटी थी उसमें एक जोगी ध्या
 न लगा ये बैठा था इ छ हो रानियों उंडवते करवहीं जावै ठों रा
 जा भी उनके पीछे पीछे आया था यह हाल देखने लगा ज
 व सिध अपने ध्यान से निश्चित हुआ उनसे सहसके बातें क
 रने लगा और जिस कहर ये मिठाई एक वान ले गई थी सब आ
 गेर खदिया उसने भी जान किया और पान खा कर एक जोगी बि
 ध किया कि एक देही की छ देह भई और उन छ हो रानियों
 से भोग किया फिर वह छ हो रानियों बिदा हो मंदिर को चली
 आई राजा यह चर देख मन में विचार करने लगा कि इस सिध
 ने क्या किया कि अपने जोग मृष्ट किया और उनका धर्म रखा
 या यह विचार कर राजा सिध के सामने जा कर खड़ा रहा सिध
 मन में कुछ सकुच कुछ संकालिये बोला कि कह नृपती क
 हां से आया है अपने मन का मुझ से भाव कहत बराजा ने
 कहा मुझे आप के दर्शन की इच्छा था इसे लिये मैं आया हूँ
 जोगी बोला राजा तुमसे जो कामना मागे सो तेरी पूरी

कहें फिर राजाने कहा स्वामी एक देह को छे देह किस
 तरह बने वह विध्या मैं तुमसे मांगता हूँ मुझे बताना और न
 तो मैं तुझे जानसे मार डालता हूँ इतनी बात कह पुतले
 कहने लग गी कि सुन राजा भोज जब राजाने उस सधसे
 बात कहो उसने डर कर वह विध्या दिया और राजाने व
 ही परिछा कर लिया तिसके पीछे जो गी को तलवारें मार ड
 कें डेकर डाला फिर वहां से मुहल में आया और जहाँ छे हों
 रानियाँ वैठी थी वहाँ आनकर राजा भी बैठा राजा को दे
 ख छे हो उठ खिदमत में हाज़िर हुई कि सीने पर बाहिला
 या कि सीने हाँच मुह पोला कि सीने पान बना लिया या सी
 तरह सब अपनो अपनो पूत राजा से प्रकाश करने लगीं
 और जो जो वे प्यार करती थीं तो राजा मान करता था ॥
 फिर राजा बोला सुनो सुनो यों मैं तुमसे हित करता हूँ तुम
 मुझसे अनहित कर और का ध्यान धरो यह तुम्हें उचि
 त नही तब बोलो कि महाराज हमारे तो मान रख क
 तुम हो तुम्हें देख हम जो तो हैं तुम्हारा ध्यान हम आ
 ठ पहर करती हैं जो कधी बाहर कहो तुम जाते हो तो ह
 मझ को रको तरह तुम्हो मुख चंद को देखने को तरस्ती है

और जैसे जल न पान तइ प तैसे हम व्याकुल रह तो
 और छ नमर के वियोग में जल कमल की तरह हम
 हला जा तीं हैं ॥ राजा सुन के क्रोध कर मुसकुराया
 कि संच है सुररियो हम जाना तुम्हारा दिल हम से न हो
 छूटता जैसे एक सिध के छ सिध हो गये और फिर वह
 एक सिध हो गया ॥ यह सुन कर एकदम घुम हो कर फि
 र गनियो बोलौं कि महाराज एसी अचरज की बात आप
 कहते हैं जो कभी न देखी और न सुनी और कि सुकोरत बा
 र भौं से कान आवे क्यों कर एक देह की छ देह होय और
 सत्वात को क्यों न मानेगा तब राजा ने कहा चलो हम तु
 म्हें देखे ॥ छ भों को अपने साथ ले उसी बाड़ी में जा उ
 स गुफा का मुहर बोल दिया देख कर वह सह मगई और
 मन में जाना कि राजा ने हमारा सब चरित्र देखा फिर रा
 जाने कहा तुमने जनाया न हो यह सुन कर भोन्होंने
 नीचा गढ़ने कर जवाब कुछ न दिया तब राजा छ भों
 का सिर काट उस गुफा में डाल मुह बंद कर चला आया
 और आते ही नगर में डंढरा फेर दिया कि जेतने ब्राह्म
 और ब्राह्मनियो और ब्राह्मन की कन्या हैं आनकर हा

झर होवें ॥ यह सुनकर सब हाजिर हुई जेतने रानियों
 ॥ गहने और बस्त्र ये सब ब्राह्मणियों को पहिरा दिए
 और एक एक ब्राह्मण को एक एक एक गावें बृत कर दिया
 और जेतनी कन्या थी उनको दान दहे जदे ब्याह कर दिया
 और आपराज काज करने लगा ॥ इतनी बात कह पुतली
 समझाने लगी कि सुन राजा भोजन बड़ा पंडित है पर इस भ्रा
 सन पर वह बैठे गा जो बिक्रम जीत समान होगा वह साथ
 तभी गुजर गई राजा उठकर वहां से भयने मकान में गया रा
 त को इसी सोच में सो रहा दूसरे दिन सुबह को फिर सिंहास
 न के पास आकर खड़ा हुआ तब ॥

जैलसी पच्चीसवीं पुतली बोली

सुन राजा मैं एक दिन की बात मैं तेरे भ्रागु कहती हूं एक
 भार निपर ररिद्री खराब हाल था सब पृथ्वी के राजा यों के पा
 स फिर आया था और एक कौड़ी का किसी से फायदा न पा
 या था जब भयने घर में आया तो देखा कि बेटीं जवान ब्या
 हने के लायक हुई हैं यह भयने जी में चिंता करते ही था
 कि उसकी भाटिन बोल उठी तमा मदेस तुम फिर आये प
 र कमाई कर लाये सो कहो तब उसने जवाब दिया कि मे

आरव्य में धन नहै इन्होंने ये कितना बड़ा जा भौं के पास में गया
 शिष्टाचार उहो ने किया पर एक राम हाथ न आया अब मे
 जो में एक बात आती है राजा वीर विक्रमा जीत बाकी रह गया है
 उसके पास भी जाकर मांगूं जो मेरे जो क संदेह मिटै फिर वह भाटि
 न बोली अब तुम कहों मत जाव और संतोख कर रहो कर्म कालि
 खा फल इहो बैठे पा भोगे फिर भाट ने कहा कि राजा वीर विक्रमा
 जीत सुने है बड़ा दानी है उसके पास अयनी कामना जो ले गया है
 वह खाली हाथ नहीं फिर और अयने मरु मरु को यह चाहै य
 ह बातें कर वह राजा के पास बला और गनेश को मना राजा के स
 न मुख जो बड़ा हा राजा ने दे उवत किया वह आसी सदे कर बो
 ला कि वह त भूमि फिर आया हं आपका जस मुझे बहोले आ
 या है आप इस नृत्य लोक से इंदु का भौतार हैं और गुन के निधा
 न हैं आप के बराबर दानी संसार मे कोई नहीं है इस से मे आप
 तन दे ने को राजा हरि चंद हैं तमाम पृथ्वी में आप का हो जस
 छार हा है और स्वामी कै कालिका सुत हं भाट बंस में आनक
 भौतार लिया है अब तुम्हें जाचने आया हं मे राम नोरथ पुराण
 देव मेव पं तार में फिर कर खुब देखा कि सेवाय तुम्हारे मेरी
 आप का पुत्र ने ताला और कोई नहीं तब वह सकर राजा ने द

हाकि त अपना मत सब मव मेरे भागि... कह के कह जो मैं
 तेरे काम को पूरे करूँ भाटने कहा मुझे अपने कर्म का भरोसा
 आप बचन दिजिये तो मैं खातिर न मासे कह जब राजा बच
 नन्द... भाट बोला महाराज मुझे मुह मांगा दान दिजिये
 अपने घर का शादी कर दे वारह बरस की कन्या मेरे घर में वैदी है
 इस लिये मैं जावने आया है यह सुन राजा ने हसकर मंत्री से क
 हाकि जो यह मांगे वह इसे दो फिर उस भाट ने कहा महाराज जो
 कुछ आप को देना है सो अपने सनमुख मगा कर दिजिये मुझे
 इस संसार में अब किसी का भ्रातृत्वं नहीं है राजा ने दस लाख
 रूपये और हीरे लाल मोती सोने के गहने थाल भर भर कर दि
 या और वह सब आसीस दे अपने घर में आया जो कुछ लाया था
 सब व्याह में लगाया और राजा ने पाछे उसके दो जासूस कर दि
 या था कि तुम देखो कि यह धन को ले जाकर व्याह करता है उ
 सकी खबर दी क मुझे लाकर कहो जब वह शादी कर चुका औ
 र उसके पास एक दिन को खाने को भी न रहा तब उन हरकारों ने
 जाकर राजा को खबर दिया कि महाराज उस भाट ने ऐसा बि
 वाह वैदी का किया कि इस कल युग में कोई और कर सकतान
 ही जो कुछ आप के यहाँ से धन दोलत ले गया था सो सब दि

नगर में बेटी देना कहकर दिया यह सुन राजा ने और व
 का स्वरूप ये उसके घर में जदिये और अपने चित में बहुत म
 हुवा कि धन्य भाग मेरी है जो मेरे राज में ऐसे हिम वाले
 गी है इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोजन ना ध
 न देकर भी राजा ने उसका खर्च सुन और दो सत भेज दिया ए
 सादानी तू ही तो सिंहासन पर बैर और नहीं तो मुन के ल
 खाने से कुछ खाने से हासिल नहीं है यह सुनकर राजा अपने
 मकान में आया फिर सुबह हुई स्नान पूजा कर वहीं आन च
 पका खड़ा हुआ इतने में ॥

विधावती २६ छबीसवीं पुतली बोली ॥

सुन राजा मेरे आगे जानकी बातें कहती हूं और तुम न
 देकर कानरख सुन जब आदमी जन्मता है तो कुछ संगन
 ही लाता और मरता है तो भव कुछ नहीं ले जाता इस जो न प
 का फल ये ही है कि संसार में कुछ आकर करनी करे और जे
 सो करनी करेगा वैसा ही फल पावेगा और संसार में जीवन धो
 डा है इसे ये सा येश करो विजाने पर भी जग में नाम स्मर रहे
 दोनो लोक में सुख पावे और यह मनुख जन्म बार बार नहीं पा
 ता जब पुरव जन्मदान वृत्त तपस्या बहुत कर आता है तो यह

बरदेह पाता है और लक्ष्मी दान करे। जो चरितकर
 अपने जीमें सदा रखे कि दान हमेशा किया कि जिये य
 रूप संसार सागर जो है उसके तरने को सेवाय दान उपकार
 और हरी भजन चौथा उपाय नहीं मैंने तुझसे कहा कि साध
 को कुछ न हो ले जाता मैंसे आगे सभ कहती हैं कि राजा हरी
 चंद राजा करण राजा वीर विक्रमाजी क्या लेगये और जेहों
 ने दान उपकार हरी भजन किया उनका जगमें नाम रहा और
 अंत में मैंने वैकुण्ठ पाया यह बातें सुन पुतली की राजा मो जवो
 ला कि राजा वीर विक्रमाजी तने क्या किया है वह कह नव वि
 द्यावती पुतली बोली कि एक दिन राजा वीर विक्रमाजी राज
 जा सभा में बैठा था एक दासी ने आन कर अर्ज किया महा
 ज उठये पूजा का समय जाता है यह सुनकर राजाने विचार
 कि इसने सब कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे जा
 न धर्म पूजा बन नहीं आई इसे उत्तम यह है कि इस राजा
 जकी माया भूलाय अब जोगमाइये जो कि और जन्म
 में काम आवै यह राजाने अपने जीमें विचार और राज पाह
 धन जन्म मिथ्या समझ कर तपस्या करने को एक बन में चला
 और यह बीचार करता जाता था कि इस संसार में जीना सबेरे

भोससमान

जिनके भरोसे मैंने काम अपना भुकार

भावाया यह विचार करता हुआ एक महावन में जा पहुँ
 चला जाकर देखे तो एक मंडली तपसियों की बैठी हुई है ॥ धू
 नी एक एक के आगे जागरही है आसन मार मार अपने अपने
 ध्यान में लीन हो रहें कोई उर्ध्व बाहु कोई कपाली आर कोई
 पंचांगि इस शक्ति अनेक अनेक प्रकार की साधना कर रहे हैं
 और कोई कोई उनमें वैराग्य से मासकार कर होम कर रहे हैं
 इस तरह से उनकी तपस्या देख राजा भी तप करने लगा आप भी
 तपस्या करता था और उनकी भी तपस्या देखता था कर एक दि
 न में तपसियों ने अपना शरीर सब होम दिया उनकी देखा दे
 खो राजा भी अपना शरीर होमने लगा कई महीनों में राजा ने
 एक दिन भी अपना कार होम दिया वहाँ जो एक शिव का
 मंदिर था उसमें से एक शिव गन निकला और निकल कर सब
 तपसियों के धर्मों में से सब समेट कर जुड़ी जुड़ी देरी की और
 फिर जाकर शिव को खबर दिया कि महाराज जो आपने क
 हा था सो मेकर आया तब शिव ने आज्ञा किया कि यह अमृत
 तुझे जा और उनके उपर छिड़क आ यह आह्वान अमृत
 लाय जो जो छिड़कता था तों तों उनमें से एक शिव शिव रत्न
 सम कह उठ खड़ा होता था सब पर तो उसने छिड़क दिया

पुर राजा की धूनी भूल गया और सबको मेल कर शिव के
 स्तुती करने लगे कि महाराज आप भक्त राज हैं और भक्त
 नाथ जिन्हे आपका स्मरण किया तिसका तभी तुमने फल दिया
 और जो जो जहां से वकों को संकट हुआ है तहां तहां उन के सह
 य हुए हैं ॥ यह भक्त स्तुति करके उन तपेशियों ने कहा महाराज
 एक नृपती भी हमारे साथ तपे स्या करता था परमात्मा मनुही
 कि उसको आपकी आज्ञा हुई या नहीं ॥ यह सुनकर महाराज
 देवने उस गान के तरफ देखा तेसही उसने भक्त ले जाकर
 जो धूनी बाकी रही थी उसपर छिड़ का राजा भी हरी हर कह
 ता उठ खड़ा हुआ और हां थ जो उ स्तुती करने लगा कि महाराज
 ज संसार के सब जियों को आप सहाय करते हैं और पालते
 हैं आप बिना इस संसार सागर से कौन पार उतारे जिस
 ने जग में आकर आप को नहीं पहिचाना उसने अपना ज
 न्म निरफल सोया फिर जेतने तपे सो वही ये शिव ने उ को
 सुहमा गा बर दिया और सब को विदया किया सब के पीछे ज
 वराजा आपके लारह गया तब उसो कहा जो तेरी रक्षा में
 आये सो तुं वर माग मै तुझे देवगा यह सुन राजा ने कहा
 महाराज आप के दया से सब कुछ है पर एक यह मांगती

नारायण के जन्म मरणा से मेरा निवेडा करे जै से और भू
 तानि वेडा किया तै से मुझ से परम पापी भू धीन नीन ही
 दो तारे यह राजा की बिन्ती सुन दया कर शिव ने हँस कर क
 हा कि तेरे समान कभी कोई कली में नहीं और तू जा
 दाता साहसी तय सी है कली के राजा भैया का उद्धार करने वाला
 है और मैं तुझे कहता हूँ कि अब जाकर तू अपना राज कर
 जब तेरा काल निकटे आवेगा तब तू मेरे पास आइयो यह मे
 ने तुझे बचन दिया कि अंत समें मैं तेरे मोक्ष पद दोंगा इस
 से तू अब जाकर मृत लोक में आनन्द से राज कर फिर राज
 रुना कर के बोला कि महाराज संसार से तुम्हारे प्रयंच कर
 जाने नहीं जाते या तो मुझे इस समें मैं तारे नहीं तो म
 ना जी देता हूँ तब हँस कर शंकर ने कहा जो तू जोरेगा मृत्यु बि
 ना जस तू से हाँथ सभी न छूएगा और फिर आर्बल के दिन
 मरने पड़ेगे इस से तू जा उठ मेरा बचन जो मेरा ख शतना कह शि
 व तो कैलाश गये और राजा के हाथ में कवल का फूल दे य
 ह गह गये कि जब यह कवल मुझायगा तब तू जानिये
 छ महीने में मरेगा फूल ले राजा अपने नगर को आया औ
 र अपने मन का विचार किसी से न कहा एक बार सबीतने प

रवह कवल का फूल मुझा पगया त ... ताना कि
 महीन में मरुंगा जेतना कुछ धन और दोलत
 नों को लकड़ कर दिया सो और पुत्र के खाने को कुछ
 या बा की सब पृथ्वी ब्राह्मणों को दान कर दिया इस तरह दान
 न्या ... राजा सदेह के लाश को चला गया इतनी बात कह पु
 ला खिली सुन राजा भोज बिक्रम जीतने इतना काम किया
 और जीवन भर रादो नो चौ न्हाइ से मैं तु से कहती हूं कि जी
 ने का कुछ भरोसान ही और मरन उसके हाथ लगार हा है
 दुःख सुख भी मनुष्य के शरीर के साथ है और पाप पुन्य भी सा
 धर रहते हैं निरगुन और सा गुन ज्ञान भी धर में रहता है पर पु
 के ब्रह्म ही अस सदेह से मैं तु से कहती हूं भूपाल की से सार
 मेरु की की की तरह जाता है सो अभि मर है जो मैं ने तु से कहा
 मन वच कर्म कर सच तु जान वह दिन तो यों गुजर गया राजा
 न उमेर हो अपने मकान को फिर गया सुबह होते ही हां थ मु
 ह धी ध्यान पूजा कर फिर वही भ्यान मौजूद हुआ जेतने रा
 जा की सभा के लोग थे वह भी सब हाजिर हुये राजाने अपने
 लोगों से कहा किये पुतलियां बाते सुठ बना बना मेरे भ्राते
 कहती है अब सो इन की बातें न सुनूंगा और इस सिहासन
 पर बैठुंगा वह यह अपने लोगों से बातें करता था कि ॥ *

और राजा का पुत्र लौ
 न राजा का पुत्र लौ
 कि कोई मसंग निकला इसमें कोई दोल
 इंदु के बराबर कोई राजा नही है क्योंकि वह देख
 करता है यह बात सुन राजा ने किससे दुःख न कहा भी
 बो बुला कर कहा मुझे इंदु पुरी को ले चलावैता स तु
 एकर ममे ले जा कर इंदु की सभा में पहुँचा दिया राजा ने जाते ही व
 हां इंदु को देख उवत किया और हां थ जोड़ खड़ा हुआ तब इंदु ने बैठने
 को भूता दिया हु कनया य कर बैठ गया इंदु ने कहा कता
 आये हो और नाम तुमारा क्या है और देस तुमारा कौन
 कस अर्थ को यहाँ आना हुआ है सो तुम कहो राजा
 भी अमरावती नगर का राजा है मैं विक्रम आप के
 के दरसन के अर्थ आया हूँ तब प्रसन्न हो इंदु बोला कि ह
 भी तुमारा नाम सुनाया और मिलने की इच्छा थी सो तुमने
 आनय हां उलटी रीत की अब जो कुछ मनोरथ तुम्हारा हो
 सो कहो और जो तुम्हें चाहिये सो माँगो हम तुम्हें देंगे तब
 जाने कहा स्वामी आपकी कृपा और धर्म से सब कुछ है और
 जो कुछ बहो तो मैं आपसे माँगूँ आप कर दिया हुआ सब कुछ मे

जाकी यह बातें सन ११११ ॥ महो अभयना
 विमान दे यह अभय से सादि ॥ ११११ ॥
 दे सै गावह तुने भेधा हो गा राजा वर ॥ ११११ ॥
 नगर में आया और नगर में बधाई वजन ॥ ११११ ॥
 नावात पुतली से सुनरा जा भोज सिंह सन पर ॥ ११११ ॥
 क अभयने पाप को रवरव डाहुआ और साहा कि ॥ ११११ ॥
 पुतली गहा पर जा केरु इतने में और से भेधा हो गा या ॥ ११११ ॥
 रदीवाना दीवाना बात कर ने लग चाहता था कि हां य उस ॥ ११११ ॥
 पुतली ने जुदा न होता था यह हाल देख पुतलियों खिल ॥ ११११ ॥
 यह सी और सब सभा में चके हो गई अभयने जी ॥ ११११ ॥
 ने लगे कि राजा ने यह का भय जान पन किया कि ॥ ११११ ॥
 न मुने सिहासन पर पाव दिया यह अभयनी देखा देख ॥ ११११ ॥
 न बहूत यछा कर अभयने जो में लज्जित हुवा तब पुतली ॥ ११११ ॥
 बोली कि भै मुख तुने हमारी बात न सुन कर का फल पाया ॥ ११११ ॥
 अब तुझे से ही रहा बह सुन कर रहशत मंद हो कर बोला कि ॥ ११११ ॥
 इसका जन्म कुछ नुमवता भो तब पुतलियों बोली कि राजा ॥ ११११ ॥
 क्रमा जीत का नाम ले तब तु शरीर से छूटैगा जब विक्रमा का ॥ ११११ ॥
 जरा राजा भोजने बयान किया तब हां य छुट गया और ॥ ११११ ॥
 भीस अने लगा फिर नीचे उतर खड़ा हुवा यह देख कर सब लोग ॥ ११११ ॥

१२ ओ॥

ता वि० न० न हो०

समा के सव ने एने
नि क दि न

कि रां मा भै ने इसी वास्ते कहा था और जो न जान
तमान त पार्व है कुछ भी तुझे ज्ञान नहीं जो विद्या पढ़ा है
मे कु र हा तान हा ज्ञान और है चीज है भय न वर राना
वि क्रमा जीत को मत समुस वह देवता भों के हात को
उस के बराबर ज्ञान ध्यान तेरा नहीं भय ने जी से आस छोड़ व
ह सिंहासन तुझे नहीं सजेगा और संसार ने दहन बातें हैं न
हकर जिसे तेरा राज स्थिर हो प्रताप बढ़े और कतर है वह
दिन भी र ही बातों में गुजर गया फिर भय ने मर
एत को जो तों काठ सुबह फिर उ सीम का न पर
भात व ॥

मन मोह दी २८ पुतली बोली ॥

कि सुन राजा जो सजा दोर दि क्रमा जीत के समान बोली
ह सी ज्ञाना कली में इस राजा को इ ह आ हो तो मु से बता दे भों
मे जो कहती है सो सब का ताव एक दिन मे ने राजा दोर
धुमा जीत से दस कर कहा कि स्वामी याता सब र जावली कश
राज है कि जिस के रास समान आदमी तु नहीं हो सका भे
र जो भय ना राज तु स्थिर किया चाहे तो एक बार राजा बोली

कि सावनी हो भ्याने क
 क न स म न प रे मे
 ता न पुरा न दे भ्याने म प हं चा दिया राजा
 व मै च क हो र न भ्याने म न प रे मे क हं दे र न प रे मे
 क ही भ्याने त क न ही दे र वा गा नि हं कै ल श का हं
 त्य र जा न लो जो जो स न म र का राज कर हा है इ स त र हं
 न र रे ख त्रा ह वा र जा की सिंह पौर पर जा ख त्रा ह भ्या भ्या र हा थ
 जो उ बि न्ती क र दू पा लो से क ह न ल गा भ प के राज को मे र
 भ्याने का समाचार क हो कि महा राज म र्त्य लोक से राजा वि
 भ्याने द र्शन को भ्याया है यह सुन डे व की दा र ने भ प ने र
 विक्रम की ख बर दिया हुन कर राजा विलो ने क
 म भ प ना मुख न दे र वा डुं गा यह सुन कर दरवान ने
 भ्याने राजा के क हा कि तु म हं दर्शन न हं जा न व ल ख क य हो
 मे न न डे ला डुं गा यह वा त जा कर द्वा र पा ल राजा व ली से
 क हा ज व उ स ने क हा कि विक्रम तू कौ न है जो राजा इ भी
 भ्याने तो भी मे भ प ना दर्शन न दू फिर कई दिन के बाद एक
 दिन राजा ने दुःख पा य के भ प ना सि र का ट टु ला व ली को
 त म म स भा मे रै ला म चा कि व ड भ जु त काम इ रा या ने